Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

[हिन्दी मासिक]

षाढ़ २०३०
न १९७३

नव
तोल
र्षव
मूल्य श १.६०
तीव
र्ष
षाढ़
जून-

सत्य धर्म का संदेश
घर-घर में पहुँचाओ !

देश का वातावरण बिगड़ रहा है। संसार अज्ञान अन्धकार में भटक रहा है। निराशा और हिंसा का वातावरण उभर रहा है।

मानवता की रक्षा के लिए, आवश्यक है कि मनुष्य को मनुष्य बनाने का यत्न किया जाए। यह कार्य कर सकता है केवल सत्य धर्म का संदेश !

धर्म की रक्षा के लिए प्रभु के अमृत पुत्रो उठो ! और काम में लग जाओ। धर्म की पावन ज्योति का प्रसार करो, आगे बढ़ो।

ज्ञान की जिस पावन ज्योति का प्रकाश ऋषि दयानन्द ने दिखाया था उसके प्रसार का स्वर्णिम अवसर आ गया। चूको नहीं—पाप के संहार और धर्म की रक्षा के लिए जो कुछ भी कर सकते हो करो—

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

१—सम्पादकीय

२—मैं हृदय मंदिर से लिख रहा हूँ

३—दयानन्द संसद् का प्रथम अधिवेशन — [illegible]

४—पाप और अशान्ति का क्या कारण है ? — महात्मा [illegible]

५—अग्नि तत्व की एकता — पं० [illegible] [illegible]

६—अण्डे खाकर आत्महत्या न करो — पं० [illegible]

७—राष्ट्रीय चरित्र का अभाव — पं० [illegible]

८—आदर्श विवाहों की ओर — [illegible]

९—अत्याचार शस्त्रागार पर अधिकार — [illegible]

१०—पताका गीत — स्वामी [illegible]

११—ऋषि दयानन्द ने कहा था...

१२—आप हो के पत्र

१३—वर्षा ऋतु में स्वास्थ्य

१४—धर्म का मार्ग — पं० सुरेश चन्द्र विद्यालंकार [illegible]

भारत के घर-घर में
ऋषि दयानन्द का
संदेश पहुँचाने का
व्रत लेकर

आर्य समाज स्थापना शताब्दी [illegible]
को सफल बनाने का निश्चय कीजिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजीकृत ट्रस्ट

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन - ज्ञान

(मासिक)

सम्पादक
—राकेश रानी

दूरभाष: ५६६६३६

पता—
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग
निकट ३१-नाईवाला
रौल बाग, नई दिल्ली

र्षिक मूल्य १२)
शा में—एक पौंड
जीवन—२०१)

र्ष ६ : अंक २
षाढ़ संवत् २०३०
जून—१९७३

हम प्रायः दूसरों के सुधार की चिन्ता करते हैं। पर-दोष-दर्शन में हमें आनन्द आता है और ऐसी चर्चा करने में प्राप्त करते है हम विशेष अनुभूति....

किन्तु इसके स्थान पर यदि हम अपने दोष और दूसरों के गुण देखने का स्वभाव डालें तो संसार स्वर्ग बन जाए।

जो कुछ हम दूसरों से चाहते हैं, या उन में देखने की कामना करते हैं क्या वह हमारे पास है ? हम में भी तो कोई दोष नहीं....हम देखें, और देखें कि क्या ऐसा है हम में, जो नहीं होना चाहिए !

संसार में वही व्यक्ति सफल होकर सुख शांति और आनन्द प्राप्त करते हैं जो अपने दोष देखते हैं और दूसरों के गुण। गुण ग्रहण और दोष त्याग का भाव ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है।

पाप क्या है ? जो छिपाना पड़े-पुण्य क्या है ? जिस से आनन्द प्राप्त हो । आनन्द का संग्रह ही स्वर्ग की स्थापना का मूल आधार है।

अपने को देखो, परखो और पवित्र बनाओ ! उपदेश दूसरों को तब दो जब स्वयं उस पर चल लो। ज्ञान जब तक आचरण में न आए तब तक व्यर्थ है।

जीवन के स्वर्णमय क्षण अनमोल हैं। उन का मूल्य आंको, और अपने को कुन्दन बनाओ। ...प्रभु का आशीर्वाद आप के साथ है—

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्व श्रेष्ठ : आकर्षक : सस्ता

सत्यार्थ प्रकाश

भारत के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाइए

प्रचार संस्करण—तिरंगा आवरण=२००) सैकड़ा
राज संस्करण—बढ़िया जिल्द =२२५) सैकड़ा
उपहार संस्करण—कपड़े की शानदार आकर्षक जिल्द=३२५) सैकड़ा

५ प्रतियों के आदेश पर भी सैकड़े का भाव दिया जाएगा.

अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश

Light of Truth

अनुवादक=बा० दुर्गाप्रसाद जी
भूमिका लेखक=आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
कपडे की जिल्द=मूल्य १२)
सादी जिल्द=मूल्य १०)

अधिक प्रतियों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।

An Introduction to the commentry on the Vedas

[ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद

स्व० बाबू घासीराम जी कृत बढ़ियाजिल्द मूल्य ५)

ऋषि दयानन्द के विचारों की विजय के लिए
अधिकाधिक प्रचार कीजिए

दयानन्द संस्थान
१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद-भाष्य-प्रकाशन-यज्ञ की सफलता के लिए

आज ही वेद भक्त कम से कम २५) की आहुति भेजें

जो एक साथ न भेज सकें वे २ रुपये
मासिक एक वर्ष तक भेजें

प्रति माह व्रत रख कर भी आहुति भेजिए

ताकि परमात्मा की अमर वाणी
भूमण्डल के प्रत्येक परिवार में
पहुंचाने का कार्य
बढ़ता रहे-फैलता रहे

आप का सहयोग मिलेगा ही इसी
विश्वास से हम बढ़ रहे हैं

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक माता-पिता

विवाह के पावन अवसर पर

वेद

वर-वधु को

उपहार में अवश्य दें

परमात्मा की अमृत वाणी

५०० मंत्रों का ऋषि दयानन्द

कृत ऋग्वेद के ६ मंडलों का भाष्य

आकर्षक सुनहरी जिल्द में

मूल्य केवल ३१)

चारों वेदों के भाष्य के लिए

८०) आज ही भेजिए

और प्रथम खण्ड साथ ही लीजिए

दूसरा और तीसरा खण्ड भी शीघ्र हीं मिलेगा-छप रहा है

व्यवस्थापक

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संपादकीय

अपने घरों को देखो !

हमारे आपके सभी के घरों में अंग्रेजियत का राज्य स्थापित हो रहा है। किसी का कुछ भी विचार हो पर व्यवहार में सब एक हैं पश्चिमी ढंग में ढके हुए। पैंट-बुशर्ट, मम्मी-डैडी और चाल-ढाल सभी कुछ बदल रहा है—तेजी से बदल रहा है।

एक आर्य परिवार में औरों की अपेक्षा कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता। यह स्थिति हमें निरन्तर गिरा रही है। हम ध्यान से देखें तो ज्ञात होगा कि आर्य परिवारों में अनार्य उत्पन्न होकर तेजी से फैल रहे हैं।

जो व्यक्ति अपने घर का सुधार नहीं कर सकता वह दूसरों को क्या सुधारेगा ? जिसकी कथनी और करनी में अन्तर हो उन्हें देखकर किसी पर क्या प्रभाव होगा ?

हम यह न भूलें कि घरों से संसार बनता है, संसार से घर नहीं। पर इस तथ्य को भुला कर हमने संसार के सुधार का तो यत्न किया पर अपने को, अपने घर को भुला दिया, जिसका परिणाम सभी के समक्ष है। हमारा आग्रह सभी से यह है कि हम जो कुछ भी कहें उस पर आचरण भी करें। करनी और कथनी में भेद होने से किसी भी काम में सफलता मिलनी असंभव है।

हमारा प्रत्येक उपदेश अपने से आरम्भ होना चाहिए। सुधार की नींव भी अपने परिवार से ही पड़नी चाहिए। हम और कुछ कर सकें या न कर सकें, यदि केवल अपने परिवार को ही ठीक कर लें तो बहुत कुछ कर लिया।

नेता-उपदेशक-विद्वान् और आर्यसमाजों के अधिकारी अपने और अपने परिवार के जीवन में अन्यों की अपेक्षा कुछ विशेषता लाएं—फिर देखें संसार पर कैसा प्रभाव पड़ता है—हमारी विचारधारा का।

बातें और काम

बातें बनाना जितना आसान है काम करना उतना ही कठिन। बातों की राजनीति ने देश की दुर्दशा कर दी और इसी के प्रवाह ने आर्य समाज का प्रभाव भी कम कर रखा है।

हम चाहते हैं कि काम के महत्व को नेता हृदयंगम करें। भाषण और प्रस्ताव-वक्तव्यों ने हमारी जड़ें खोखली कर दी हैं। काम करने वाले व्यक्ति समाप्त हो रहे हैं। ऐसे में धरती पर वैदिक विचारधारा का साम्राज्य कौन कैसे स्थापित करेगा ?

जन-ज्ञान परिवार से !

जनज्ञान के पाठक कम से कम १० हजार हैं। पाठकों के हृदय में 'वेद' के प्रति श्रद्धा भी होगी। इस श्रद्धा के प्रगट होने का समय आ गया है। आज हमारा विश्वास है कि हमारे इस विशाल परिवार के सदस्य यदि थोड़ा-थोड़ा भी सहयोग दें तो क्रांति का विशाल रूप भूमंडल में शान्ति की वर्षा वरषा सकता है। वेद का नाम नहीं, वेद का ज्ञान पहुँचाने के लिए हम दिन रात श्रम-साधना कर रहे हैं। तो क्या हमारे १० हजार भाइयों में से ५००० भाई-बहन भी ऐसे नहीं निकल सकते जो **प्रति माह कम से कम २ रुपया या अधिक भेज सकें।** साधनों के बिना जो काम किया वह आपके सामने है, साधन आप जुटा दें तो फिर क्या होगा—यह बताने की आवश्यकता शायद "जनज्ञान" के पाठकों को नहीं पड़ेगी। —राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ ~ भारतेन्द्र नाथ

अंधकार में प्रकाश

अंधेरा दूर करने के लिए जलना या मिटना आवश्यक है । बिना मिटे या जले अंधेरा नहीं भाग सकता। अज्ञान अन्धकार मिटाने के लिए भी महापुरुषों ने स्वयं का बलिदान दिया और प्रकाश फैला ।

अंधेरा जितना घना होगा बलिदान उतने ही अधिक चाहिएं । भाषण प्रस्ताव योजनाएं किसी को भी कभी आगे नहीं बढ़ा सकतीं, इस तथ्य को हम जितना ही शीघ्र समझ लें उतना ही ठीक है।

आज भी अंधेरा है हर क्षेत्र में, धार्मिक क्षेत्र हो या राजनैतिक, आर्थिक हो या सामाजिक, सर्वत्र पथ भ्रष्टता का बोलबाला है। सब कुछ इतना धुंधला है कि कहीं आशा का प्रकाश दिखायी नहीं पड़ता, ऐसे में बलिदान के लिए कौन तैयार होगा ?

बलिदान शब्द में जो आकर्षण है व्यवहार में वह उतना ही कठिन है। आज के युवक भी नेता तो बनना चाहते हैं पर लक्ष्य के लिए जीवित बलिदान के लिए कोई तैयार नहीं। समय के प्रभाव ने सभी को बदल दिया है।

उत्साह, उमंग, जोश सब केवल प्रदर्शन के लिए रह गए हैं । प्रदर्शन ही जीवन का अभिन्न मंत्र बन गया है। कोई भी तो क्षेत्र ऐसा नहीं जहां प्रदर्शन का बोलबाला न हो। कर्त्तव्य की इति श्री काम के स्थान पर प्रदर्शन मात्र में समझ ली गयी है।

धर्म राष्ट्र या समाज को नया रूप देने के लिए कुछ ऐसे तपे-परखे बलिदानी वीर चाहिएं, जो लक्ष्य के लिए प्राणों की आहुति देने में संकोच न करें। नेता बहुत हैं, उनकी होड़ की दौड़ हमें मरघट में पहुंचाएगी। जीवन की इच्छा है तो रास्ता बदलना होगा। काम को लक्ष्य मान कर सर्वस्व समर्पण की भावना से अलख जगानी होगी। देश धर्म और समाज की गौरव परंपरा की रक्षा के लिए और कोई मार्ग नहीं है। क्या कुछ करने की भावना रखने वाले व्यक्ति इस दिशा में कुछ सोचेंगे ?

वेद : आप और हम

वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म ऋषि दयानन्द ने बताया। पर पिछले १०० वर्षों में ऋषि के अनुयायियों ने और सब कुछ किया पर वेद का पढ़ना-पढ़ाना नहीं किया, जिसका परिणाम यह है कि आज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यों के पास सब कार्यों के लिए उत्साह है, सिवाय 'वेद' के।

हम ने गत वर्ष (जुलायी १९७२) से 'वेद' का प्रचार आरंभ किया। १२५०० की संख्या में वेद भाष्य का प्रकाशन हमने आरंभ किया, भारत के घर-घर में प्रभु की वाणी पहुंचाने का व्रत लेकर हम चले, आरंभ में भी उन्होंने हम पर प्रहार किये, जिन से हम आशीर्वाद की आशा रखते थे और आज भी जब प्रथम खंड प्रकाशित हो चुका है, तब भी वेद-प्रचार अभियान को वह आशीर्वाद नहीं मिल रहा जो मिलना चाहिए था। प्रथम खंड विमोचन समारोह में भी कुछ कर्णधारों ने विघ्न डालने का प्रयास किया, जिससे हमें अत्यन्त मानसिक कष्ट हुआ।

हमें श्रद्धा है देव दयानन्द पर, हम उन्हें अपना गुरू और मार्ग दर्शक मानते हैं। ऋषि दयानन्द के कार्यों को पूरा करते हुए हमें यदि अपने शरीर की भी आहुति देनी पड़ेगी तो हम पीछे नहीं हटेंगें। पर समझ नहीं आता कि वे कैसे ऋषि दयानन्द के अनुयायी हैं जिनका हृदय वेद-भाष्य, सत्यार्थप्रकाश और ऋषि जीवन के प्रचार को देखकर हर्ष पूरित होने के स्थान पर दुःखी होता है।

हम जो कुछ कर रहे हैं किसी पर भी एहसान की दृष्टि से नहीं कर रहे। अपितु कर्त्तव्य और गुरु के आदेश पालन को ध्यान में रखकर कर रहे हैं।

हमारे किसी भी कार्य में कहीं पर भी कोई त्रुटि हो तो हम सदा सुधार के लिए तैयार हैं किंतु 'वेद' प्रचार प्रसार के लिए बढ़ते हुए मार्ग में हिमालय भी यदि आएगा तो हम उसे रौंदते हुए आगे बढ़ेंगे।

योजनाओं में नहीं हम काम में विश्वास रखते हैं। हमारे काम आपके सामने हैं। वेद का प्रथम खण्ड अब प्रसारित हो चुका है। उसे देखिए और निष्पक्ष भाव से बताइये कि क्या इतना आकर्षक और सुन्दर 'वेद' का संस्करण महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य का आपने पहले देखा है? इस खण्ड की ८००० प्रतियां जिल्द सहित हमने १३.५० में दी हैं। इस कार्य को देखने के बाद भी यदि इस पवित्र कार्य की पूर्ति के लिए आपकी श्रद्धा नहीं उभरती, तो हमारे पास फिर कहने के लिए कुछ नहीं है।

राष्ट्र के महान् योगी श्री स्वामी योगेश्वरानन्द जी महाराज और आर्यसमाज के शिरोमणि संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज व स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती इस कार्य के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान कर चुके हैं। तप-त्याग के प्रतीक स्वामी ओमानन्द जी महाराज वेद' के प्रचार के लिए दिन रात लगे हुए हैं। आर्यसमाज के सैकड़ों कार्यकर्ता सक्रिय होकर प्रचार में योग दान दें रहे हैं।

किन्तु जन-जन में श्रद्धा के जिस उभार की हम प्रतीक्षा कर रहे हैं उसका दर्शन कब होगा·· इसका उत्तर अभी मौन है। 'वेद' प्रचार को जीवन मानकर उत्साह उमंग और साधना से प्रत्येक आर्य श्रद्धा विभोर होकर कब जागेगा, हम इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हम संसार के प्रत्येक परिवार में 'वेद' पहुँचाना चाहते हैं। प्रत्येक धर्म मंदिर में 'वेद' की प्रतिष्ठा के लिए हमारा अन्तर उत्सुक है। हम प्रत्येक ऋषिभक्त को वेदमय देखना चाहते हैं, पता नहीं कब यह चाह पूरी होगी।

ऋषि दयानन्द के वीर अनुयायियों के चरणों में नत होकर हमारा निवेदन है कि सुनो, समय की पुकार और 'वेद' के प्रचार में लग जाओ। प्रत्येक परिवार में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद पहुंचा कर उसे पवित्र करो। प्रभु की अमर वाणी का अशीर्वाद प्रत्येक विवाह में भेंट दो।

वेदमय होकर दयानन्द के भक्तो, आगे बढ़ो। बाइबिल आदि का अज्ञान मिटाने के लिए 'वेद' का प्रचार करो। 'वेद' का, वेद के भावों का साम्राज्य संसार में स्थापित करने लिए सर्वत्र 'ओ३म्' पताका लहराओ।

दयानन्द-संसद् का अधिवेशन

२२ मई को दयानन्द संसद् का अधिवेशन आर्यसमाज के मान्य संन्यासियों के आशीर्वाद की छाया में सफलता से संपन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता की स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने, उद्घाटन किया स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने और आशीर्वाद दिया स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी ने, मार्ग दर्शन किया दर्शनों के प्रकाण्ड पण्डित आचार्य उदयवीर शास्त्री ने।

देश के विभिन्न भागों से आए हुए ४५ प्रतिनिधियों ने प्रातः ७-३० से सायं ५ बजे तक शान्तिपूर्वक बैठकर यह विचार किया कि आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के उपलक्ष्य में अब आर्यसमाजें क्या करें ? जो निश्चय हुए उन्हें आप अगले पृष्ठों में पढ़ेंगे, पर पढ़कर ही मौन धारण करने से कार्य नहीं चलेगा।

इस २१ सूत्री कार्यक्रम को व्यावहारिक रूप देना ही इस अधिवेशन की सफलता होगी।

ऋषि द्वारा प्रज्वलित यज्ञाग्नि को ज्योतित रखने के लिए आहुति चाहिए। स्वार्थ-त्याग, फूट को जला द्वेष छोड़ हम एक होकर काम में लगें। नया युग हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, उठो ... और काम करो, आगे बढ़ो।

अधिवेशन की सफलता और अतिथियों के स्वागत के लिए गाजियाबाद के सर्वश्री राय रतनलाल, रामचरण शर्मा, धर्मपाल आर्य, विजयपाल शास्त्री, चौ० अमर सिंह, बनवारीलाल व परमानन्द जी ने हार्दिक सहयोग दिया, हम उनके आभारी हैं।

हमारा स्वास्थ्य और संकल्प

मई अंक में हमारे अन्न, नमक व मीठा छोड़ने का संकल्प पढ़कर पाठकों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई है। अनेकों पत्र हमारे पास इस आग्रह के आए कि हम यह व्रत छोड़ दें। सभी का पृथक्-पृथक् उत्तर देना संभव नहीं, अतः इन पंक्तियों द्वारा हम सभी हितैषियों के प्रति कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

किसी को भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। हमारा स्वाथ्य अभी कार्य करने की आज्ञा दे रहा है। हमने यह व्रत किसी पर भी दबाव डालने के लिए नहीं, अपितु आत्मशुद्धि के लिए लिया है। प्रभु की कृपा होगी तो शीघ्र संकल्प पूरा होगा।

'वेद' के प्रचार का जो कार्य हमने आरम्भ किया है, उसकी पूर्ति के लिए जो सहयोग मिलना चाहिए था, नहीं मिला। किसी अन्य को दोष देना हमने नहीं सीखा। हमारी बात का प्रभाव नहीं पड़ा, इसे हम अपनी निजी दुर्बलता समझते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसी कारण हमने यह तपस्या का मार्ग ग्रहण किया है।

जिस दिन जनज्ञान के दस हजार के लगभग पाठक हमारे कार्य को अपना कार्य समझ लेंगे, जिस दिन आपके मन में यह भावना जागेगी कि संसार के ज्ञात इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में वेद-भाष्य के प्रकाशन से आपका गौरव बढ़ा है, जिस दिन आप यह समझ लेंगे कि पिछले १०० वर्षों में जितना वेदभाष्य नहीं निकला, उतना १—२ वर्ष में प्रसारित कर दयानन्द-संस्थान ने आर्य समाज को आगे बढ़ाया है। उस दिन हम समझेंगे कि हमारा व्रत-उद्देश्य पूर्ण हुआ।

वेद के प्रचार के लिए शंखनाद कर जन-जागरण का भावपूर्ण कीजिए। मास में एक दिन व्रत रखकर भी कम से कम २) मासिक—या एक साथ कम से कम २५) इस पवित्र यज्ञ की पूर्ति के लिए भेजिये।

जब कम से कम ५००० व्यक्ति भाई और बहन इस कार्य में लग जायेंगे उस दिन हम समझेंगे कि आर्य जनता के अंतर में 'वेद' के प्रति श्रद्धा के अंकुर उत्पन्न करने में हम समर्थ हुए हैं। काम का बोझ सिर पर है। नींद के कुछ घंटों के सिवाय एक क्षण भी हमारा अपना नहीं, हम काम में लगे हैं, लगे रहेंगे। इतना हमें विश्वास है कि अपने इस जीवन में 'वेद' का नाद धरती पर गुंजाने का हमारा व्रत पूर्ण होगा। हमारा शरीर रहे या न रहे, पर जिस पवित्र कार्य का आरम्भ देव दयानन्द ने किया था उसकी पूर्णता को कोई रोक नहीं सकता।

बस, पत्र लिखने के स्थान पर सहयोग दीजिए। कितनी छोटी माँग है हमारी, केवल २) मासिक या एक साथ २५)। ५००० व्यक्ति इस मांग को जिस दिन मान लेंगे, उस दिन हम निश्चिंत होकर आगे बढ़ेंगे। आज तो चिन्ता भी है और कार्य भी। चिन्ता का बोझ आप ओट लें, यही आपकी बड़ी सेवा होगी।

मेरठ शताब्दी समारोह

उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मेरठ में शताब्दी समारोह मेरठ के आर्य बन्धुओं की शक्ति और उत्साह का प्रतीक था। भव्य द्वार—आकर्षक पंडाल और जगमगाता प्रांगण इस बात का उद्‌घोष कर रहा था कि वेद की ऋचाओं की ज्योति से धरती को ज्योतिर्मय बनाने की भावना अभी जीवित है।

समारोह में राजनैतिक नेताओं का किसी भी कारण से न आना और फिर भी समारोह की अपूर्व सफलता (उपस्थिति की दृष्टि से) इस बात का प्रमाण है कि बिना उनके भी हम सफल हो सकते हैं। सम्मेलन में क्या हुआ और क्या प्रेरणा लेकर जनता लौटी, यह हमें ज्ञात नहीं क्योंकि कार्य में व्यस्त रहने से यह सब जानने का सौभाग्य हमें नहीं मिला। पर आयोजन के कर्णधार पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने कुछ उच्छृंखल तत्वों को जिस निर्भयता और साहस से कुचला, उसके लिए हम उन्हें बधायी दिए बिना नहीं रह सकते। किसी के आयोजन में, भले ही हम उससे सहमत न हों, विघ्न डालना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं।

बड़े सम्मेलन कभी गर्मियों में (मई-जून) न किए जाएं। यह हमारा सुझाव है। साथ ही यह भी कि नेतागण साहित्य प्रचार के महत्व को भी समझें। इस सम्मेलन में सबसे अधिक अखरने वाली यदि कोई बात थी तो वह था साहित्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के स्टालों के लिये स्थान का चयन। वह एकान्त में था जहाँ बिरले ही पहुँच पाते थे। आयोजकों की नीति साहित्य को महत्व देनी की भी होनी चाहिए।

एक बात और स्पष्ट हुई कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अधिकांश आर्य बन्धुओं में राजनीति के कारण प्रचार के प्रति दृष्टि कोण बदल चुका है। पंजाब—दिल्ली की भांति उनमें भी रचनात्मक कार्यों के प्रति वह आकर्षण प्रतीत नहीं हुआ जो पूर्वी उत्तर प्रदेश—बिहार—मध्यप्रदेश—राजस्थान, गुजरात के आर्यों में है।

आर्य समाज को अध्यात्म और धर्म के उदात्त सिद्धान्तों के प्रसारक के रूप में आगे बढ़ाने की प्रवृत्ति सर्वत्र आए। ईश्वर और आत्मा के सत्य स्वरूप का प्रेरक प्रसार किया जाए तभी हम विश्व का मार्ग दर्शन कर सकते हैं।

मेरठ सम्मेलन आशा की प्रथम किरण के रूप में शताब्दी समारोह का प्रथम दर्शन है। विश्वास है कि अगले दो वर्षों में आर्य जनता और नेता सबल स्वरों में ऋषि दयानन्द की जय गुंजाएंगे और अपने कर्मठ हाथों से कांटों को काटते आगे बढ़ेंगे। मेरठ में हमने सत्यार्थ प्रकाश और ऋषि जीवन बड़ी संख्यामें नए सदस्यों को भेंट किए। वेद-भाष्य का प्रचार भी सफलता पूर्वक हुआ। वहां कार्यालय के कार्य को संभालने मेंश्री नरेन्द्रकांत व श्री रामपाल सिंह एम० एस० सी०, श्री चन्द्र-मोहन शास्त्री व कु० ज्योत्सना एम० ए०, कु० ऋचा व आभा श्री सत्यनारायण व राजाराम ने दिन रात श्रम किया, हम उनके आभारी हैं। मेरठ के श्री स्वतंत्रपाल जी ने कार्यालय की स्थापना के लिए हमारी विशेष सहायता की, उन का हार्दिक धन्यवाद।

मेरठ सम्मेलन सफल रहा, भविष्य में जो भी सम्मेलन हों उनमें अध्यात्म, धर्म, संबंधी चर्चाएँ हों। विभिन्न सम्मेलनों की प्रथा समाप्त की जाए, निश्चित विषयों पर विद्वानों के भाषण कराएं। राजनैतिक नेताओं को इतनी बड़ी संख्या में न बुलाया जाए और न उन के इतने बड़े भाषण कराए जाएं। आर्य समाज की वेदी से अध्यात्म की गंगा बहे—यह हमारी इच्छा है, देखिए—कब कौन पूरी करता है?

—भारतेन्द्र नाथ

आर्य समाज स्थापना शताब्दी पर

प्रति माह

एक सत्यार्थ प्रकाश किसी नए व्यक्ति को दीजिए और एक परिवार में वेद की प्रति पहुंचाइए।

से ऋषि जीवन बांटिए।

अप्रैल १६७५ तक निरन्तर लक्ष्य की ओर बढ़िए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज शताब्दी कैसे मनाएं ?

दयानन्द-संसद् का ऐतिहासिक अधिवेशन

—बनारसी सिंह एम०ए०

२२ मई, १९७३

प्रातःकाल प्राची में अंशुमाली उदित हुए और प्रकाश की किरणें यत्र तत्र सर्वत्र बिखर उठीं। पूर्व दिशा में आकाश ने आग्नेय परिधान धारण कर लिया और इधर युग-युग से भारत की राजधानी इन्द्रप्रस्थ के समीप स्थित गाजियाबाद के आर्य समाज मन्दिर में, यज्ञ की पावन अग्नि प्रज्वलित हो उठी। यों तो समाज मन्दिर में यज्ञ कोई अनूठी बात नहीं किन्तु आज का यह दिन, आज का यह यज्ञ अपने आप में एक वैशिष्ट लिए था। क्योंकि यह एक विशेष अवसर का द्योतक था, एक विशेष अभियान का शुभारम्भ था, एक नवीन संकल्प की घड़ी का परिचायक था। यह शुभ संकल्प था दयानन्द संस्थान द्वारा स्थापित दयानन्द संसद् का श्री गणेश।

वेद मन्त्रों की पावन ध्वनि की अनुगूंज से आर्यसमाज मन्दिर निनादित हो रहा था और साथ ही उठ रहा था यज्ञ से वह धूम्र कि जो वायुमंडल में मिश्रित होकर चतुर्दिक् सुगन्ध बिखरा रहा था। ऐसी सुगन्ध कि जिसको अग जग में सरसाने के लिये लगभग १० दशाब्दी पूर्व देव दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना भारत की महानगरी बम्बई में की थी। जहाँ भारत भूमि का पद् प्रक्षालन सागर की उत्ताल तरंगें करती हैं। शताब्दी के इस कालखंड में देव दयानन्द द्वारा प्रज्वलित दीप शिखाने भारत ही नहीं विश्व की विभ्रान्त मानवता को तिमिर से उबार कर तमसो मा ज्योतिर्गमय का व्रत निभाया है। किन्तु ऐसा लगता है कि हमारे संकल्प का यह दीप तेल से रिक्त-सा होने लगा है। आज का यह कार्यक्रम उसी दीप शिखा को अपनी जीवन वर्तिका, रक्त का बना कण-कण बना जीवन का प्रतिक्षण वेद के सत्य ज्ञान के प्रसार हेतु समर्पण के सद् संकल्प की घड़ी था।

यज्ञ संपन्न हुआ और आर्यजाति के तपोधन संन्यासी स्वामी ओमानन्द ने किया, दयानन्द संसद् के इस प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन। अध्यक्षता कर रहे थे सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी। स्वामी ओमानन्द जी के भाषण में आर्य समाज की वर्तमान अवस्था पर एक अन्तर्वेदना मुखरित हो उठी इन शब्दों में "आर्य समाज में विद्यमान मतभेद और फूट तथा दलबन्दी यथाशीघ्र समाप्त होनी चाहिए। महर्षि दयानन्द के अनुगामियों का कर्त्तव्य विश्व में मानव मानव के मध्य विद्यमान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीवारों को गिराकर उन्हें जीवन की सफलता का पथ दर्शाना है किन्तु आज वे ही दलबन्दी की दलदल में फंसकर दिग्भ्रान्त से होते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में भी आशा की एक किरण दयानन्द संस्थान द्वारा ज्योतित हो रही है। और उसका प्रमाण है आर्य साहित्य का इस संस्थान द्वारा सस्ते और सुलभ मूल्य पर प्रसार और प्रचार। संस्थान के द्वारा १॥ वर्ष की अल्पावधि में ही सत्यार्थ प्रकाश का जितना व्यापक विपुल संख्या में जन गण में प्रचार हुआ है उतना शायद इस शताब्दी भर में कभी नहीं हुआ। इसके लिए दयानन्द संस्थान के संचालक और कार्यकर्त्ता आशीर्वाद और बधाई के पात्र हैं।"

आपने आर्य सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार पर बल देते हुए ग्रामों को कार्य क्षेत्र बनाने तथा मद्यपान इत्यादि—सामाजिक-कुरीतियों के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन छेड़ने का भी आह्वान किया और साथ ही वैदिक साहित्य के प्रचार और प्रसार पर भी जोर दिया।

तदुपरांत दयानन्द संसद् के प्रथम सत्र के अन्तर्गत विचार विमर्श का क्रम आरम्भ हुआ। प्रथम वक्ता थे महानन्द मिशन कालेज के उपाचार्य प्रो० रत्नसिंह। आपने आर्यसमाज में नवजीवन का संचार कर उसे पुनः प्राणवान् बनाने के लिए सुझाव दिया कि स्कूलों और कालेजों में आर्यसमाज के उच्च कोटि के विद्वानों के भाषणों का आयोजन होना चाहिए। जिससे कि युवाशक्ति वैदिक विचारधारा से प्रभावित हो सके। आपने आर्यसमाज के सत्संगों और उत्सवों में भी राजनैतिक लोगों को बुलाने के स्थान पर विद्वानों को ही आमन्त्रित करने का सुझाव दिया।

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध मनीषी आचार्य उदयवीर शास्त्री ने (गाजियाबाद) कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाकर सही अर्थों में आर्य बने तो आर्यत्व का यही सबसे बड़ा प्रचार होगा। अच्छी बातें कहने में कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। कोई माने या न माने हमें निष्ठा और संकल्प सहित कार्य करते रहना चाहिए।

श्री उमेशचन्द्र (आगरा) ने परिचर्चा क्रम में प्रदत्त विषय का विश्लेषण करते हुए कहा कि आर्यसमाजी के नाते हमें सर्वप्रथम अपने परिवारों को आर्य बनाना होगा। हम बाहर प्रचार और घर में अंधकार की प्रवृत्ति को त्यागें - किसी भी आर्य समाजी को अपने कार्य से समाज के प्रति भ्रम उत्पन्न नहीं होने देना चाहिए। आर्यसमाजी अपने यहाँ विवाह आदि पर्वों में भी कोई ऐसी कुरीति न निभाएं कि जिसके सिद्धान्ततः हम विरोधी हैं। प्रत्येक आर्य समाजी को दिन में एक घंटे आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए अवश्य ही देने का व्रत ग्रहण करना चाहिए।

आर्यसमाजों के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि हर आर्यसमाज को आर्य साहित्य का स्टाक अपने पास रखना चाहिए। सामाजिक बुराइयों के प्रति विद्रोहात्मक प्रचार होना चाहिए तथा दहेज, मद्यपान, अण्डे आदि के विरुद्ध आन्दोलन व जन जागरण करना चाहिए। व्याख्यानों का सिलसिला भी ऐसा होना चाहिए कि जो सभी के लिए उपयोगी हो व भजन मंडलियों की भी समुचित व्यवस्था की जाय। प्रत्येक आर्य समाज मंदिर में पुरोहित की व्यवस्था हो जिससे कि समाज मंदिर सदैव खुले रह सके। आर्यसमाज के पदाधिकारीभी आदर्श हों तथा बौद्धिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
गोष्ठियां भी चलाई जाएं जिससे कि शंका समाधान की भी व्यवस्था हो सके।

आर्य विद्यालयों के द्वारा किए जाने वाले कार्यों के सम्बन्ध में सुझाव देते हुए आप ने कहा कि इन में व्यवस्थापक भी उत्तम हों जो आर्य व्यवस्थाओं को लागू करें। प्रध्यापकों को आर्य धर्म के सम्बन्ध में समुचित शिक्षण और ज्ञान भी कराया जाए। विद्यालयों में आर्य कुमार सभाओं की स्थापना पर भी आपने जोर दिया।

तदुपरांत आर्यसमाज की स्थिति और दायित्वों पर प्रकाश डालने के लिये खड़े हुए तप और त्याग तथा प्रकांड पांडित्य की प्रति मूर्ति स्वामी ब्रह्मानन्द जी दंडी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक आर्यसमाजी को एक-एक पुत्र को ब्राह्मण बनाना चाहिए। तीनों सभाओं की स्थापना होनी चाहिए। ससंत्सदस्यों की भी एक सभा होनी चाहिए। एक व्यक्ति को एक ही पद पर नियुक्त किया जाना चाहिए। आर्यसमाज की स्थिति को सुधारने के लिए आपने एक आदर्श विद्यालय की स्थापना का महत्व प्रतिपादित किया।

जिला सहारनपुर के वयोवृद्ध आर्य नेता श्री वेणी प्रसाद जिज्ञासु ने आर्य साहित्य के प्रचार की महत्ता प्रतिपादित करते हुए बड़े ग्रन्थों के स्थान पर छोटे-छोटे ट्रैक्ट- छापने को प्रमुखता देने का सुझाव दिया और यह भी कहा कि प्रचार वैनों (गाड़ियों) की व्यवस्था भी की जानी अपेक्षित है। भजन मंडलियों और प्रचारकों की टोलियों का गठन भी आपने आर्यसमाज के प्रचार के लिए आवश्यक बताया।

चर्चा का क्रम जारी था अब सुझाव दे रहे थे श्री विजयपाल जी शास्त्री (गाजियाबाद) उन्होंने कहा कि वास्तविक और सच्चे योग तथा संस्कृत का प्रचार और प्रसार आर्य समाज को नई शक्ति प्रदान कर सकेगा और संगीत के माध्यम से धर्म प्रचार भी नितांत प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

मध्याह्न हो चला था। १२ बज रहे थे - प्रथम संगोष्ठी और चर्चा के क्रम का एक चरण संपन्न हुआ। सभी उपस्थित जन भोजन के लिए उठ गए।

भोजन और विश्राम के उपरान्त अपराह्न तीन बजे से पुनः चर्चा और विचार विमर्श का क्रम आरम्भ हुआ। इस बार प्रारम्भ किया बिजनौर आर्य कुमार सभा के संचालक श्री अरुण कुमार ने। आपको शिकायत थी कि हम बालकों और युवकों को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पा रहे। अतएव आर्य कुमार सभाओं के माध्यम से आर्य कुमारों में प्रचार किया जाना चाहिए। बाल्यकाल से ही आर्य विचारधारा को अंकुरित किया जायगा तो हम विद्यमान निराशपूर्ण स्थिति को सुधार कर आर्य-समाज को पुनः जीवित, जाग्रत और सशक्त संगठन के रूप में खड़ा कर सकते हैं। अपने प्रत्येक समाज में दैनिक कार्यक्रम की व्यवस्था करने की भी आवश्यकता बताई।

उनके उपरांत मेरठ के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री रघुनन्दन प्रसाद एडवोकेट ने आर्यसमाजों में आई शिथिलता के निराकरण हेतु अपना जीवन आदर्श और समुन्नत तथा ध्येय-निष्ठा से परिपूरित बनाने का आह्वान् किया।

अब चर्चा क्रम में विचार करने के लिए उठीं आदर्श आर्य माता शीला देवी (मवाना)। उन्होंने कहा कि हम बालकों में अपने विचारों को भरें, नींव मजबूत हुई तो फिर शेष जीवन में कोई भी व्यक्ति अपने सिद्धांतों पर अविचल और अडिग रहते हुए कर्त्तव्य की पूर्ति कर सकता है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और अब विचार व्यक्त कर रहीं थीं सतभ्रार्वां कन्या विद्यालय की प्राध्यापिका बहिन राज जी। उन्होंने अपने विचारों को नितान्त ही सरल शब्दों में व्यक्त किया और इस बात पर बल दिया कि यदि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं पर नियन्त्रण करले तो बिगड़ी स्थिति संवर जायगी। अपना अनुभव बताते हुए आपने स्पष्ट किया कि हम जो कुछ बने हैं अपने घर के वातावरण से ही बने हैं। वस्तुतः घर, विद्यालय व समाज तीनों का वातावरण ही व्यक्ति को बनाता है।

तदुपरांत इस कार्यक्रम के समापन एवम् स्वामी सत्यप्रकाश के अध्यक्षीय भाषण से पूर्व दयानन्द संस्थान के अध्यक्ष श्री भारतेन्द्रनाथ ने दयानन्द संसद् के उद्देश्यों और योजनाओं को स्पष्ट करते हुए सभी के सुझाओं के आधार पर २१ सूत्री कार्यक्रम घोषित किया। जो निम्नलिखित है:—

आर्यसमाजें क्या करें ?

१—आर्यसमाज के प्रचार में अध्यात्मवाद-सिद्धान्त और धर्म के सच्चे स्वरूप को प्रमुखता दी जाए।

२—प्रचार में उत्सवों के अतिरिक्त कथाओं व वेद प्रवचनों का आयोजन किया जाए।

३—प्रत्येक आर्यसमाज वर्ष में कम से कम ३ ग्रामों में प्रचार अवश्य करें। बड़े नगरों की आर्यसमाजें अपने नगर के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार का प्रबन्ध करें।

४—प्रत्येक आर्यसमाज अपनी आय का कम से कम २० प्रतिशत साहित्य प्रसार में व्यय करे।

५—उपदेशकों, संन्यासी, विद्वानों का विशेष सम्मान किया जाए।

६—उत्सवों व प्रचार के अवसर पर वेदी व मंच आकर्षक बनाएं।

८ साप्ताहिक सत्संग में अधिकाधिक उपस्थिति बढ़ाने का यत्न किया जाए।

६—आर्यसमाजें अपनी सारी शक्ति अपने ही क्षेत्र में वैदिक विचार-धारा प्रसार में लगाएं। जिन क्षेत्रों में आर्यसमाजें नहीं हैं उन क्षेत्रों में प्रचार के लिये योग देना चाहिए।

१०—आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए अधिक से अधिक ट्रैक्टों का वितरण किया जाए।

११—पारिवारिक सत्संग की प्रथा जागृत की जाए।

१२—आर्यसमाजें अपने क्षेत्र में व्यायाम शालाएं और धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय चलाने की व्यवस्था करें।

१३—आपसी झगड़े और पार्टीबाजी तुरन्त समाप्त की जाएं।

१४—अपनी आय का शतांश देने पर बल दिया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्ति क्या करें ?

१—प्रत्येक आर्य अपने परिवार में दैनिक यज्ञ व संध्या करे ।

२—प्रत्येक आर्य प्रतिमाह १ सत्यार्थप्रकाश और ऋषि जीवन नए आर्यसमाजेतर व्यक्तियों को दे ।

३—व्यक्तिगत जीवन और काम अपने व्यवहार में हमारा ढ़ंग सत्य और धर्म पर आधारित हो ।

४—सभी प्रतिदिन आधा घंटा स्वाध्याय अवश्य करें ।

शिक्षा संस्थाएं क्या करें ?

१—विद्यार्थियों को धर्म शिक्षा देने का प्रबन्ध किया जाए ।

२—विद्यार्थियों को प्रतिमाह छोटे-छोटे ट्रेक्ट दिए जाएं ।

३—सप्ताह में एक बार किसी विद्वान का भाषण कराया जाए ।

इस २१ सूत्री कार्यक्रम से सभी ने सहमति व्यक्त की तथा सभी आगंतुक बन्धु भगिनियों ने एक दूसरे से परिचय प्राप्त किया और अब अधिवेशन का निर्धारित कार्यक्रम समाप्त हुआ, पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी के अध्यक्षीय भाषण से। जिसमें उन्होंने दयानन्द संस्थान द्वारा वैदिक साहित्य के प्रचार और प्रसार की मुक्त कंठ से सराहना की तथा आर्यसमाज के कर्त्तव्य पर प्रकाश डाला । (अविकल भाषण अन्यत्र अगले अंक में दिया जा रहा है)

दिन ढल चुका था । दिवाकर अस्ताचल गामी थे और दिनभर की तपन मिट रही थी । संध्या के साथ ही वायुमंडल में भी परिवर्तन आ रहा था । गरमी हट रही थी और वायु के झोंके भी सुखद-स्पर्श करा रहे थे। प्रकृति में यह परिवर्तन इस तथ्य को ओर इंगित कर रहा था कि आर्य जन अपने काम में पूर्ण तत्परता से जुटें, वैदिक साहित्य और ज्ञान के प्रचार प्रसार में उष्णता लाएं तो वह शुभ घड़ी भी अवश्य ही आएगी कि जब विश्व की उदभ्रांत मानवता, दुनिया के गुमराह जन गण, सत्य ज्ञान के दर्शन पाकर उसे ग्रहण करेंगे और उनके जीवन में भी सच्चे सुख और शांति के समीरण का सुसंचार हो सकेगा । ●

आर्य जनों का कर्तव्य है कि पूर्ण शक्ति से उक्त कार्य क्रम को पूर्ण कर रचनात्मक ढंग से आर्य समाज की स्थापना शताब्दी मनाएं । ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

गुरुकुल कासारी

खांसी की अपूर्व गुणकारी औषधि

उपयोग—किसी भी कारण से हुई खांसी, नजला, जुकाम आदि में लाभदायक है।

सेवन विधिः—दिन में तीन बार छोटी चम्मच लेकर उंगली से चाटें

आँखों के अनेक रोगों के लिए

संसार प्रसिद्ध

भीमसेनी - सुरमा

च्यवन प्राश

उत्तम, स्वादिष्ट, रसायन

शरीर को बलिष्ठ एवं कान्तिमान बनाता है

शारीरिक क्षीणता तथा फेफड़ों के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेदिक रसायन

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

पो० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

शाखा कार्यालय-चावड़ी बाजार दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्व० महात्मा प्रभु आश्रित जी का उपदेश

पाप और अशान्ति का क्या कारण है !

संसार में ईश्वर ने जो कुछ भी पैदा किया सारे का सारा हमारे कल्याण और सुख के लिये है। प्रत्येक वस्तु में परमेश्वर ने कोई ऐसा गुण रखा है जिस की हमें आवश्यकता है। उस गुण को जानने अथवा ग्रहण करने के लिये मनुष्य को बुद्धि की ज़रूरत है, जो मनुष्य बुद्धि का सदुपयोग करता है उसका वही गुण प्रयोग करके कल्याण के लिये लाभ प्राप्त कर सकता है। सर्प और बिच्छू यदि विषैले जन्तु हैं उन से भी बुद्धिमान् मनुष्य लाभ उठाते हैं। परमेश्वर ने मानव के अतिरिक्त अन्य प्राणियों में विशेष बुद्धि नहीं रखी जो गुणों को धारण कर सके। गधा पड़ी चीज़ को सूँघ लेता है। उसे यह भान हो जाता है कि यह मेरा खाद्य पदार्थ नहीं। उसे केवल इतना ज्ञान है कि वह वही वस्तु ग्रहण करे जिससे उसकी भूख मिट सके। मनुष्य को पेट पूर्ति और क्षुधा निवृत्ति से अधिक इच्छा लालसा है है आत्मिक उन्नति तथा शान्ति की। उस के लिये हमें विशेष ज्ञान की आवश्यकता है, इसलिये भगवान् ने वेद बनाये हैं।

ज्ञान की आवश्यकता

समाज की शान्ति को भंग करता है पापी, और अन्दर की शान्ति को भंग करता है पाप। यदि अन्दर से पाप की वृत्ति हट जाए तो शान्ति आ जाय। समाज का हानिकारक पापी और मानव का हानिकारक पाप है। इसलिये ज्ञान की आवश्यकता है।

अब देखना यह है पाप का कारण कौनसा कर्म है जिस से अशान्ति होती है। वे कारण चार हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(क) असत्य भाषण—हम वाणी से सत्य नहीं बोलते, असत्य बोलते हैं। और यह अशान्ति का कारण है इसलिए पहला पाप असत्य बोलना है। वेद हमें सिखाता है कि वाणी से सत्य बोलो। परन्तु यद्यपि अप्रिय सत्य बोला तो दूसरे का विच्छेद कर दिया। प्रेम न रहा। ऋषियों ने कहा "सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।" अर्थात् सत्य बोलो, मीठा सत्य बोलो, कड़वा सत्य मत बोलो।

(ख) दूसरा कारण अशान्ति का स्वार्थ है। स्वार्थ के लिये मनुष्य अनेकों प्रकार की चालें चलता है और दूसरों की हानि की परवाह नहीं करता।

(ग) तीसरा कारण है अहंकार-अकड़ यानी अभिमान घमंड इस से मनुष्य चंचल रहता है उसको दूर करने के लिये नम्रता आ जाय, नम्रता किस में आए। वाणी के नम्र तो बहुत हैं, परन्तु सच्ची नम्रता तो मन की है। मन के अन्दर नम्रता आ जाय तब तो कल्याण है परन्तु जब तक मन के अन्दर नम्रता नहीं सिर तो झुक जाएगा परन्तु मन नहीं झुकेगा।

(घ) चौथा कारण—वैर द्वेष यह भी अशान्ति के कारण हैं। इनका निवारण प्रेम से होता है।

ज्ञान की प्राप्ति

यह ज्ञान वेदों से प्राप्त होता है। ऋग्वेद सत्य का भंडार है। प्रिय सत्य सिखाता है। यजुर्वेद स्वार्थ का नाश कर परमार्थ की बुद्धि सिखाता है। साम वेद नम्रता सिखाता है। अथर्व वेद वैर का त्याग करना और प्रेम सिखाता है। भगवान् का भक्त चारों वेदों के अनुकूल अपना जीवन बनाता है भक्त के अन्दर चार गुण आ जाते हैं (क) सबसे पहले भगवान् का स्वभाव दया है। भक्त के अन्दर दया आ जाती है। फिर, (ख) क्षमा (ग) विस्मृति और (घ) प्रेम

भक्त के पास कोई भी सम्पत्ति नहीं। वह सम्पत्ति जो राजों महाराजों धनियों के पास होती है। उस के पास प्रभु की निज संपत्ति होती है। मनुष्य के पास उन्नति के लिये तीन चीजें हैं। धर्म, ज्ञान और शक्ति। जब सांसारिक मनुष्य धार्मिक कार्य्यों में उन्नत हो जाता है तो उसे अभिमान आ जाता है। यदि ज्ञान और शक्ति में बढ़ जाय तो भी अभिमान आ जाता है, परन्तु भक्त में यह गुण बढ़ते हैं तो वह उन्हें सर्वप्रथम परमेश्वर की देन समझता है। दूसरी बात यह समझता है कि यह नाशवान् है। कोई भरोसा नहीं किस समय यह छिन जाएं। तीसरी बात उसे अहंकार नहीं होता और आसक्ति नहीं होती।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्य मरण पर्य्यन्त यह विश्वास न करे कि मेरे अन्दर गुण सर्वदा के लिये रह जाएंगे। नहीं कह सकते कि किस क्षण वे लुप्त प्रसुप्त हो जाएं। दृष्टान्त—जालन्धर का एक सज्जन व्यक्ति जा रहा है। मार्ग में उसने देखा कि एक थैली पड़ी है जिसमें दस सहस्र नोट थे। दुःखी हुआ और थैली उठाकर बैठ गया। विचारने लगा। कि जिसकी यह थैली है उसको कितना दुःख होगा। कुछ देर के बाद एक अश्वारोही वहां आया और उसने पूछा कि यहां कोई थैली भी पड़ी देखी? पूछा, उस में क्या था? कहा दस हज़ार रुपये। झट थैली आगे धर दी, यह लो भाई, अपनी थैली। तो उस सवार ने एक हज़ार रुपया पारितोषिक रूप में उसे देना चाहा। परन्तु उसने कहा मैं आप को धन्यवाद देता हूँ, कि आप ने मुझे चिन्ता से मुक्त किया। कुछ समय बीता वही मनुष्य बाजार से गुजरा। देखा फलूदा बिक रहा है। भीड़ लगी हुई है फलूदे वाला रंग बिरंगी सुन्दर शीशे के प्यालियों में हरेक को फलूदा देता जाता है। वह भी गया, और कहा कि एक आने का फलूदा मुझे भी देना। फलूदा लिया और खाया। देखा फलूदे वाले के पास भीड़ लगी है चुपके से खिसक गया प्याली जेब में डाल दी। जब उसने देखा कि उस व्यक्ति ने जो जा रहा है न तो मुझे पैसे ही दिये और न प्याली वापिस की है तो भागा उसे जा पकड़ा। प्याली भी जेब से निकाल ली और पैसे चार लिये और धिक्कारा भी सही। तब उसे विचार आया कि आह मैं तो कितना गिर गया! जब दस हज़ार की थैली हाथ में थी तब तो विचलित न हुआ और अब दो आने के लिए कलंकित हो गया। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को सावधान रहना चाहिये। बड़े-बड़े ज्ञानी भी किसी ऐसे समय ज्ञान शक्ति खो जाने पर पागल हो जाते हैं। वह शक्ति बीमारी पर अथवा बेहोशी पर छिन जाती है।

(ख) क्षमा—किसी के अपराधों को क्षमा कर देना। यदि किसी अपराध को क्षमा कर दिया जाए तो उसे प्रमाद हो जाता है। भगवान् की क्षमा इस प्रकार चलती है कि वह पापों को भक्त के सामने कर देता है। भक्त ज़ार २ रोता है। जब वह दुःखित हो कर रोता है तो उसके अन्दर एक आश्वासन आ जाता है। उसके मल विकार धुल जाते हैं और उसका मन प्रसन्न हो जाता है। भगवान् का भक्त सदा सचेत रहता है। वह पाप से सावधान हो जाता है।

(ग) विस्मृति—भगवान् का भक्त और संसार का मनुष्य भी भूल जाता है। सांसारिक मनुष्यों को सम्पत्ति मिल जाय तो वह अपने संबन्धियों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को जो निर्धन हों भूल जाता है अथवा जिसने उसके ऊपर एहसान चढ़ाया हो और अपने किये हुए पापों को और भगवान को भूल जाता है। परन्तु भगवान् का भक्त उन्हें भूल जाता है जिसने उसके साथ छल कपट वैर विरोध किया हो अथवा उस नेकी को भूल जाता है जो उसने किसी के साथ की हो। जो व्यक्ति अपनी नेकी और दूसरे की बुराई को भुला दे उसे अहंकार कहां ?

(घ) **प्रेम**—भगवान् अपने भक्त को अपने से कभी जुदा नहीं होने देता। भक्त के सामने सर्वदा परमेश्वर रहता है जैसे नन्हें बच्चे को माता पृथक् नहीं करती इस विचार से कि रो पड़ेगा अथवा डर जाएगा। गोद में उठाये फिरती है। इसी प्रकार भगवान् भी अपने भक्त को अपने साथ रखता है कि, कहीं विषयों से डर न जाए। साम वेद भक्ति का वेद है। भक्ति तो राग, द्वेष, अविद्या, अस्मिता में फंसे हुए लोग भी करते हैं। वे जड़ पदार्थों को भगवान् मान कर करते हैं। क्योंकि परमेश्वर का ढूंढना बहुत कठिन है। वह आदमी जो पढ़े लिखे हैं, शब्दार्थ जानते हैं और विद्वान् हैं, वे प्रायः अभिमान और स्वार्थ के कारण भक्ति नहीं कर सकते।

भगवान् क्या चाहता है ?

भगवान् चाहता है मेरी शरण में आ जाओ। 'सत्य भाव और प्रेम से आ जाओ'। जिस प्रकार अग्नि में लकड़ी डालते ही धुआं निकलता और प्रकाश हो जाता है और उसको अग्नि अपने समान बना लेती है उसी प्रकार आत्मा परमात्मा के पास जाती है, तो परमात्मा उसकी अविद्या का नाश कर देते हैं और आत्मा का प्रकाश करके अपने समान बना देते हैं।

भक्त कौन है ?

भक्त वह है जो भला देखने वाला, समान देखने वाला और मित्र देखने वाला हो। अतः भक्त बनने के लिये सद्दृष्टि, मित्रदृष्टि होनी चाहिये। बच्चा आंख से सबको मित्र समान समदृष्टि और सद्भावना से देखता है और हंस पड़ता है। उसके अन्दर तीनों गुण विद्यमान हैं। परन्तु जिस प्रकार कटोरे में छिद्र होने से दूध टपक २ कर निकल जाता है और बाहर से मक्खी मच्छर आ जाते हैं उसी प्रकार हमारे इस मन के अन्दर पक्षपात अथवा वैर रूपी छिद्र आ जाएं तो यह गुण निकल जाते हैं, अवगुण आ जाते हैं। जिस प्रकार आंख रूपी छिद्र से पानी निकल आए तो आंख कमजोर हो जाती है और मक्खियां आंख पर बैठती हैं, तंग करती हैं। इसी प्रकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कान आंख और वाणी से अन्दर रहने वाले गुण न निकल जायें और अवगुण न आ जावें। मनुष्य को खोज करनी चाहिए कि कहीं हमारे अन्दर छिद्र तो नहीं। यदि मनुष्य उपदेश सुनने के पश्चात् भी कोरे का कोरा रह जाय और कोई परिवर्तन न आए तो समझ लो उसके अन्दर छिद्र आ गया है। जैसे एक आदमी ने क्यारी में बीज बो दिया। दूसरे ने कुआं चलाया। वह पानी नालियों से गुजरता हुआ खेत में चला गया तो खेती हरी भरी हो गयी। इसी प्रकार यदि नाली में छिद्र हो जाये तो पानी इधर उधर हो जायगा, खेत सूख जायगा। इसी प्रकार भगवान् के भक्त भक्ति के रस को बढ़ाते हैं ताकि वह बढ़े और सरसब्ज़ हो जाए परन्तु यदि छिद्र हो जाएं तो हमारी भक्ति बेकार हो जाये यह देखना भक्त का काम है।

यज्ञ साधन है—वेद या यज्ञ कर लेना पर्याप्त नहीं है। यह तो साधन है साध्य नहीं। साध्य है प्रभु की प्राप्ति। प्रभु की प्राप्ति के लिये सम बनना होगा। सब को एक समान, अपने समान होना पड़ेगा। यजुर्वेद कहता है:—

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति॥

यजु० ४०।६॥

जो सब भूतों को अपने समान जानता है और सब भूतों में आत्मा को जानता है, वह कोई गलती नहीं करता।

अर्थात्, जो लोग सर्वव्यापी न्यायकारी सर्व सनातन सब के आत्मा अन्तर्यामी सब के द्रष्टा परमात्मा को जानकर सुख दुःख हानि लाभों में अपने आत्मा के तुल्य सब प्राणियों को जान कर धार्मिक होते हैं, वे ही मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

सामवेद यह समता सिखाता है। समता तब आयगी जब हम परमात्मा को मध्य में लाएं। ओ३म् में तीन अक्षर अ, उ, म् हैं। अ=परमेश्वर, उ=जीव, और म्=प्रकृति। यहां तो जीव मध्य में है। हम ने 'अ' को मध्य में लाना है। साम के तीन अक्षर स, अ और म हैं। स—जीव, अ= परमात्मा और म—प्रकृति। बस यही साम सिखाता है कि बड़े की शरण में आओ। बड़े की शरण में आने से ही कोई शत्रु आक्रमण नहीं कर सकता। उ का 'अ' बन जाने से स—जीवात्मा की दृष्टि अ—परमात्मा पर पड़ेगी प्रकृति पीछे जा पड़ेगी प्रभु की ओट में आ गई प्रकृति पर जीवात्मा की नजर न पड़ेगी। स+अ+म=साम=यही साम का लक्ष्य है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिर के मध्य में ग्रीवा से ऊपर के मध्य में क्या है ? नासिका है नासिक मे प्राण है । भगवान को प्राण में बिठा दे, वह प्राणनाथ बन जाय। आंख, नाक, जिह्वा बिना प्राण के काम नहीं कर सकते। जब प्राणों में भगवान को बिठाएगें तो हमारी आंख नाक जिह्वा में भगवान् वर्तमान होंगे। हमारी दृष्टि भी वैसी बन जायेगी जैसी परमात्मा की है। हमारे कान भद्र सुनेंगे, हमारी वाणी शुभ बोलेगी। इस समय हमारे प्राण में असुर का राज्य है। हमारी आख में असुर भाव आता है। वह बुरा देखती है। कान अश्लील सुनते हैं। वाणी कटु बोलती है।

कंठ से नीचे नाभि तक हृदय है। भगवान् को हृदय में बिठाएं। परन्तु इस समय तो हमारे हृदय में संसार के विषय धन दौलत सुन्दर मकान बसते हैं परन्तु जब भगवान को बिठाएंगे तो भगवान का राज्य होगा। हृदय से नीचे मध्य में नाभि है। नाभि में तो हमारी लोभ और वासनाएं बसती हैं। जब भगवान् बसेगा तो हमें संतोष हो जाएगा। भगवान् को मध्य देशों में बैठाना है। प्राण में, हृदय में और नाभि में। भगवान् करें यह बात हमारी समझ में आ जाए और हम अपने जीवन को सुधार संवार सकें।

●●●

देव पुरोहित सबका !

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।
३२ ३ १२ ३ १२
देवेभिर्मानुषे जने ॥ साम० २. १४-७४।

तू है देव पुरोहित सबका, सर्व जगत् हितकारी है
सब यज्ञों का तू है होता, स्वार्थ-रहित उपकारी है।
सत्य-निष्ठ जो ज्ञानी जन हैं, सबमें तुझको लखते हैं
सब मनुजों मेंप्राणिमात्र में, प्रेमभाव वे रखते हैं॥

—धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अग्नितत्त्व की एकता

[प्रो० विश्वनाथ, विद्यालंकार, विद्यामार्तण्ड]

निरुक्त अध्याय ७, पाद ६ में वैश्वानर पद के अर्थ-निश्चय के सम्बन्ध में विचार किया गया है। यास्क से प्राचीन काल के निरुक्ताचार्य यह मानते थे कि वैश्वानर का अर्थ है "विद्युत्" जो कि मध्यलोक या अन्तरिक्ष में विद्यमान है। और पूर्व काल के याज्ञिक लोक वैश्वानर पद का अर्थ "आदित्य" करते थे। परन्तु शाकपूणि आचार्य का मत है कि वैश्वानर का अर्थ है "यह अग्नि" अर्थात् पृथिवी की अग्नि। यही मत निरुक्तकार यास्काचार्य को भी अभीष्ट है।

शाकपूणि के मत का पोषण निरुक्त में निम्नलिखित प्रकार से किया गया है। यास्काचार्य कहते हैं कि वैश्वानर पद के दो अर्थ हैं, एक तो विद्युत् और दूसरा आदित्य। परन्तु वैश्वानर का अर्थ है "विश्वानर से उत्पन्न", अर्थात् "पृथिवी की अग्नि"। प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह पार्थिव अग्नि किस प्रकार विद्युत् से और आदित्य से पैदा होती है। इसके उत्तर में निरुक्तकार पहले यह साबित करते हैं कि पार्थिव अग्नि विद्युत् से पैदा होती है। वे लिखते हैं कि—

यत्र वैद्युतः शरणमभिहन्ति यावदनुपात्तो भवति मध्यमधर्मैव तावद् भवति, उदकेन्धनः शरीरोपशमनः। उपादीयमान एवायं सम्पद्यते उदकोपशमनः शरीरदीप्तिः।

इसका अर्थ यह है कि "जब विद्युत् किसी आश्रय में जमा की हुई होती है, तो जब तक उसका उपादान न किया जाय, उसे किसी काम में न लाया जाय, तब तक उस जमा की हुई विद्युत् के वे ही गुण-धर्म होते हैं जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुण-धर्म कि अन्तरिक्ष में रहने वाली विद्युत के होते हैं। वे गुण-धर्म ये कि ये दोनों प्रकार की विद्युतें अर्थात् पार्थिव विद्युत् और अन्तारिक्षीय विद्युत् १—उदक द्वारा प्रकट होती है, और २—कोई पार्थिव पदार्थ इनके साथ स्पर्श करे तो ये शान्त हो जाती है, अर्थात् उस पार्थिव पदार्थ में लीन होकर समाप्त हो जाती हैं। परन्तु जब इन दोनों प्रकार की विद्युतों का उपादान किया जाय, अर्थात् व्यवहार में उपयोग किया जाय, तो ये पार्थिव अग्नि के रूप में बदल जाती हैं। इस समय इनके पहिले गुण-धर्म भी बदल जाते हैं, और बदल कर इनके गुण-धर्म पार्थिव अग्नि के गुण-धर्मों के सदृश बन जाते हैं। वे ये कि (१) उदक द्वारा शान्त हो जाना, बुझ जाना, और (२) यह कि कोई पार्थिव वस्तु इसके सम्पर्क में आ जाय तो उसे दीप्त कर देना, जला देना।

इस अर्थ का यदि विश्लेषण करें तो निम्नलिखित परिणाम निकलते हैं

१—निरुक्तकार के समकाल में आर्य लोगों को भूमि पर विद्युत् को उत्पन्न कर लेने की विद्या ज्ञात थी।

२—आर्य लोग विद्युत् को पैदा करके उसे यन्त्रों में जमा कर सकते थे। ऐसे यन्त्रों का नाम है "शरण"।

३—ये अपनी इच्छानुसार उस जमा की हुई विद्युत् का उपयोग कर सकते थे (यावत् अनुपात्तः उपादीयमानः)।

४—प्रायः जल द्वारा यह विद्युत् पैदा की जाती थी (उदकेन्धनः)।

५—और पार्थिव पदार्थों के स्पर्श द्वारा इस जमा की गई विद्युत् को वे खाली करना भी जानते थे, Discharge करना भी जानते थे (शरीर-उपशमनः)।

६—आर्य लोगों ने यह भी जान लिया था कि इसी प्रकार की विद्युत् अन्तरिक्ष में रहती है (मध्यम धर्मैव)।

७—पार्थिव विद्युत् और अन्तरिक्षीय विद्युत् के गुण धर्म समान हैं, (माध्यम धर्मैव)।

८—अन्तरिक्ष की विद्युत् भी उदक द्वारा उत्पन्न होती है। अर्थात् समुद्रों, नदियों, तालावों से जब पानी भाप बन कर उड़ता है उस समय यह विद्युत् पैदा होती है, और जब यह भाप बन कर आकाश में जाता है तो पारस्परिक रगड़ के द्वारा भी विद्युत् आकाश में पैदा होती है (उदकेन्धनः)।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

९—आर्य लोगों ने यह भी जान लिया था कि Electric conductors द्वारा प्राय: आकाश को विद्युत् को शान्त भी किया जा सकता है। जैसे कि मेघों की बिजुली से बचाव के लिए मकानों पर ये Electric conductors प्राय: लगा दिये जाते हैं। इन द्वारा बिजुली सीधी पृथिवी में घुस कर शान्त हो जाती है (शरीरोपशमन:)।

१०—आर्य लोग अन्तरिक्षीय विद्युत् का भी यथेच्छ उपयोग करना जान गये थे (उपादीयमान:)।

११—आकाश की विद्युत् को जब काम में लाया जाता था तो इसके गुणधर्म बदल दिये जा सकते थे। उस समय आग के रूप में बदली हुई विद्युत् को पानी से बुझाया जा सकता था, और वह शरीर आदि वस्तुओं को तब जला देती थी। वर्त्तमान समय में Electric heaters, Electric radiators का प्रयोग इसी असूल पर किया जाता है कि इन द्वारा पार्थिव विद्युत् को आग के रूप में बदल दिया जाता है।

इस प्रकार आदित्य से पार्थिव अग्नि कैसे उत्पन्न की जा सकती है, इसी सम्बन्ध में भी निरुक्तकार यास्काचार्य लिखते हैं कि—

अथादित्यात्। उदीचि प्रथम-समावृत्ते आदित्ये कंसं वा मणि वा परिमृज्य प्रतिस्वरे यत्र शुष्कगोमयमसंस्पर्शयन् धारयति तत्प्रदीप्यते। सोऽयमेव सम्पद्यते।

इसका अर्थ यह है कि "अब आदित्य से पार्थिव अग्नि की उत्पत्ति के प्रकार को कहते हैं। आदित्य जब उत्तर को प्रथम लौटने लगता है, तब किसी काँसे के पात्र को या मणि को खूब साफ़ करके उनके केन्द्र में जब सूखे गोबर को रख दिया जाता है और वह सूखा गोबर कांसे के पात्र को या मणि को छूए न, तब वह प्रदीप्त हो जाता है, जलने लगता है। इस प्रकार आदित्य से यह पार्थिव अग्नि सम्पन्न हो जाती है"

वर्त्तमान काल में बाज़ार में आतशी शीशा मिलता है, जिसे लेकर बच्चे कपड़े या कागज आदि को जलाने का खेल करते रहते हैं। उस द्वारा आदित्य से पार्थिव अग्नि पैदा की जाती है। इस खेल द्वारा निम्नलिखित परिणाम निकलते हैं—

१—आदित्य का दक्षिणायन में जाना और वहां से लौट कर उत्तर की ओर आना, इसका परिज्ञान आर्य लोगों को था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२—जब पहिले २ आदित्य दक्षिण से उत्तर की ओर आने लगे तब आदित्य की किरणों में गर्मी बढ़ने लगती है, तब आदित्य से पार्थिव अग्नि को उत्पन्न करने का परीक्षण सफल हो सकता है।

३—यह परिस्थिति उत्तर की ओर के भू-भाग में रहने वाले लोगों के लिये कही गई है। दक्षिण-भाग में अर्थात् भूमध्यरेखा के दक्षिण भाग में रहने वाले लोगों के लिये इससे उल्टी परिस्थिति होगी। जब दक्षिण की ओर आदित्य की गति होगी अब आस्ट्रेलिया आदि में आदित्य का ताप अधिक चमकेगा।

४—आदित्य से पार्थिव अग्नि को पैदा करने के लिये आर्य लोग कंस या मणि का प्रयोग करते थे।

५—कंस कोई मौलिक धातु नहीं। यह तांबे और जस्ते के मेल से बनाया जाता है। इससे ज्ञात होता है कि निरुक्तकार के समय के आर्य लोग कांसा बनाना जानते थे।

६—साधारण किसी भी कांसे के बर्त्तन द्वारा यह परीक्षण नहीं किया जा सकता। कांसे का वृत्त या गोला बनाओ जो कि बीच में खाली हो। इस वृत्त के दो वृत्तार्ध बनाओ। तब एक वृत्तार्ध को इस परीक्षण के लिये लो, तब यह परीक्षण सफल हो सकेगा। अर्थात् यह कांसे का पात्र चिलमची के सदृश आकार में होना चाहिये।

७—इसी प्रकार यह परीक्षण "मणि" द्वारा भी किया जा सकता है। इस मणि को संस्कृत में 'सूर्यकान्त" बोलते हैं। वर्तमान समय के बाज़ारू आतशी शीशे को हम "मणि" या "सूर्यकान्त" कह सकते हैं। यह शीशा दोनों ओर से उन्नतोदर होना चाहिये, Double Convex का यह शीशा होना चाहिये, तभी यह परीक्षण सफल होगा, अन्यथा नहीं। इससे ज्ञात होता है कि आर्य लोग Double Convex अर्थात् उभयतः उन्नतोदर शीशा बनाना जानते थे।

८—सामान्य शीशा बनाने के कार्य में तो उस समय के आर्य लोग अच्छे और चतुर रहे होंगे।

९—परीक्षण से पूर्व कंस को या मणि को खूब साफ़ कर लेना चाहिए, ताकि आदित्य-रश्मियों का प्रक्षेपण ये ठीक प्रकार से कर सकें। यदि इन पर मिट्टी के कण होंगे तो ये आदित्य-रश्मियां इधर-उधर बिखर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जायेंगी, और मिल कर एक केन्द्र पर जमा न हो सकेंगी। इन किरणों के एक जगह में, एक केन्द्र में, जमा होने पर ही परीक्षण सफल हो सकेगा।

१०—कांसे पर या मणि पर आदित्य की रश्मियाँ पड़कर जब ये किसी एक निश्चित केन्द्र में जमा होती हैं तब इस निश्चित केन्द्र को "प्रति स्वर" कहते हैं। इसे अंग्रेजी में Focus कहते हैं।

११—सूखे गोबर आदि को लेकर उसे आदित्य की रश्मियों द्वारा जलाने के लिये गोबर को कांसे या मणि के साथ स्पर्श करते हुए न रखना चाहिए। इससे गोबर आदि जलेगा नहीं। अपितु गोबर के टुकड़े को इधर उधर खिसका कर, आगे पीछे खिसका कर देख लेना चाहिये कि किस विन्दु पर टिकाने से यह गोबर जलता है, वहीं पर सूखे गोबर आदि को रख कर जलाना चाहिये। इसी निश्चित बिन्दु को "प्रति स्वर" या Focus कहते हैं।

इस प्रकार निरुक्तकार के समय में यह सिद्धान्त ज्ञात हो चुका था कि पार्थिव अग्नि, आकाश की विद्युत् और आदित्य की रश्मियों से पैदा की जा सकती है। अतः ज्ञात होता है कि पार्थिव अग्नि, विद्युत् और आदित्य में एक ही अग्नि तत्त्व है—यह आर्य विद्वानों को ज्ञात था। ●●●

अधिकार का सच्चा स्रोत है कर्तव्य। यदि हम अपने कर्तव्यों का पालन करें तो अधिकारों को हमें तलाशना न पड़ेगा। अगर कर्तव्यों को बिसारकर हम अधिकारों के पीछे भागेंगे तो वे मृगजल की भांति हमें चकमा देते रहेंगे। हम अन्दर से जिस मात्रा में स्वतन्त्र होंगे, उसी मात्रा में बाहरी स्वातन्त्र्य प्राप्त कर सकेंगे। यदि यह सत्य है तो हमारी मुख्य शक्ति अपने को भीतर से सुधारने में केंद्रित होनी चाहिए।

—महात्मा गांधी

प्रति माह की प्रथम तिथि को
वेद-भाष्य-यज्ञ की सफलता के लिए
आहुति भेजिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अण्डे खाकर आत्म हत्या मत करो

—पं० विष्णुकविरत्न

विदेशी लोग जब भारतवर्ष में आए तो उनके संसर्ग और उनकी संगति ने भारतीय आर्यों की भोजन व्यवस्था ही बदल दी। यहाँ का भोजन अत्यन्त संतुलित और सात्विक था। सात्विक और शुद्ध भोजन के कारण ही यहां के लोग हृष्ट-पुष्ट, वीर, बुद्धिमान, विद्वान्, विचारक और साधु प्रकृति के सत्यवादी, दृढ़, साहसी और भक्त होते थे। यहां नितान्त सुख और शांति का साम्राज्य था। स्वार्थ और छल-कपट नाम को भी नहीं था।

परिवार भी नियोजित और नियंत्रित था। सभी कार्य संतोषजनक ढंग से होते थे। अन्न-धन का अभाव नहीं था। सभी व्यापार सत्यता के आधार पर चलते थे। कृषि प्रधान देश होने के नाते यहां सभी प्रकार के अन्न पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थे।

"दूध की नदी बहती थी।" यह लोकोक्ति निराधार नहीं थी। एक मनुष्य के पीछे दश पशु पलते थे। परिवार के भरण-पोषण के लिए दूध, दही, घी का आधिक्य था। सम्भवत: अन्न का प्रयोग इसीलिए कम होता था क्योंकि यहां दूध, दही, फल, तरकारी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थी और अन्न की बिल्कुल कमी नहीं थी।

आज की भांति पशु बिना चारे के मरता नहीं था। चारा उसके आगे-पीछे पड़ा रहता था। चारे के साथ बैलों को तो कृषक लोग घी भी देते थे। गऊ दूध भी काफी देती थीं क्योंकि उनके लिए जंगल खुला पड़ा था। कहीं भी घूम कर घास-दूब चर लेती थी।

आज जैसा पशुवध नहीं था। या यूं कहें तो कहीं अधिक सत्य है कि पशु अपनी मौत से मरता था और उसके चमड़े और हड्डियों का सुप्रयोग किया जाता था। राजाओं की ओर से पशु-पक्षी, जीव-जन्तु आदि का वध निषिद्ध था। पशु-वध को पाप और हिंसा मानते थे। ऐसी उस समय के आर्यावर्त्त की निष्ठा थी।

सात्विक भोजन को आज हम शाकाहार की संज्ञा देते हैं। रोटी, दाल, शाक-सब्जी, तरकारी, फल-फूल, दूध आदि के भोजन को ही सात्विक भोजन कहते हैं। जब से भारत में मांसाहारी बढ़े, उन्होंने पशुओं की हिंसा करके मांस प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया। एक-दूसरे को देख कर कहो या कुसंगति के कारण मांस खाने की प्रथा चल पड़ी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब हँसी और मजाक की बात तो यह है कि लोग मुर्गी के अण्डे को शाकाहार कहकर हड़प करने लगे। सारा संसार जानता है कि मुर्गी पक्षी है, जीव है—इसके पेट से अण्डे की उत्पत्ति होती है तो फिर इसको शाकाहार कैसे कहते हैं ?

बड़े आश्चर्य और कौतूहल की बात है—जब संसार भर की सारी शाक-सब्जियां तो धरती माता के पेट से उत्पन्न होती हैं, यह ऐसी कौनसी सब्जी विशेष हो गई (केवल मांसाहारियों के लिए) जो ईश्वर ने मुर्गी-माता के पेट से पैदा कर दी ? जीव के पेट से तो जीव ही पैदा होता है। सिद्धान्त के अनुसार मुर्गी के अण्डे में से इक्कीस दिनों के पश्चात् चूजा या बच्चा निकल आता है। उस अण्डे में से शाक की भांति मूली, गाजर, बैंगन, तोरई, टमाटर आदि पैदा क्यों नहीं हुए, चूजे या बच्चे (चलते-फिरते) कैसे निकल आए ?

आजकल के नए वैज्ञानिक इसके लिए एक और तर्क पेश करते हैं—वे कहते हैं मुर्गी दो प्रकार के अण्डे देती है। एक खाकी infertile (जिसमें बच्चा नहीं होता) और दूसरे Fertile (जिसमें से बच्चा निकलता है।)

इन बुद्धिमानों से कोई यह पूछे कि भाई, क्या मुर्गी के अण्डे देते ही तुम में से कोई वैज्ञानिक या कुशल यह बता सकता है कि यह अण्डा जिसे मुर्गी ने अभी-अभी दिया है, उसमें बच्चा है या नहीं ? अथवा कौन-सा अण्डा Fertile or Infertile है ? संसार में कोई एक्सपर्ट एक सप्ताह से पहले इसका निर्णय ही नहीं कर सकता। क्योंकि कम से कम एक सप्ताह में मशीन के द्वारा यह जाँच की जाती है कि यह अण्डा (Fertile या Infretile) है या नहीं।

परन्तु जितने अण्डे खाने वाले हैं, वे जहां से भी अण्डा खरीदते हैं, दूकानदार से यह पूछते हैं कि यह अण्डा ताजा है ? दूकानदार फौरन उत्तर देता है कि कल का है ताजा है।

जिन अण्डों को मुर्गी सेती है उनकी बात जाने दो। वह तो स्वयं जानती है। जिस अण्डे में से बच्चा नहीं निकलने वाला होता है, मुर्गी सेती ही नहीं। या तो उस अण्डे को अपने पञ्जों से फोड़ डालती है या खा जाती है या उसको अपने दड़बे (पंजों के नीचे) से बाहर निकाल देती है। मुर्गी का मालिक उसको खाकी Infertile समझ कर उठा लेता है।

अब उन अण्डों की बात है जिनका लोग व्यापार करते हैं अर्थात् जो सैकड़ों-हजारों की संख्या में मुर्गियां पालते हैं, पोल्ट्रीफार्म बनाते हैं। तो फार्म में तो सैकड़ों-हजारों अण्डे प्रतिदिन प्राप्त होते हैं। वे पोल्ट्री फार्मिंग करने वाले लोगों के पास अण्डे निकालने की एक मशीन होती है जिसको इन्क्यूबेटर (Incubator) कहते है। इसमें हजारों अण्डे एक समय में ही लगाए जाते हैं। परन्तु लगाने से पूर्व उनको लगभग एक सप्ताह कोल्ड स्टोर में रखा जाता है। वहां से अण्डों की छटनी होती है। मशीन के द्वारा यह पता लगा लेते हैं कि कौन से अण्डों में से बच्चा निकल सकता है, उनको इन्क्यूबेटर में लगा देते हैं और शेष कई दिन के बासी, गले-सड़ों को बाजार में भेज देते हैं। ये अण्डे खराब और गन्दे हो जाते हैं। खाने के बिल्कुल योग्य नहीं रहते। इनमें से बदबू आने लग जाती हैं। इनकी जर्दी और सफेदी दोनों ही काम की नहीं रहती। अधिक लोग इन छटे हुए अण्डों से रोगी हो जाते हैं क्योंकि वे मार्केट में सस्ते मिलते हैं। लोग खाते हैं और मरते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज सर्वत्र अण्डे खाने का प्रचार हो रहा है। सम्भवतः कोई परिवार अथवा परिवार का कोई सदस्य बचा होगा इसके प्रयोग से, कुछ सात्विक प्रवृत्ति के लोगों को छोड़कर अथवा जो आर्य समाजी संस्कार के हैं उनको छोड़ कर। भारत के प्रत्येक प्रदेश की पाठ्य पुस्तकों में अण्डा, मांस, मछली खाने के पाठ हैं और उनमें अण्डे आदि के खाने की पर्याप्त प्रशंसा और विज्ञापन है। इससे हमारी आनेवाली संतान के संस्कार बिगड़ते हैं परन्तु हम इस ओर ध्यान ही नहीं देते। ये पाठ्य पुस्तकें हमारे बच्चों के लिए विष का काम करती हैं। आज कोई जरासा रोगी हुआ, दो तीन दिन के रोग से शरीर में थोड़ी-सी शिथिलता या कमजोरी आई कि डाक्टर तुरन्त उसको अण्डा, मांस, मछली खाने के लिए अपनी अनुमति ही नहीं अपितु जोर के साथ आदेश भी दे देता है। यदि दुर्भाग्य से कोई सात्विक प्रवृत्ति या धार्मिक विचार का स्त्री-पुरुष न खाए तो वह उसको न अच्छा होने की धमकी के साथ-साथ रोग न ठीक होने की बात भी कहता है और अण्डा न खाने से मर जाने तक के लिए गारंटी की बात कह देता है। यह हमारे स्वास्थ्य के दाताओं का हाल है।

वास्तव में देखा जाए तो मुसलमानों और अंग्रेजों ने तो खासकर अन्य भारतीयों की रुचि इस ओर बढ़ाई ही है, इसके साथ यहां के डाक्टरों ने भी अण्डे खाने के लिए लोगों में रुचि पैदा की है और खाने के लिए लालायित भी किया है। जितने भी रोगी आते हैं, सब ही को अण्डा, मांस, मछली खाने के लिए उत्साहित और अधिकारपूर्ण आदेश देते हैं।

विदेशी डाक्टरों, प्रोफेसरों, रिसर्च स्कालरों तथा अनुभवियों की राय है कि अण्डों में थोड़ी प्रोटीन है ये हमें कुछ शक्ति देते हैं परन्तु इससे अधिक सोयाबीन में है, जैसे शाक-सब्जी, लोभिया, मटर, चने, मूंग, उड़द जैसी दालों में और बादाम, काजू, पिस्ता, मूंगफली जैसे मेवों में मौजूद है, इतनी अण्डों में नहीं।

भारतीयों के सम्बन्ध में यह कहना भी संगत है कि उनको अण्डे, मांस, मछली नहीं खाने चाहिए, क्योंकि हमारे वेद-शास्त्रों, उपनिषदों, गीता-रामायण, महाभारत धर्मग्रंथों में ये खाना अधर्म और पाप भी है।

विदेशी डाक्टरों का राय पढ़कर यह अनुमान लगाएं कि वास्तव में अण्डों में विष है। ये अनेक प्रकार के रोगों से भरे पड़े हैं। इनके प्रयोग से हमारा शरीर जीर्ण-शीर्ण ही नहीं अपितु क्षीण होकर हम शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

अंडे में डी० डो० टी० विष

(Eggs Contain D. D. T.)

After eighteen months' research it has been established that 30 pr. of eggs contain D. D. T.) (Poison).

Agricultaral deptt, Florida,
America, Health Bulletin-October 1967.

अठारह महीने के परीक्षण के पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि अण्डों में ३० प्रतिशत डी० डी० टी० (विष) भरा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अण्डों में दिल की बीमारी, हाईब्लड प्रेशर आदि (Eggs cause heart trouble, high blood pressure etc.)

"Even if we had the best of eggs, we would better of without them, as they are too high is cholestrol, one important cause of arteres, heart, brain and Kidney diseases and gall-stones. Fruits and Vegetables and Vegetable Oils have none or hardly any cholestrol.

—Dr. Katherine, Occano, California (U. S. A.)
(How Healthy are eggs-P.7)

यदि बढ़िया अण्डे भी मिलें तो भी उनके बिना ही हम अधिक स्वस्थ रहेंगे क्योंकि उन अण्डों में कौलैस्ट्रौल की मात्रा इतनी अधिक होती है कि जिसके कारण अण्डों से दिल की बीमारी, हाई ब्लड प्रेसर, गुर्दों की बीमारी, पित्त की थैली में पथरी आदि रोग पैदा हो जाते हैं। फलों, सब्जियों और वनस्पति तेलों में कालैस्टरौल बिल्कुल नहीं होता।

अंडों से धमनियों में जख्म

(Eggs cause Corrosion of Blood vessels)

Eggs are also harmful. You may say that "Egg, and I get along well" but a chemical Analysis proves differently. The Yoke of the egg contains cholestrol a waxy alcohol, which deposits in the liver and blood vessels producing corrosion hardening of the arteries.

—Dr. J. Aman Wlikins (England)
(How healthy are eggs-page 6-7)

अण्डे हानिकारक हैं। तुम्हारा यह कहना कि अण्डों से मेरा स्वास्थ्य बनता है, गलत है—क्योंकि रासायनिक परीक्षण तुम्हारी धारणा के विरुद्ध फैसला देता है। वह कहता है कि अण्डे की जर्दी में कालेस्टरोल नामक भयानक तत्व पाया जाता है जो कि एक चिकना अल्कोहल (शराब) है। वह जिगर में आकर जमा हो जाता है और रगों (धमनियों) में जख्म और कड़ापन पैदा करता है।

अंडे से पित्ताशय में पथरी

(Egg cause gall-stones)

An egg contains about 4 grains of cholestrol. When eggs are eaten, the cholestrol content of the blood rises and the tendency towards the developments of gall stones and perhaps other disesaes increase.

—Dr. Robert Gross & Prof. Irving Davidson (England)
(How Healthy are eggs-P-3)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक अण्डे में लगभग ५ ग्रेन कोलेस्टारोल होता है। जब अण्डे [illegible] जाते है तो खून में कोलेस्टारोल की मात्रा बढ़ जाती है जिसके कारण पित्ताशय में पथरी और दूसरी बीमारियां पैदा हो जाती है।

अंडे से ऐग्जीमा और लकवा

The egg-white is more harmful portion of the egg. Animals fed on fresh egg-white developed a severe skin inflamation and paralysis.

—Dr Robert Gross (England)
(How Healthy are eggs P-3-4)

अण्डे की सफ़ेदी अण्डे का सबसे ज्यादा खतरनाक भाग है। जिन जानवरों को अण्डे की सफेदी खिलाई गई उनका चमड़ा सूज गया और उन्हें लकवा मार गया।

(यदि मनुष्य उसको खाते हैं तो उनकी इससे भी अधिक दुर्दशा हो सकती है)

भयानक ऐग्जीमा भी हो जाता है

The factor in the egg-white that causes eczema is AVIDIN.

—Dr. R. J. Wilkins (England)
(H. H. are E. P. 4)

अण्डे की सफेदी में एवीडिन नामक ऐसा तत्त्व होता है जो भयानक ऐग्जीमा का कारण होता है।

अंडे से टी० बी० और पेचिश

(Eggs cause T. B. and white Diarrhoea)

Chicken diseases are very numerous. Eggs may carry tuber-culosis from chickens. If an infected chick servives, it will mature and lay infectuous egg chickens. Leukae—mia may be transmitted through the eggs. Hens, infected with white diarrhoea, will lay eggs containing the germs which usually consist with the collitic symptom complexes in human beings.

—Dr. Robert Gross (England)
(How Healthy are eggs P. I.)

मुर्गी के बच्चों में बहुत सा बीमारियाँ होती हैं। अण्डे उन बीमारियों को विशेषतया टी० बी०, पेचिश आदि के कीटाणुओं को अपने साथ लाते हैं। जो इन अण्डों को खाता है, उनमें ये रोग फ़ैल जाते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्य तेजाबी रोगों से बीमार

(Eggs contain Phospheric Acid)

Eggs are acid forming and they have no excess of Nitrogen fat and phospheric acid, and cannot therefore form the natural diet of man.

Er. Govind Raj
(How Healthy are eggs ? P-8)

अण्डों में नाईट्रोजन, फास्फोरस एसिड और चर्बी की अधिक मात्रा होती है। इस कारण ये शरीर में तेजाबी मादा पैदा करते हैं। और मनुष्य को तेजाबी रोगों से बीमार बना देते हैं।

अण्डे मनुष्य के हाज्मे के प्रतिकूल

(Eggs do not suit human Digestion.)

Both the bile and pancreatic juice are indifferent to egg-white. Nearly 30 to 50% of the egg-white passes through the digestive tract undigested.

Prof Okada (England)
(How Healthy are eggs P. 3.)

पित्त और स्वादुपिंड रस (Panoreatic Juice) अंडे की सफेदी के साथ नहीं मिलते हैं। अंडे की सफेदी का ३० से ५० प्रतिशत भाग भोजन प्रणाली से बिना हज्म हुए ही निकल जाता है। (फिर आप यह समझ सकते हैं कि ऐसे खाने से क्या लाभ, जो न तो हज्म होता है और न उसका तात्विक रस ही बनता है।)

अण्डा खाना बेरहमी के साथ डकैती

(Egg-eating involves cruelty and Robbery)

(Egg-eating involves not only cruelty but it is also a robbery. The egg is unborn chick. Egg-eating is parental poultry Robbery or Chicken foetuscide.

Dr. J. Amon Wilkins
(H. H. E. P. 6)

अण्डा अव्यक्त मुर्गी का बच्चा है। अण्डा एक प्रकार से गर्भ में डकैती डालने के समान हैं या यूं कहिए मुर्गी के बच्चे की हत्या के बराबर है। किसी जीव का बच्चा इस प्रकार डाका डालकर या छीनकर उठा लेना कोई ईमानदारी या मनुष्यता नहीं। जब अण्डा खाने या इकठ्ठा करने वाले, उस गरीब, बेजबान मुर्गी के होने वाले बच्चे को, जिसका अभी उसने मुंह भी नहीं देखा हो उसको इस प्रकार हड़पना या चुराना कहां की सज्जनता और इन्सानियत है ? उस बिचारी के दिल पर क्या गुजरती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होगी ? क्या वह अपने ही मन में कुढ़ती नहीं होगी ? उसकी आत्मा से अण्डे उठाने या खाने वाले के लिए गालियाँ निकलती होंगी। उसकी आहें भी तो निकल कर अण्डे खाने वालों का बुरा कर सकती हैं, जैसा कि हम अभी साधारण जीवन में देखते हैं।

अण्डे खाना क्रूरता और बहुत बड़ी बुराई

(Egg-eating is a merciless and evil act.)

Natural law cannot be changed from time to time. A good act bears good fruit and evil act bears bad fruit. To that order the destruction of life brings an evil effect on the doer or actor. Hence do not eat meat and eggs which cause destruction of life.

Dr. W. J. Jayasureya, Cylone
(H. H. E. P. 5)

प्रकृति का नियम अटल है। इसे कोई भंग नहीं कर सकता। जैसा करोगे वैसा भरोगे। दूसरों को तबाह और नष्ट करके कोई अपना सुख चाहे, यह बिल्कुल असम्भव है, बल्कि (दूसरों को तबाह करने वाले की) तबाही भी निश्चित है। इस कारण अण्डे और माँस मत खाओ। ये दूसरों की जिन्दगी को तबाह करके मिलते हैं। (ऐसे भोजन को खाने से क्या लाभ जो दूसरों को मारकर नष्ट करके प्राप्त होता हो)

अण्डे घृणित तत्वों [माद्दों] से पूर्ण

(Eggs are full of filthy substances.)

The origin and growth of eggs is from filthy substance which man abhors even to touch. Their eating involves cruelty and robbery They are more harmful to human health than anything else. Man can recoup his health and make his palatc tasteful by vegetables, fruits and nuts.

Dr Kamta Prasad, Aliganj (Etah) India,
H. H. E. P. S)

अण्डों की उत्पत्ति और विकास उन पदार्थों के मेल से होता है जो कि बड़े गन्दे और घृणित माद्दे से भरे हैं। इन पदार्थों को छूना भी मनुष्य के लिए घृणित है, खाने की बात तो बहुत दूर की है। मनुष्य के स्वास्थ्य को बिगाड़ने के लिए इनसे और अधिक क्या वस्तु हो सकती है। मनुष्य अपना सुन्दर स्वास्थ्य विभिन्न फलों, मेवों, शाकों से प्राप्त कर सकता है और इन्हीं से जीभ के स्वाद की पूर्ति भी भली भांति हो सकती है।

अण्डों से पेट में सड़ान और बदबू

(Eggs cause putrefaction and bad smell in stomach)

Eggs are deficient in calcium and do not contain carbohydrates. So their tendency is to favour putrefactive decomposition

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

in the intestines rather than to encourage fermantative organism to develop.

Dr. E. V. Mc Callun—A great Medical
Authority, Newer Knowlege of Nutrition P. 17
(H. H. P. 6)

अण्डों में कैलशियम की कमी और कार्बोहाइड्रेटस का अभाव होता है। इस कारण ये बड़ी आंतों में जाकर सड़ान और बदबू पैदा करते हैं।

अण्डे अंतडियों को जहरीला बनाते हैं

(Intensive Egg laying dangerous.)

Eggs are in many people are a potent factor in rendering the mutation forms of bacillus coli communis pathogenic and this is doubtless due to the intensive egg laying to which hens are being subjected.

Dr. J. E. R. Mc Donagh,
F. R. C. S. England.
The Nature & Disease Journal Vol. I I P. 194
(H. H. E. P. 7.)

अण्डे वहुतेरे मनुष्यों की अंतड़ियों में पाए जाने वाले कामनं य कोलाई कीटाणुओं को विषैला (जहरीला) बना देते हैं, जिसके कारण भयानक रोग उत्पन्न हो जाता है। यह निश्चयपूर्वक कहा जाता है कि यह अधिक अण्डे पैदा करने की योजना का दुष्परिणाम है।

अभक्ष्य और घृणित अण्डों को त्यागें और उत्तम प्रोटीन से युक्त दूध, फल, मेवे आदि ग्रहण करें

(Give up all despicable eggs in favour of Nutricious milk, Fruits and vegetables.)

The food value of milk is high, as excellent proteins are available in it. There is little that eggs can supply which milk can not. In the age of science particularly all the minerals and the vitamins can be supplied artificially and these could supplement milk where necessary. I feel confident that a lactovegetarian diet properly constructed is as nourishing as a diet containing meat or egg. Dependance on meat and eggs and vitamins is no longer necessary.

Dr. Anand Nimai Surta.
(H. H. EP. 5-6.)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूध के पौष्टिक तत्त्व बहुत ही ऊँचे दर्जे के होते हैं क्योंकि इसमें बढ़िया किस्म के प्रोटीन्स पाए जाते हैं। डा० किल्जे, (जर्मनी) ने अपनी पुस्तक "फूड एण्ड फूडस" में लिखा है कि दूध एक सम्पूर्ण खुराक (Complete Food) है, ऐसा कोई पौष्टिक तत्त्व नहीं है जो अण्डे में मिल सकता हो और दूध में न मिले। आज के वैज्ञानिक युग में वास्तविक प्रोटीन्स, विटामिन्स और खनिज लवण बनावटी और मिलावटी रूप में मिल सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उनको दूध के साथ प्रयोग में लिया भी जा सकता है, परन्तु केवल सहायक के रूप में। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि संतुलित शाकाहारी भोजन उतना ही पौष्टिक, पोषणकारी और शक्तिवर्धक है कि जितना कि माँस और अण्डे भी नहीं अतः विटामिन और खनिज लवणों के लिए अंडे और मांस पर निभर रहना व्यर्थ है।

अण्डे के सम्बन्ध में उपरोक्त संदर्भ और टिप्पणियों से यह सिद्ध होता है कि वास्तव में अण्डे में अनेक प्रकार के विष भरे पड़े हैं जो मनुष्य के स्वास्थ्य को हानि ही नहीं पहुँचाते बल्कि धीरे-धीरे शरीर में अनेक रोगों को उत्पन्न करके उसका अन्त ही कर देते हैं। फिर ऐसे भयानक और हानिकारक भोजन की आवश्यकता ही क्या है ? हमें ऐसा सात्विक, पौष्टिक और लाभप्रद भोजन ग्रहण करना चाहिए जिससे शरीर को सुख, शान्ति और आनन्द मिले। ●●●

आओ देव !

२ ३   १ २ ३ १ २   ३ २   ३ १ २

अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये।

१   २र   ३ १ १

नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ साम १- ६-६०

आवो देव हमारे हिय में, ज्ञान-ज्योति जगाने को
पाप ताप जो त्रिविध हमारे, उनको दूर भगाने को।
हम जो तेरी स्तुति करते हैं, भक्ति-शक्ति का दे दो दान
दो उपदेश शुभान्तर्यामिन, जिससे हो सबका कल्याण ॥

—घ० दे०

भारत के घर-घर में
वेद पहुंचाओ !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र की उन्नति में सबसे बड़ी रुकावटः

राष्ट्रीय चरित्र का अभाव

—श्री पं० प्रकाश वीर शास्त्री

राजनीति के प्रकांड पंडित आर्य चाणक्य से किसी ने पूछा—"दुनिया की इस हायधुन, भाग-दौड़ और खींचातानी के पीछे क्या रहस्य छिपा है ?" चाणक्य ने दो अक्षरों का उत्तर दिया—"सुख।" पर यह सुख मिलता कैसे है, यह पूछा गया, तो उनका उत्तर था—धर्मपूर्वक जीवन व्यतीत करने से।

प्रश्नोत्तरों का सिलसिला आगे चलता है और यह विचार यों पल्लवित होता है—धर्म के मूल सिद्धान्तों अथवा धार्मिक मान्यताओं की कमर पर जब 'अर्थ' का हाथ आ जाता है, तो वे और भी तेजी से फैलने लगती हैं। और 'अर्थ' की आधार-भित्ति है व्यापार। व्यापार भी उन्हीं देशों का उभरता है, जो स्वाधीन हों; क्योंकि उन्मुक्त हस्त और उन्मुक्त मस्तिष्क से वे अपने व्यापार की दिशा निर्धारित करते हैं।

अब प्रश्नकर्ता ने चाणक्य से आखिरी प्रश्न पूछा—"स्वाधीन राष्ट्रों का स्वराज्य अक्षुण्ण कैसे रहता है ?" तब उनका उत्तर था—"चरित्र-बल से।" भ्रष्ट और स्वार्थी लोगों के हाथ में यदि सत्ता आ जायेगी, तो स्वराज्य सुराज्य न होकर कुराज्य बन जायेगा और शायद छिन भी जाये।

आर्य चाणक्य ने इस समस्त चिंतन को 'चाणक्य-सूत्र' में न्यूनतम शब्दों में इस प्रकार रखा है :

सुखस्य मूलं धर्मः। धर्मस्य मूलं अर्थः।
अर्थस्य मूलं वाणिज्यम्। वाणिज्यस्य मूलं स्वराज्यम्।
स्वराज्यस्य मूलं चारित्र्यम्।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीय संकल्प और राष्ट्रीय चरित्र मुट्ठी-मुट्ठी भर लोगों के देशों को विश्व की प्रमुख शक्ति बनाकर खड़ा कर देता है। द्वितीय महायुद्ध के खंडहरों में दब गये देश जर्मनी और जापान इन्हीं के बूते पर आज दुनिया का नया चमत्कार बन गये। लेकिन जहां राष्ट्रीय चरित्र भाषणों, लेखों और उद्घोषों तक ही सीमित हो गया, ऐसे पन्द्रह करोड़ की आबादी के नौ-नौ अरब राष्ट्र मिलकर भी महज पच्चीस लाख की आबादी वाले छोटे-से इस्रायल को दबा नहीं पाये।

दूर क्यों जायें, अपने ही देश की पराधीनता की पृष्ठभूमि में झांक कर देखें, तो वहाँ भी पग-पग पर इसके चिन्ह दिखाई पड़ेंगे। पौने दो सौ वर्षों का वह इतिहास आपसी घृणा द्वेष और कुत्सित स्वार्थपूर्ति की घटनाओं से भरा पड़ा है, जिन्हें याद करके भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

बंगाल का अकाल

मनुष्य इतना भी नीचे उतर सकता है कि अपना पेट भरने के लिए लाखों निरपराध प्राणियों को एक साथ मौत के मुँह में झोंक देगा, इसकी आसानी से कल्पना नहीं होती। लेकिन १९४३ में बंगाल के अकाल में यही तो हुआ। वह अकाल भगवान की ओर से नहीं, इन्सान की ओर से आया था। अंग्रेजों की शै पर गल्लासेठ अपनी तिजोरियां भरने में लगे हुये थे, जबकि कई लाख आदमी मौत के घाट उतर चुके थे। काल-चंडिका अपना खप्पर लिये घूम रही थी। गोदामों में चावल भरा पड़ा था; पर खुदरा बिक्री की दुकानों पर मक्खियां भिनक रही थीं। कुछ व्यापारी थे, जो एक के सौ बनाने में लगे थे। उनकी हविस की खोपड़ी पता नहीं कितनी और खाली थी।

बेशक जहां चन्द व्यापारी अपने जघन्य व्यवहार से मनुष्यता को कलंकित कर रहे थे, वहीं ऐसे भी व्यक्ति उसी व्यापारी-समाज में थे, जो अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार दुःखियों की सहायता करने में कुछ कसर उठा कर नहीं रख रहे थे। ऐसी एकता उन दिनों देखने में आई, जो बहुत कम अवसरों पर देखने को मिलती है।

जेबें भरने वाले सक्रिय

स्वतन्त्रता के बाद भी कई **राज्यों** में उसी तरह की दैवी विपत्तियां आयीं। देश के दो-तीन प्रमुख राज्य तो आज भी बुरी तरह सूखा और अकाल की लपेट में हैं। इसमें सरकार और कुछ समर्थ व्यक्ति सहयोग भी कर रहे हैं। पर कुछ गंठकटे यहां भी अपनी आदत से बाज नहीं आ रहे। तब और आज में इतना अन्तर तो जरूर हो गया है—उस समय कुछ तिजोरियां भरने वाले सक्रिय थे, अब जेबें भरने वाले सक्रिय हैं। लोकतन्त्र में दायरा कुछ बढ़ गया है।

राजस्थान तो अक्सर हर दूसरे-तीसरे साल सूखा और अकाल के जाल में फंस जाता है। केन्द्र से जो धनराशि पीछे सहायता के लिए वहाँ भेजी गई, वह सुनते हैं, नीचे तक पहुंचते-पहुंचते आधी भी न रही। जिन हाथों से होकर सहायता की राशि निकली, उनमें चिपक-चिपक कर ही वह सूक्ष्म होती चली गई। काल के मुंह में फंसे दुखियारों का कौर हड़पने वाले इस तरह के लोगों को क्या कहा जाये? उनके इस व्यवहार का परिणाम यह हो रहा है कि देश में गैर-सरकारी स्तर पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहयोग करने का जो उत्साह रहता था, वह भी मन्द पड़ गया।

पतन की पराकाष्ठा

चीनी आक्रमण के दिनों में अरुणाचल (नेफा) में हमारे सैनिकों को खाने-पीने का सामान और गर्म कपड़े भेजने का दायित्व उड़ीसा की एक विमान-कम्पनी को भी सौंपा गया। उस कम्पनी में उस राज्य के वरिष्ठ नेता भी भागीदार थे। कम्पनी के विमान-चालकों ने बड़ी मुस्तैदी से यह जिम्मेदारी निभायी। देश में चारों ओर उस कम्पनी की वाह-वाह हुई। परन्तु पता नहीं कैसे, चन्द दिनों बाद उस सामान का कुछ भाग कलकत्ता के बाजारों में बिकता पाया गया।

ऐसी ही कुछ चर्चाएं बांगला देश से आये शरणार्थियों को मिली विदेशी सहायता-सामग्री के सम्बन्ध में भी सुनी गयीं। कहना कठिन है कि वे कहां तक सच थीं। लेकिन यदि उनमें कुछ भी सत्यांश है तो कहां जाकर इस पतन की पराकाष्ठा होगी ?

हमारे चरित्र को क्या हो गया है? मुसीबत के मारे शरणार्थी भी हमारी दया के पात्र नहीं रहे! अस्पतालों के मरीजों के लिए जो दूध या दवा दान में आती है, वह भी कई बार बाजारों में बिकती पकड़ी गई है। मोर्चों पर लड़ने वाले जवान, जो देश के लिए अपना खून दें, उन्हें आटा-दाल-चावल भी हम शुद्ध न दे सकें! इससे बढ़कर राष्ट्रीय चरित्र का पतन और क्या होगा ?

मौत के सौदागर

घी असली नहीं, दूध असली नहीं, मक्खन असली नहीं। पंसारी की दुकान पर जाओ तो हल्दी, जीरा, नमक, धनिया, हींग, मिर्च जो प्रतिदिन के व्यवहार की चीजें हैं, वे भी असली नहीं मिलतीं। कलकत्ता में हवाई अड्डे के पास बसी गरीबों की एक कालोनी में मिलावटी तेल खाने से दो सौ आदमी पक्षाघात के शिकार हो गये। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के खाद्य-दल ने अभी अपने एक प्रतिवेदन में बताया है कि जिन १११ खाद्य पदार्थों की उन्होंने परीक्षा की, उनमें ६८ में मिलावट थी। यह हालत तब है, जब सरकार रोकथाम के लिए कानून भी बना चुकी है।

दिल्ली के पास शाहदरा में नकली इंजेक्शन बनाने वाला एक कारखाना पकड़ा गया, जो दवा की जगह पानी भर कर न जाने कब से बेच रहा था। पाकिस्तानी सीमा से लगते हुए राजस्थान के एक नगर में १९६५ के बाद सेना का आधुनिकतम हवाई अड्डा बन रहा था। उसकी पूरी की पूरी छत उस समय बैठ गई, जब नीचे से उसके सहारे की वल्लियां हटाई गयीं। कुछ मजदूर भी उसमें दब कर मर गये। जांच करने पर पता चला, जो सीमेंट उसमें लगा था, उसमें मिट्टी मिली हुई थी।

अब बताइये, दो-चार की नहीं लाखों की जिंदगी से खिलवाड़ करने वाले इन मौत के व्यापारियों को क्या सजा दी जाये? हजार-पांच सौ का जुर्माना या महीने-दो-महीने की जेल से इनका क्या बिगड़ने वाला है? इनके लिए तो वैसे ही कठोर व्यवस्था करनी होगी, जैसी कठोरता से वे दूसरों की जिंदगी से खिलवाड़ करते हैं।

चाहियें बेदाग नेता

लेकिन अब सवाल तो यह है—राष्ट्र के शरीर पर लगे इस बदनुमा धब्बे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को मिटायेगा कौन ? जिनके हाथ पहले ही उस कीचड़ में सने हैं, वे तो उसे और गन्दा कर देंगे। इसके लिए तो स्वच्छ चरित्र और ईमानदारी के सांचे में ढले राजर्षि टंडन और राजेन्द्र बाबू जैसे बेदाग व्यक्तियों को ऊपर उठाना होगा। शासक का ईमानदार होना ही पर्याप्त नहीं है; उसकी ईमानदारी दूर से झलके यह भी आवश्यक है।

बड़े-बड़े राजनेताओं और समाज के पथ-प्रदर्शकों की गाथाएं जब बन्द कमरों से निकल कर चौराहों पर चर्चा का विषय बन जाती हैं, तो देश का स्वस्थ वातावरण भी दूषित होने लगता है। हो सकता है, उसमें कुछ राजनीतिक द्वेष से प्रेरित हों। पर जो भी हो, देर तक उन पर रहस्य का परदा डाले रखना कहां की समझदारी है ?

ब्रिटेन का उदाहरण

हमारी संसदीय प्रणाली में ब्रिटिश संसद् की अधिकांश परम्पराओं को आदर्श माना गया है। परन्तु मंत्रियों राजनेताओं के आचरण पर आये धब्बों को हटाने में भी हमें उनका आदर्श अपनाना चाहिये। अभी हाल में वहां ऐसी ही एक घटना हो चुकी है।

प्रधानमन्त्री श्री हीथ की मन्त्रिपरिषद् में श्री माड्लिंग गृह-मन्त्री थे। १९ जुलाई, १९७२ को प्रधानमन्त्री श्री हीथ ने हाउस आफ कामन्स में श्री माड्लिंग के इस्तीफे की घोषणा की। इस इस्तीफे के कारणों की शृंखला का आरम्भ ३ जुलाई को हुआ, जब वेकफील्ड (यार्कशायर) में जान पाल्सन नामक एक अंतर्राष्ट्रीय भवन-निर्माण और कई व्यापारिक कम्पनियों से सम्बद्ध व्यक्ति के दिवालियेपन की सार्वजनिक जांच शुरू हुई।

इस जांच में अपना वक्तव्य देते हुए जान पाल्सन ने बताया था कि श्री माड्लिंग मेरी एक सहयोगी कम्पनी के अवैतनिक चेयरमैन हैं और उन्होंने मुझे कहा है कि मैं ईस्ट ग्रीनस्टेड स्थित एडलिन जेनी थियेटर के लिए चन्दे के रूप में लगभग ८,००० पौंड वार्षिक दान देने का एक कागज-पत्र भरकर उन्हें दूं। पाल्सन जानते थे कि माड्लिंग की धर्मपत्नी, जो पहले अभिनेत्री थीं, इस थियेटर के लिए चन्दा इकट्ठा कर रही थीं और श्री माड्लिंग भी इस थियेटर के ट्रस्ट को आर्थिक दृष्टि से मजबूत आधार प्रदान करने में दिलचस्पी रखते थे।

सार्वजनिक जांच में पाल्सन के इस वक्तव्य का समाचार प्रकाशित होते ही लिबरल ग्रुप के नेता श्री जर्मी थार्प ने ब्रिटिश संसद् में प्रस्ताव पेश करके सारे मामले की जांच की मांग की। जांच का काम तो बाद में शुरू हुआ, लेकिन श्री पाल्सन के इस वक्तव्य से ही श्री माड्लिंग ने अनुभव किया कि चूंकि इस मामले में उनका नाम लिया गया है, इसलिए जाँच की अवधि में उन्हें अपने पद पर नहीं बने रहना चाहिये; क्योंकि जांच का दायित्व अन्ततोगत्वा लन्दन की महानगरीय पुलिस पर होगा, और गृहमन्त्री होने के नाते वे स्वयं पुलिस के लिए जिम्मेदार हैं।

इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री और उनके बीच पत्रों का आदान-प्रदान भी हुआ, जिन्हें १९ जुलाई, १९७२ को श्री माड्लिंग के इस्तीफे के साथ ही प्रकाशित कर दिया गया।

इस पत्र-व्यवहार से यह बात भी प्रकट हुई कि प्रधानमन्त्री ने श्री माड्लिंग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को सुझाया था कि वे जांच के दौरान मन्त्रिमण्डल में अन्य किसी पद पर रहें। मगर श्री मार्ड्लिंग की कर्तव्यनिष्ठा ने उन्हें इसकी अनुमति नहीं दी।

विरोधी दल ने उपनेता श्री शार्ट ने हाउस आफ कामन्स में उनके इस्तीफे पर हार्दिक खेद प्रकट करते हुए कहा—"श्री मार्ड्लिंग ने ब्रिटेन में सार्वजनिक सेवा करने वाले लोगों की सर्वोत्तम परम्परा के अनुसार ही यह इस्तीफा दिया है।"

और हमारे यहाँ

सैनिक दस्तावेजों की चोरी तथा सैनिक रहस्यों की जानकारी शत्रु देश को देने की कई घटनायें पीछे प्रकाश में आती रहीं। १९६५ में भारत-पाक-संघर्ष में बाड़मेर से आगे गदरा शहर तक भारतीय सेना का अधिकार हो चुका था। युद्ध की समाप्ति पर एक संसदीय शिष्टमंडल उस क्षेत्र का दौरा करने गया। जनरल रावले तब कच्छ से लेकर राजस्थान तक की सीमा के कोर कमांडर थे। शिष्टमंडल के सदस्य उनसे उनकी आपबीती सुन रहे थे।

बातचीत जब समाप्ति की ओर आने लगी तो जनरल रावले से मैंने पूछा—"यह बताइये, इस युद्ध में सबसे बड़ी कठिनाई आपको क्या और कहां आयी?" प्रश्न सुनकर जनरल कुछ रुके और बोले—"यह तो आपने मेरी दुखती नस पर ही हाथ रख दिया।" मैंने कहा—"आप उत्तर न देना चाहें, तो न दें; क्योंकि सेना के एक वरिष्ठ जनरल के नाते उत्तर न देने में भी आपकी अपनी कुछ मर्यादाएं हैं।"

पर बात कुछ और ही थी, जिसे संसद-सदस्यों के सामने वह कहते हुए हिचक रहे थे। संभलकर कहने लगे—"सबसे बड़ी कठिनाई मेरी यह थी कि कोई रहस्य यहां छिपा नहीं रहता था; इसीलिए दिन का काम भी हमें प्रायः रात को ही करना पड़ता था।"

बाड़ खेत खा रही है

जिलाधीश बाड़मेर भी हमारे साथ थे। उन्होंने बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा—"ये तो कुछ झिझक रहे हैं! आप मेरी आपबीती सुनिए। यहाँ सीमा पर कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो इधर की खबरें उधर भेजने या उधर वालों से मिलकर सांठ-गाँठ और तस्कर-व्यापार करने में अच्छे माहिर हैं। सुरक्षा की दृष्टि से उनके दो सरगना लीडरों को पकड़कर पुलिस ने जेल भेज दिया। बाद में पता चला कि उन दोनों को राज्य के दो प्रतिस्पर्धी मंत्रियों का संरक्षण प्राप्त है। गिरफ्तारी की खबर सुनते ही पहले एक अभियुक्त के समर्थक मन्त्री महोदय यहां आये और उसे जेल से रिहा करवाकर बाजार में अपनी गाड़ी में बैठाकर निकले। बाद में दूसरे मन्त्री जी आये और उन्होंने भी ठीक वही नाटक दोहराया। इसमें अब क्या प्रशासन कर लेता और क्या सेना दखल देती! यहां तो इतना भी जो कुछ हो गया, उसका श्रेय हमारे जवानों की देशभक्ति या देशवासियों के भाग्य को है।"

सुनकर बहुत देर तक हम लोग एक दूसरे को देखते रहे। क्या बनेगा इस देश का? बाड़ ही जब खेत खाने लगेगी, तो रक्षा कौन करेगा? जब लौटकर शास्त्रीजी को यह बात बताई, तो वे भी माथे पर हाथ मार कर रह गये।

इस्रायल में क्या देखा?

अरब-इस्रायल संघर्ष के तत्काल बाद मैं यह जानने के लिए इस्रायल गया कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आखिर इन मुट्ठी-भर लोगों ने कैसे नौ अरब राष्ट्रों का मुंह फेर दिया? उनकी इस सफलता का रहस्य क्या था? वहाँ उनकी सैनिक तैयारियों और आधुनिकतम हथियारों के अतिरिक्त जिस बात ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह थी लोगों की राष्ट्रभक्ति।

मशीन की तरह हर आदमी अपनी जिम्मेदारियां पूरी करने में व्यस्त था। दफ्तरों का समय वहां आठ से शाम के पांच बजे तक हैं। आठ बजे सरकारी कर्मचारी अपनी मेजों पर काम करते मिलेंगे। समय से कुछ पहले ही सब कार्यालय में पहुंच जाते हैं; विलंब से पहुंचने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। काम के लिए जो समय नियत है, उसमें चाय-काफी तो बहुत दूर की बात, जम्हाई लेकर घड़ी की सूई देखते हुए भी कोई नहीं मिलेगा। एक मेज से दूसरी मेज पर फाइल पहुंचाने के लिए चपरासी की जरूरत नहीं, पहला अधिकारी स्वयं दूसरे अधिकारी को फाइल दे आयेगा।

अरबों के साथ हुए उस संघर्ष में रक्षामन्त्री मोशे दायान की पुत्री मोर्चों से संवाद भेजने का काम कर रही थी। बड़े बाप की बेटी घर में बैठकर ताश खेले और गरीबों के बच्चे मोर्चों पर जाकर कटें, यह उन्होंने नहीं सीखा।

केनेडी का जवाब

बांगला देश के मुक्ति-संघर्ष के दौरान पाकिस्तान की पीठ थपथपाने और उसे हथियार देने के लिए सेनेटर केनेडी ने अमरीकी प्रशासन और राष्ट्रपति निक्सन की तीखी आलोचना की थी। फिर सिनेटर केनेडी बांगला देश से आये हुए एक करोड़ शरणार्थियों की दयनीय स्थिति को अपनी आंखों से देखने भारत आये। कलकत्ता में एक प्रेस कान्फरेंस में उनसे ऐसे भी प्रश्न पूछे गये, जिनसे निक्सन-प्रशासन की आलोचना हो। इस पर उन्होंने कहा कि अमरीका के बाहर राष्ट्रपति निक्सन मेरे लिए वैसे ही श्रद्धेय हैं, जैसे कि मेरा राष्ट्र। मुझे उनसे या उनकी सरकार से जो कहना होगा जी भर कर कहूँगा, पर अमरीका पहुँच कर।

मगर हम हैं कि विदेशों में या विदेशियों के सामने अपने राष्ट्र और सरकार की निन्दा करने में गर्व-सा अनुभव करते हैं।

निर्धन देश, अमीरी का दिखावा

ऋणों का भारी बोझ राष्ट्र के कंधों पर आ जाने के बाद भी बाहरी चमक-दमक और फिजूलखर्ची से हमारा पीछा नहीं छूटा, जबकि दूसरे देश अपनी चादर की लम्बाई देखकर ही फैलाते हैं। प्रथम बार राष्ट्रपति बनने के बाद राजेन्द्र बाबू ने सभी देशों के भारत-स्थित राजदूतों को एक बार भोजन पर बुलाया। भोज में तत्कालीन रूसी राजदूत के पास एक भारतीय मन्त्री भी बैठे थे। उन्होंने रूसी राजदूत के कोट के पीछे कमर पर लगी थेगली देखकर कहा—लगता है, जल्दी में आप यह कोट बदलना भूल गये।

रूसी राजनयज्ञ समझ गया कि कोट पर लगी थेगली को देखकर इन्हें तकलीफ हुई है। उसने उत्तर में कहा—मुझे मेरी सरकार निजी व्यय के लिए जो पैसा देती है, उसमें हर दावत के लिए नये कोट बनवाना मेरे लिए कठिन है। यह तो थेगली लगा कोट है, कभी यदि जूट का बना कपड़ा भी पहनकर मुझे आना पड़े, तो भी मैं उसे गौरव की बात समझूंगा। मुझे अपने देश की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर ही व्यय करना होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन भारत-जैसे गरीब देश के राजदूतों के विदेशों में जो ठटा-बाट हैं, उसे देखकर तो लगता है, उन्हें देश की आर्थिक स्थिति का कोई दर्द ही नहीं है।

गरीबी हटा रहे हैं अपनी

भ्रष्टाचार तो अब लगता है, हमारे राष्ट्रीय जीवन का एक अंग ही बनता जा रहा है। दिल्ली महानगर परिषद् में सत्ताधारी दल के ही एक सदस्य ने यह प्रस्ताव सदन में रखा था कि जब हर जगह ही रिश्वत का बोलबाला है और बिना उसका प्रयोग किए कोई फाइल आगे नहीं सरकती, तो उसको वैध मान लेने में क्या हिचक है? अब तक न्यायालय और सेना जरूर इससे बरी थे। मगर अब सुना जाता है, वहां भी निचले स्तरों पर इस बीमारी के कीटाणु पहुँचने लगे हैं।

दफ्तरों में बैठकर रिश्वत लेने वाले लोग प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के 'गरीबी हटाओ' के नारे की अलग ही व्याख्या कर रहे हैं। वे कहते हैं—श्रीमान् जी! आप अपनी गरीबी के साथ-साथ कुछ हमारी गरीबी का भी तो ध्यान रखें। इन्दिराजी तो सबकी ही गरीबी हटाना चाहती हैं। फिर आप हमारे बच्चों का ध्यान क्यों नहीं कर रहे? राजाजी ने इन्हीं सब बातों से खिन्न होकर एक बार लिखा था कि जब कुएं में ही भांग घुली हो, तो कौन बच सकता है!

यही है गौतम, गांधी का देश

देश की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए आजकल निर्यात को बढ़ावा दिया जा रहा है। विदेशी मुद्रा के अर्जन का यह सबसे अच्छा उपाय है। विदेशों के साथ व्यापार का सीधा-सा नियम यह है—माल समय पर पहुँचे, पूरा पहुँचे और उसकी किस्म गिरी हुई न हो। लेकिन हमारे कई निर्यातक माल दिखायेंगे कुछ, और भेजेंगे कुछ; इसे वे व्यापारिक कौशल मानते हैं।

आगरा से रूस को एक करोड़ रुपये के ऐसे जूतों का निर्यात हुआ, जिनमें अन्दर चमड़े के बजाय गत्ता लगा हुआ था। उन्होंने जूतों का वह जहाज ही उलटा वापस कर दिया और फिर दूसरे देशों को वह आर्डर दिया। कई और घटनाएं भी इस तरह की हुईं, जिनका भारत के निर्यात-व्यापार पर बड़ा प्रतिकूल प्रभाव हुआ।

इधर विदेशी पर्यटकों के साथ कुछ ऐसी हल्की घटनायें देश के कई बडे नगरों में हुई हैं, जिन्हें सुनकर मारे शर्म के गर्दन झुक जाती है। जब कोई उन पर्यटकों को ठगता है अथवा उनका बटुआ छीनकर भाग जाता है, तो वे अपने देश में जाकर क्या कहते होंगे? यही गौतम और गाँधी का देश है? दिल्ली में तो एक टैक्सी वाले ने विदेशी महिला का धन और इज्जत दोनों पहले लूटी और बाद में गला घोटकर उसे मार भी दिया। भले ही ऐसा करने वाले दो-चार रहे हों, मगर उनकी हरकतों से समारा देश दुनिया में कितना बदनाम होता है, इसे हम यहां बैठकर शायद उतना न समझ सकें, जितना दूसरे-दूसरे देशों में अपना यह चित्र देखकर ग्लानि होती है।

चारित्र्यं परमं धनम्

यह एक बहु उद्धृत उक्ति है, जो बहुत ही सत्य भा है—यदि मनुष्य सम्पत्ति खो बैठे तो समझो कुछ नहीं गया, वह तो हाथ का मैल है और फिर आ जायेगी। और यदि स्वास्थ्य बिगड़ जाये तो समझो कुछ गया, उसका संभालना कठिन रहता है। लेकिन चरित्र यदि चला गया, तब तो सब कुछ ही मनुष्य ने खो दिया।

व्यक्ति हो चाहे राष्ट्र, अपना चरित्र खोकर वह कहीं का नहीं रहता। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—राजेन्द्र प्रसाद सिंह

आदर्श विवाहों की ओर हम कैसे बढ़ें ?

विवाह मानव जीवन का एक धार्मिक आयोजन है। यह एक प्रकार से दो प्राणियों का भावनापूर्ण आध्यात्मिक विलयन है, इस विशुद्ध धर्मानुष्ठान एवं पुनीत यज्ञ के अवसर पर एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता होती है जो सब प्रकार से उपयुक्त हो। इसके लिए विवाह सम्बन्धी समस्त अनुचित कुरीतियों को त्यागा जाना चाहिए।

पर आज दुर्भाग्यवश विवाहोत्सव इतने खर्चीले एवं भारी हो गये हैं कि उनके आयोजनकर्त्ताओं को आनन्द तो क्या आयेगा उल्टे वे विपत्ति में फंस जाते हैं। दहेज से लेकर गंदे गीतों का गाया जाना, अशिष्ट मखौल होना, मांसाहार, नशेबाजी, शराबखोरी, वैश्यानृत्य एवं अश्लील मनोरंजन जैसे अनेकों प्रथायें ऐसी है जिन्हें अनुपयुक्त एवं अवांछनीय ही कहा जायेगा। जिनसे व्यक्ति की परेशानी बढ़े एवं समाज का अहित हो ऐसी कुरीतियों का परित्याग करना ही उचित है। बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार जो लोग आवश्यक सुधार कर लेते हैं वे बुद्धिमान कहे जाते हैं।

समाज की अभिनव रचना के लिए हमें कितनी ही प्रचलित मान्यताओं में उलटफेर करना होगा। लोग उपहास करेंगे, नाराज होंगे, रोड़े अटकायेंगे सो तो होना ही है। उलटफेर का समय सदा कठिनाइयों से भरा होता है। हर ग्राम आज कुरीतियों का गढ़ बन गया है. पंच चौधरियों की तूती बोलती है, वे अपनी मान्यताओं को ही सही मान बैठे हैं, रूढ़ियों को प्रचलित रखने का ठेका उन्होंने ले रखा है। अतः हमें पग-पग पर प्रत्येक कठिनाइयों को सहने के लिए तैयार रहना होगा।

हमारे समाज में यद्यपि समझदार एवं सुधारवादी व्यक्तियों की कमी ही है। शिक्षित लोग प्रचलित रूढ़िवादी परम्पराओं, अन्धविश्वासों की आलोचना भी खूब करते हैं पर यदि लोगों के अपने ऊपर कोई व्यावहारिक सुझाव आ जाता है तो उन लोगों के सारे सिद्धान्त एवं आदर्शवादिता एक तरफ रक्खे रह जाते हैं। कुछ तो स्वयं ही मान प्रतिष्ठा, कुछ समाज की कुटिलता का भय सब मिलाकर प्रतिष्ठित एवं ऊंचे तबके के लोग भी परम्परा सुधार के नाम पर चिढ़ जाते हैं।

आदर्श विवाह वही कहा जा सकता है जिसमें धर्म संस्कार के लिए जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपयोगी है वही विधान कार्य में लाए जावें, बाकी को कूड़े कचड़े की तरह बुहार कर फेंक देवें। इस तरह से उल्लास एवं सुविधा के वातावरण में धर्म कृत्य भी पूरा होगा साथ ही किसी को किसी भी प्रकार का अनुचित भार भी नहीं पड़ेगा। आदर्श विवाह वह है जिसमें कन्या या वर यह मानकर चलते हैं कि अपना एक परिवार अब दूना हो गया। दो कुटुम्बों के बीच स्नेह, सौहार्द, आत्मीयता एवं एकता का यह प्रतीक है। यदि दोनों पक्ष एक दूसरे से खिंचे-खिंचे ही बने रहें तो समझना होगा कि विवाह अपूर्ण रह गया और यह सब तभी होगा जब कि दोनों पक्ष एक दूसरे की कठिनाइयों को विधिवत् ध्यान रक्खें।

आइये हम परम्पराओं के नाम पर जिस जंजाल में फंस गये हैं उनसे छुटकारा पाने का प्रयत्न करें। प्रत्येक विचारशील, दूरदर्शी एवं देशभक्त का यह कर्त्तव्य है कि वह साहसपूर्वक आगे बढ़कर लोगों के मस्तिष्क में फैले हुए मकड़ी के जाले रूपी भ्रम की सफाई करने का प्रयास करें। विवाहों में होने वाला किसी भी प्रकार का अपव्यय एक प्रकार का आर्थिक उन्माद है, यह छूत के रोग की तरह प्रत्येक परिवार को ग्रसित किए बैठी है। क्या हम इस मूढ़ता को दूर करके जनजीवन को सत्यानाश से बचा नहीं सकते ? आज इससे हर व्यक्ति दुःखी है, इसकी व्यर्थता एवं हानियों को प्रत्येक वर्ग समझ रहा है, पर मनोबल एवं विवेक के अभाव में कोई कुछ भी नहीं कर पा रहा है, यह आत्म हनन है। यदि हम सब मिलकर भी कुछ नहीं कर सके तो हमसे बड़ा हीन और कायर और कौन होगा ?

आइए हम सब विवाह सम्बन्धी प्रत्येक कुरीतियों पर ध्यान रखते हुए उनको दूर करने का प्रयास करें एवं विवाह कृत्य को आदर्शता का रूप दे सकें।

(१) **बाल-विवाह**—आदर्श विवाहों के लिए यह सोचना परमावश्यक है कि कन्या एवं वर गृहस्थ आश्रम का उत्तरदायित्व संभालने योग्य हो गये हैं अथवा नहीं। अतः कन्या की उम्र १८ एवं वर का २४ या ऊपर हो तो अति उत्तम होगा किसी भी सूरत में कन्या की १६ व वर का २५ वर्ष से कम उम्र में विवाह नहीं होना चाहिये।

(२) **अनमेल विवाह**—कहीं-कहीं पर दस-दस, बारह-बारह वर्ष के बच्चियों की शादी चालिस-चालिस, पचास-पचास वर्ष के बूढ़ों के साथ कर दी जाती है यह शादी नहीं बल्कि गमी है। ऐसा भी देखा जाता है कि पैसे के बल पर अयोग्य एवं अशिक्षित लड़के-लड़कियों की शादियाँ भी योग्यतम व सुशिक्षित लड़के-लड़कियों के साथ हो जाते हैं। हम सबका परम कर्त्तव्य है कि इस प्रकार की अनमेल शादियों को किसी भी सूरत में सफल न होने देवें। विवाह बच्चों एवं बच्चियों के अभिरुचि एवं आकांक्षा को देखते हुए होने चाहिएं। यदि वर व कन्या से प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से सहमति ले ली जावे तो अति उत्तम होगा।

(३) **विधुर व विधवा विवाह**—विधुर व्यक्तियों के विवाह विधवाओं के साथ ही किए जाने चाहिएं, किसी भी दशा में उनका विवाह कुंवारी कन्याओं के साथ नहीं होना चाहिए। न्याय के तुला पर नर व नारी का दर्जा समान है अतः जो नियम नारी पर लागू हो वही नर पर भी होना चाहिए।

(४) **रूप रंग नहीं, गुण**—लड़के एवं लड़कियों की परख गुण, कर्म, स्वभाव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के आधार पर ही होना चाहिए। यदि गुण को विवाह का आधार माना जाएगा तो गुण बढ़ेंगे, यदि रूप रंग को प्राथमिकता दी गई तो फैशनपरस्ती, खर्चीली आदत एवं अनैतिकता की बाढ़ होगी।

(५) **वर कन्या की भाग्य कुण्डली**—लड़के एवं लड़कियों का चुनाव, जन्म कुण्डलियों के आधार पर नहीं बल्कि बुद्धि, बल, विवेक एवं गुण कर्म स्वभाव के आधार पर होना चाहिए।

(६) **जाति पाँति के दायरे**—जाति पांति के दायरे हल्के किए जाने चाहिएं। यदि सभी बिरादरी वाले, सबमें शादी न करें तो कम से कम इतना तो होना ही चाहिए कि एक वर्ण के अंगर्तत, जितनी उपजातियाँ हैं वे तो अपने अनावश्यक भेद भाव को मिटा कर परस्पर विवाह शादियां करें।

(७) **सगाई पक्की**—यह रस्म इस बात का प्रतीक होता है कि अब हम दोनों एक दूसरे के सम्बन्धित बन गए। इसमें यज्ञोपरांत लड़की का पिता वर के हाथ में पुष्प अक्षत व कुछ रुपये रखते हुए तिलक लगाते हैं तथा मुख मीठा करते हैं।

पर आजकल यह रस्म इस तेजी के साथ बढ़ता जा रहा है कि लड़की के पिता अपने साथ दस-दस, बीस-बीस की संख्या में सम्बन्धियों को लेकर जाते हैं साथ ही काफी मिठाई फल वगैरह जाता है और विवाह में तय की हुई रकम का करीब एक-चौथाई राशि अदा कर देनी चाहिए अदा कर देना होता है। यह रकम एक रुपये से बढ़कर आज हजारों तक पहुँच गया है। कहीं-कहीं पर तो कन्या का छेकने का रस्म है।

(८) **शुभ मुहुर्त**—प्रत्येक वैवाहिक कार्य के लिए अधिक उपयुक्त होगा कि ऐसा दिन ढूंढ़ा जाए जो दोनों पक्ष के लिए सब दृष्टिकोण से सुविधाजनक होवें। शुभ व अशुभ के चक्कर में पड़ कर व्यर्थ समय खोने से कोई फायदा नहीं।

(९) **दहेज, तिलक व आभूषण**—ये ही तीन रस्म ऐसे हैं जो प्रत्येक को खर्चीली शादियाँ रचाने लिए के बाध्य करते हैं। इसमें सबसे भयानक कुरीति दहेज है। लड़के वालों की मांग की गई रकम की पूर्ति होनी ही चाहिए, चाहे लड़की का पिता कर्ज लेकर दे या घर बेचकर। इसके लिए अभिभावकों को जीवन भर अपनी सारी आवश्यकताओं में कटौती करके रकम जुटानी पड़ती है, कितनों को चोरी, बेइमानी, घूसखोरी जैसे दुष्कर्म भी करने पड़ जाते है क्योंकि वह अपनी कन्या को अविवाहित तो रख नहीं सकता, उसे अपने घर से विदा करने के लिए दहेज जुटाना ही होगा चाहे जो भी उपाय क्यों न करना पड़े।

अतः दहेज को मिटाना ही होगा। यह न मिटा तो समाज एवं राष्ट्र की दिन पर दिन बर्बादी होती चली जाएगी।

तिलक के रस्म की पुरानी विचारधारा इसलिए बनी हुई है कि लड़की का पिता यह तो चाहता है कि उसे ब्याह में कुछ न देना पड़े, पर उसकी लड़की यह कभी नहीं चाहती कि उसे वर की ओर से आभूषण न आवे। यह दो विचारधारा एक साथ नहीं चल सकतीं, इस प्रकार से यदि लड़के का पिता तिलक की माँग न करेगा तो वह कन्या के लिए आभूषण की पूर्ति कहाँ से करेगा? अतः दोनों पक्षों को इस पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचार करना होगा "न लड़के वाला तिलक माँगे न लड़की पक्ष आभूषण।" इन आभूषणों में अब क्या रक्खा है ? आज बनते हैं कल टूटने की नौबत आ जाती है यदि घर में बचा भी रह गया तो चोर व डाकुओं का भय बना रहता है।

फिर इस गलित प्रथा को क्यों महत्व दिया जाए ? अब समय आ गया है कि पढ़ी लिखी बहनों को खुद आभूषण का डट कर बहिष्कार करना चाहिए तभी हम कह सकते हैं कि न हम दहेज देंगे न आभूषण की माँग करेंगे। प्रत्येक मांगलिक अवसर पर एक रुपया लिया जाए। साथ ही यह किसी भी दशा में उचित नहीं है कि शादी से पूर्व ही वर पक्ष अपने घर पर हजारों की संख्या में सम्बन्धियों एवं इष्ट-मित्रों को बुलाकर तिलक नाम पर भोज देवे।

(१०) **बारात, बाजे, सजावट एवं आतिशबाजी**—विवाह में वर पक्ष के लोग बारात की संख्या कम से कम ले जावें। केवल अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं निजी परिवार के व्यक्तियों को ही बारात में जाना चाहिए। इस महँगाई के समय भी एक-एक हजार तक की बारात अभी भी देखने को मिलती है। ऐसी अवस्था में कन्या पक्ष क्या व्यवस्था कर पाएगा ? परिणामतः उसे भी व्यवस्था के लिए ज्यादे से ज्यादे सहयोगियों को आमंत्रित करना पड़ता है और सारी पूंजी इस बेमतलब के भीड़-भाड़ के स्वागतभाव में ही उड़ जाती है। अतः समय को देखते हुए किसी भी दशा में ५० से अधिक बारात न जाने दीजिए, यदि २५, ३० की संख्या तक ही हो सके तो अति उत्तम होगा।

साथ ही कन्या पक्ष के रिश्तेदारों एवं विशेष घनिष्ठ मित्र एवं सम्बन्धियों को छोड़कर अन्य स्थानीय सहयोगियों को सब प्रकार की सहायता तो करनी चाहिए पर प्रीति-भोज में सम्मिलित नहीं होना चाहिए। इस प्रकार कन्या पक्ष के प्रति भारी सहयोग ही नहीं होगा बल्कि अनुचित परिपाटी भी खत्म हो जाएगी।

आज के भौतिक वातावरण में बारातों में कई किस्म के बाजे ले जाना भी सम्मान का प्रश्न माना जा रहा है। यह एक अवांछनीय कार्य है प्रत्येक दशा में रोका जाना चाहिए। बहुत ही कम आवश्यक संख्या में ही बाजे वालों को रक्खे जाना चाहिए। यदि बारात लगाने के लिए ही क्षणिक मात्रा के लिए व्यवस्था हो जाए, एवं जलपान कराकर ही विदा कर दिया जावे तो अति उत्तम होगा जैसा कि शहरों में कहीं-कहीं पर देखने को मिलता है, ग्रामीण क्षेत्रों में बाजों का स्थायी व्यवस्था होती है और इनकी संख्या भी कहीं-कहीं पच्चीसों में पहुँच जाती है, इनकी गिनती भी बारातों में ही होगी। अतः कम से कम बारात की संख्या रखकर एक आदर्श परम्परा कायम रखनी चाहिए।

बारात पक्ष की ओर से छूटती आतिशबाजियों, सजी सजाई मोटरें, कन्या पक्ष के बत्तियों की सजावट से एक अजीब सा माहौल उपस्थित हो जाता है। ये सभी बाह्य आडम्बर व्यक्ति को तबाह करने के अलावा कुछ भी नहीं दे पाते। क्षणिक उन्माद में व्यक्ति हजारों रुपये इन बत्तियों के सजावट में फूंक देते हैं, देखादेखी एक गरीब परिवार भी नकल की होड़ में जीवन भर के लिए कर्जदार बन जाता है। ऐसा कृत्य जो औरों के लिए ईर्ष्या-द्वेष का कारण बने, सर्वथा अनुचित एवं अनुपयुक्त है, इसे हम सबों को मिलकर, सुधारवादी बनकर, खत्म कर देना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(११) **विवाह कृत्य**—यह एक धर्मानुष्ठान है। यह अधिक से अधिक सात्विकता, प्रेम, पवित्रता, स्नेह, सौजन्य एवं सद्भावना के द्वारा सम्पन्न हो इस बात का प्रयत्न किया जाना चाहिए। विवाह पद्धति में स्थान-स्थान पर अनेक रस्म-रिवाज प्रचलित हैं, जो आवश्यकीय एवं अनुकरणीय हो उसे रखकर शेष पोंगापंथी बातों को, जहां अपनी बुद्धि चक्कर खाने लगती है छोड़ देना चाहिए।

आज आवश्यकता है कि देश भर में विवाह की एक पद्धति अपनायी जावे, अपनी-अपनी ढपली, अलग-अलग राग अलापने से कोई फायदा न होगा। वर के आगमन में माल्यार्पण, कन्यादान, प्रतिज्ञा, सप्तपदी इत्यादि मुख्य रस्म जिसमें गृहस्थ धर्म सम्बन्धी शिक्षाप्रद बातें भरी पड़ीं हैं अवश्य होनी चाहिए। पुरोहित द्वारा संस्कारों की विधिवत् व्याख्या भी होनी चाहिए। प्रत्येक वैवाहिक कृत्य में पवित्रता कायम रखने हेतु किसी भी प्रकार की नशेबाजी निषिद्ध रहना चाहिए।

(१२) **भोज्य पदार्थों में सादगी**—दावतों में खाद्य पदार्थों की किस्में अधिक बढ़ा देने से कुछ लाभ नहीं होता। फिर आज के खाद्य संकट एवं चीनी कीक मी को ध्यान में रखते हुए इतना ध्यान रक्खा जाए कि सब्जी, चटनी वगैरह कम से कम किस्म का बने एवं सादगी से बने। मिठाईयों की दो ही किस्म रक्खी जावें। कितने लोग पूरे खाद्य पदार्थ को खा तो पाते नहीं पत्तल पर ही छोड़ देते हैं। लोगों से अनुरोध किया जाए कि वे ही वस्तुएं लेवें जो खा सकें, मेहतरों के ऊपर जूठन छोड़-कर उदारता प्रस्तुत न करें। मेहतरों को भी कम ही दिया जाए पर स्वच्छ एवं पवित्र भोजन दिए जावे, भोजन के किस्मों में जितनी ही सादगी एवं कमी होगी उतना ही अच्छा होगा क्योंकि ज्योंनारों में खिलाए जाने वाले पदार्थ स्वास्थ्यप्रद तो होते नहीं कितने ही लोग आवश्यकता से अधिक लालचवश भोजन कर लेते हैं एवं स्वास्थ्य खो बैठते हैं।

कहीं-कहीं मांसाहार की भी परिपाटी प्रचलित है। विवाह ठीक होने के समय ही माँस खिलाने की बात भी तय कर ली जाती है। ऐसे शुभ अवसर पर मांसाहार करना, इसके लिए निर्दोष प्राणियों की हत्या करना एक प्रकार से वर व वधू पर अभिशापों की वर्षा करना है। विवाह दान एवं पुण्य का अवसर होता है, इस समय निरीह प्राणियों की मर्मान्तक पीड़ा का परिणाम कभी शुभ नहीं हो सकता अतः इस धर्मकृत्य के अवसर पर तो कम से कम संयम रखकर इसे अपवित्र नहीं होने देना चाहिए।

बारातों में आजकल विशेषतः ग्रामों में बीड़ी-सिगरेट की धम मची रहती है। यज्ञ हवन तो पुरोहित लोग नाम मात्र का करते हैं पर नशा-यज्ञ अखण्ड रूप से होता है। जिसे देखिए वही मुफ्त की बीड़ी-सिगरेट सुलगाए चला जा रहा है। जो भाई पीने के आदी नहीं वे भी दो मिनट पात्र मुंह से धुंआ निकालते रहने में अपने को सम्मान का प्रश्न समझ बैठते हैं, यही तक नहीं मिष्ठान्न व पकवान अधिक खाने के लिए कितने ही भाँग, गाँजे, शराब पी-पी कर धूर्त बने रहते हैं और अपशब्द बोलते हुए उन्मादियों की भाँति अस्त-व्यस्त घमकर अपनी क्षुद्रता का परिचय देते हैं। कुछ ही धर्मानुष्ठान के इस पवित्र अवसर पर इन सभी बातों पर ध्यान रखना चाहिए यदि वैवाहिक अवसर पर प्रत्येक प्रकार के नशों पर रोक लगा दी जावे तो अति उत्तम होगा।

●●●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१३) **गंदे गीतों का प्रचलन**—नारी का शील एवं सम्मान उसकी पवित्र धरोहर है, लज्जा ही उसका प्राण है, पर यह समझ नहीं आता कि इस मांगलिक अवसर पर, वह किस निर्लजता के साथ अश्लील, कामुकता एवं व्यभिचार भरे गीतों को गाया करती हैं। इससे गाने वाली नारियों पर पुरुष वर्ग की पाप वृत्ति देखने एवं सोचने बिना नहीं रह सकती। क्या इस विषय को वे नहीं सोचतीं कि छोटे बच्चों पर इसका कितना बुरा असर पड़ता है। इन गंदे गीतों पर तुरन्त रोक लगा देनी चाहिए, इसकी जगह पर सद्बुद्धि एवं सद्भावोत्पादक भजनों का प्रचलन होना चाहिये।

(१४) **वैश्या गायन**—विवाहों में वैश्या गायन का रिवाज अभी भी बहुतायत बना हुआ है। बारातों में कई-कई रंडियाँ आती हैं और कामुकता को प्रोत्साहन देने वाली महफिलें लगी रहती हैं, जिसमें बच्चों से बूढ़े तक खीसें नीपोरते हैं। वासना की आग भड़काने वाला यह आयोजन समाज के लिये बहुत ही घातक सिद्ध हुआ है। अब तो बारात लगते समय भी बैंड बाजों के साथ ऐसे नृत्यों का प्रचलन बढ़ रहा है जो भी हो, हमें अपने विवेक से खुद सोचकर व्यभिचार एवं कुचेष्टा को प्रोत्साहन देने वाले इस महँगे मनोरंजन को प्रत्येक दशा में बंद कर देना चाहिए। इन्हीं महफिलों से हमारे किशोर बच्चे अनैतिक शिक्षा ग्रहण कर, मर्यादाओं का उल्लंघन करने लग जाते हैं। अतः यह हर तरह से त्याज्य है। ऐसा आयोजन न हम खुद करें न औरों को करने का प्रोत्साहन देवें। बल्कि ऐसी बारातों का बहिष्कार किया जावे।

(१५) **बारात बढ़हार**—अभी भी कितने ही स्थानों पर कई-कई दिन तक बारातों के ठहरने का नियम है। समय की बरबादी एवं अनावश्यक खर्च को देखते हुए यह उचित है कि बारात कम से कम समय तक ही रहें। शहरों में कहीं-कहीं देखने में आता है कि अधिकांश बाराती सिर्फ वर के सम्बन्धियों को छोड़कर जलपान करके ही लौट जाते हैं, यह परिपाटी अच्छी समझी जाती है पर ग्रामीण क्षेत्र में नजदीक की बारात एक रात, यदि काफी दूर की हो तो दो रात टिकाई जा सकती है पर दूर की बारात में किसी भी दशा में बारात की संख्या ३०, ४० से ज्यादा की न हो।

(१६) **खिचड़ी**—यह एक मुख्य रस्म है। स्थान-स्थान पर इसके विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। कहीं पर वर कुछ छोटे बच्चों के साथ खाने बैठता है शेष बाराती अलग रहते हैं, कहीं पर रस्म दोपहर के भोजन के समय सभी बारातियों के साथ अदा होती है। इस समय कन्या का पिता वर के लिए भरपूर उपहार प्रस्तुत करता है, जिनमें अधिकांश वस्तुएँ विवाह पक्का होते समय ही तै कर ली जाती हैं। अंगूठी, घड़ी, सायकिल, रेडियो, पंखा, फर्नीचर, बड़े-बड़े बर्तन, स्वर्णभूषण, मोटर सायकिल इतना ही नहीं कहीं-कहीं मकान तक दे देने का वादा लड़की का पिता करता है। जब तक वर के मन माफिक सभी सामानों का उसके सामने प्रदर्शन नहीं हो पाता तब तक वह खाद्य पदार्थों में हाथ नहीं लगाता।

इन प्रदर्शनों की होड़ का समाज के ऊपर बहुत बुरा असर पड़ता है। प्रत्येक कुंवारा युवक सोचता है कि अपनी शादी में मैं यह लूंगा, वह लूंगा, इस होड़ में कन्या का पिता सब कुछ लुटा कर भी अपने दामाद को संतुष्ट नहीं कर पाता। इस प्रदर्शन का अंत होना ही चाहिये। यहां वर को उपहार स्वरूप एक अंगूठी ही प्राप्त होनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिये। यदि हो सके तो कुछ उत्तम सद्ग्रन्थ अवश्य इस अवसर पर भेंट दिये जावें। यदि कन्या का पिता कुछ सामान देना ही चाहे तो इस प्रकार बारात की विदाई के समय चुपचाप बाँधकर दे देवें जिससे किसी को भी कुछ पता न चल सके। प्रदर्शन ही सब बुराइयों की जड़ है। अतः प्रत्येक प्रकार के प्रदर्शन को त्याग देना होगा। जो भी सामान दिये जावे इतना तो ध्यान रहना ही कि चाहिए वर के घर में इसका सदुपयोग हो पावेगा अथवा नहीं, एक गरीब घराने के उच्चशिक्षित युवक को बहुत सारे सोफा सेट वगैरह मिल जाने पर उसके लिये एक परेशानी खड़ी हो जाती है कि आखिर इन वस्तुओं को वह कहाँ रक्खे कि वह सुरक्षित रह सकें।

इस प्रकार से वर पक्ष की ओर से भी कन्या को एक अंगूठी ही आभूषण के रूप में दी जावे। यदि देना ही है तो वह तो उसके घर बहू बन कर जा ही रही है, उसके मन माफिक जीवन भर दे सकता है। याद रक्खें, जिस दिन यह प्रदर्शन रुक जायेगा, दहेज का एक बहुत बड़ा मसला हल हो जायगा। हाँ इन सबके प्रचलन में परेशानियाँ तो होंगी ही, गाँव, घर पड़ोस की बड़ बुढ़िया नाक भौं तो सिकोड़ेंगी ही कि कुछ नहीं दिया। बारात वाले भी कहेंगें कुछ नहीं मिला, सामाजिक कार्य के सहयोगियों को इन क्षणिक बातों की तनिक भी परवाह नहीं करनी चाहिए।

(१७) **नेग चुकाना**—यह एक बड़ा अजीब रिवाज है। कन्या पक्ष केकर्मचारी नाई, धोबी, कुम्हार, चमारिन, मुहरिन, मनिहारिन पंडिताइन, बढई, एवं अन्य गृह कर्मचारियों को वर पक्ष की ओर से वस्त्र एवं रुपया दिया जाता है, इसी प्रकार से वर पक्ष के भी जो सेवक, कर्मचारी उपस्थित रहते हैं, उन्हें कन्या पक्ष की ओर से कुछ दिया जाता है। सोचिये यह कितनी अनुपयुक्त बात है, काम करे किसी और का पारिश्रमिक दे कोई और। इसमे अब होड़ भी चलने लगी है। कन्या एवं वर दोनों पक्ष खूब बढ़ा चढ़ा कर सेवकों को उपस्थित करते हैं और नेग चुकवाते हैं। इसको अनुचित मान कर बंद करवा देना चाहिये। न कन्या पक्ष वर पक्ष की ओर के सेवकों को न वर पक्ष कन्या पक्ष के सेवकों को कुछ दे। अपने-अपने कर्मचारियों को स्वयं संतुष्ट करना चाहिये। इस नेग प्रथा का ही परिणाम है कि आज हजारों रुपये व्यर्थ के आदान-प्रदान में ही चले जाते हैं। जो कार्यकर्त्ता अत्यधिक परिश्रम करते हैं, उनको समुचित पारिश्रमिक भी नहीं मिल पाता और कुछ तो मुफ्त के वस्त्र एवं रुपये पा जाते हैं, पंडित लोग हर पूजन के हर कार्य पर नेग के लिये लड़ पड़ते हैं, यह कितना भद्दा लगता है। यदि कोई बूढ़ा पंच चौधरी बारात में न हो तो, किसी को पता ही न चले कि किसे किस समय कितना नेग चुकाना चाहिये।

अतः यही उचित होगा कि दोनों पक्ष अपने-अपने तरफ के नेग बाद में उचित समझ कर अदा करते रहें। इसमें वैवाहिक कार्य में कोई इस प्रकार का भौंड़ा प्रदर्शन न होगा और एक फायदा यह भी होगा कि बेमतलब के सेवकों की बाढ़ भी रुक जाएगी।

(१८)**सत्यकार्यों के लिए दान**—प्रत्येक प्रकार की कुरीतियों में होने वाले अंधाधुंध अपव्यय से हजारों रुपये बचाये जायँ, साथ ही उनमें से कुछ राशि सार्वजनिक कार्य के लिये इस खुशी के अवसर पर अवश्य दिये जायें जैसे गुरुकुलों, आर्य समाज मंदिरों, विद्यालयों, ग्राम—पंचायतों एवं अन्य सुधारक संस्थाओं को इत्यादि। यहां आप अपनी उदारता एवं अमीरी का प्रदर्शन कर सकते हैं जो आप के लिये अमरता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रदान करेगा।

(१९) **सामूहिक विवाह पद्धति**—आज समय की माँग है कि विवाह शादियां में होने वाले प्रत्येक फिजूल खर्चियों को रोकते हुये कम से कम खर्च में सादगी के साथ एक ही मंडप में यदि सम्भव हो तो, एक साथ अनेक शादियाँ रचाई जावें। इससे सम्मिलित खर्च में प्रत्येक कार्य सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न हो जावेगा।

(२०) **द्विरागमन (गौने) की प्रथा**—यह शहरों की अपेक्षाकृत ग्रामीण क्षेत्र में ज्यादा प्रचलित है। लड़की का पिता विवाह शादियों में हुये अंधाधुंध अपव्यय से अपने आप को संभाल भी नहीं पाया कि दूसरा बोझ सर पर सवार हो जाता है। यह किसी विवाह रस्म से कम खर्चीला थोड़े ही होता है। वर पक्ष की ओर से सौ, सौ, दो-दो सौ की बारात पुनः बड़े धूम-धाम से चलेगी एवं कन्या के पिता का बाकी बचा खुचा खून चूस कर वापस लौट आवेगी। कन्या का पिता अपनी बेटी के लिये जीवन-उपयोगी सभी आवश्यक सामान बाँध कर देगा, मानों वर के पास न सोने के लिये खाट है, न पहनने के लिये धोती, न ओढ़ने के लिये बिस्तर, न खाने के लिये बर्तन इत्यादि। हद हो गई है आज का युवक समुदाय भी आँख मूँद कर इन्हीं मूढ़ताओं का समर्थन करता है, आखिर क्यों न करे ? फिर से उसे एक बार जो दूल्हा बनकर ससुराल जाने को मिल जाता है।

जरा हृदय पर हाथ धरकर सोचें, अब तो बाल विवाह कम होते जा रहे हैं, पढ़े लिखे जवान युवक एवं युवतियों की शादियाँ रचाई जा रही हैं। फिर क्या आवश्यकता है कि विवाह के बाद कन्या को उसके घर पर छोड़ दिया जाय। यह कौन सी मूर्खता है कि विवाह के बाद भी कन्या अपने पिता पर सिर दर्द बनी रहे। (बहने क्षमा करेंगीं, आज इस दहेज प्रथा ने कन्या का जन्म ही पिता के लिये सिर दर्द बना दिया है)। अतः इस गौने की रस्म का जितना जल्दी हो सके अंत हो जाना चाहिये। भले ही दो वर्ष बाद विवाह हो, पर विदाई साथो-साथ होनी चाहिये। इसके लिये ब्याह पक्का होते समय ही विदाई की बात भी पक्की कर लेनी चाहिये। कन्या के माता पिता को भी भावुकता छोड़ कर विवाह में ही बेटी की विदाई कर देनी चाहिये। कितने जगहों में तो विवाह में बिदाई होने के बाद भी गौना होता है और कहीं-कहीं तो जम कर बारात भी जाती है। यह सभी कार्य एकदम अव्यवहारिक हैं। हमें ऐसा कोई भी कार्यक्रम उपस्थित नहीं करना चाहिये, जो समाज में प्रचलन का रूप धारण कर ले व औरों के लिये सिर दर्द बन जाय।

इस प्रकार से विवाह सम्बन्धी कुछ बातों पर विचारप्रस्तुत किया गया। इसका यहीं अंत नहीं हो पाता, कन्या के सास, ससुर, पति, सभी उसे जीवन भर कुबेर का खजाना ही समझते हैं। जब भी कन्या मां बाप के पास जाय, आते समय ढेर सारे सामान लेकर लौटे, त्योहारों पर भी आस लगाये हैं कि कुछ न कुछ जरूर आवेगा। यह अनिवार्यता कब खतम होगी ? कन्या का पिता कब भरपेट भोजन कर सकेगा ? इस प्रवृत्ति का कब खातमा होगा ? इसमें हमारी बहनों को भी हाथ बंटाना होगा। विवाह के बाद ससुराल जाते ही पितृगृह से आने वाले प्रत्येक सामान को लेने से इन्कार करना होगा। वर को स्वयं विवेक के साथ अपने ससुर को समझा देना चाहिये कि अब आप की कन्या हमारे घर में बहुत सुख से है, अब आप अपने परिवार के अन्य सदस्यों पर ध्यान देवें। यह तो सोचेंगें नहीं बल्कि यदि ससुराल खुद पहुँचे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोल पड़े कि मैं पहले पहल आया हूँ भोजन कराई क्या मिलेगा? गाय, भैंस, स्वर्णा-भूषण या नगद पैसे? क्या करे? कन्या का पिता की इन सभी ग्रहों को पहले से सोच कर तो बैठा रहता है किसी न किसी तरह कुछ ले देकर सौदा तय करना ही पड़ता है। ये रूठते रहे, वो मनाते रहे, फिर क्यों न मनावे पिता तो जानताही है, कि यदि दामाद साहब यहाँ से रूठ कर गये तो सब क्रोध बेटी पर उतरेगा। उसे गाली, गलौज मार पीट अन्य यातनाएँ भी दी जाएंगीं। कोई भी पिता नहीं चाहता कि उसकी बेटी को किसी भी प्रकार की तकलीफ हो, भले ही जीवन भर खुद कोल्हू का बैल बना रहे।

अतः प्रत्येक व्यक्ति को यह तो सोचना ही चाहिये कि "जो सलूक मैं किसी और के साथ कर रहा हूँ, आज नहीं कल मैं भी किसी कन्या का भाई, किसी का बाप बनूंगा" यह हमारे साथ भी होगा। तो क्यों न हम इन प्रचलित कुरीतियों को समूल नष्ट कर दें।

आदर्श विवाहों की सफलता कैसे हो?

आदर्श विवाहों की सफलता की तीन चौथाई जिम्मेदारी वर पक्ष पर और एक चौथाई कन्या पक्ष पर है। कन्या पक्ष सिर्फ इतना ही करे कि वर पक्ष द्वारा होने वाले प्रत्येक अंधाधुंध धूम धाम पूर्ण खर्चीले प्रदर्शन में रुचि न व्यक्त करे, वरन् उसे निरुत्साहित कर देवें, एवं अपनी कन्या के लिये वस्त्र व आभूषण न आने पर भी उत्साहित रहें। लड़के वालों को तो दहेज प्रथा का पूर्ण त्याग कर समाज को नई दिशा प्रदान करनी होगी, तभी देखा देखी अन्य युवक भी प्रेरणा लेकर आगे आवेंगे और उन्हें भी अपने बहन बेटियों के लिये उक्त सुविधा प्राप्त हो सकेगी।

युवकों को समय की चुनौतियों को स्वीकार करना होगा। अभिभावक गण को पुराने रूढ़िवादी विचारधाराओं का त्याग करना होगा। आदर्श विवाहों में सबसे बड़ी बाधा इस बात की पड़ती है कि यदि एक पक्ष तैयार भी होगया तो दूसरा उनके मनोनुकूल नहीं होता। विवाह दो पहियों का रथ है अतः इसमें एक पक्ष मनमानी नहीं कर सकता। यदि विवाहों में होने वाले अंधाधुंध बर्बादी को रोकना है तो दोनों पक्षों को सुधारवादी होना पड़ेगा। सुधार घर से ही प्रारम्भ करना होगा, हमें इस परीक्षा की घड़ी में पीछे हटना शोभा नहीं देगा। अतः चुनौतियों को स्वीकार करते हुये सामयिक कर्त्तव्य का पालन करने के लिये आइये नव निर्माण के कार्य में हम बढ़ चलें। जो दहेज का लेनदेन करें उसके यहाँ शादी कदापि न करें। ●●●

दानेन पाणिर्नतु कंकणेन, स्नानेन शुद्धिर्न तु चन्दनेन।
मानने तृप्तिर्न तु भोजनेन, ज्ञानेन मुक्तिर्न तु मंडनेन॥
चाणक्य

दान देने से ही हाथ का शोभा बढ़ती है, गहने से नहीं; आदर-सम्मान मिलने से तृप्ति होती है, केवल भोजन से ही नहीं; ज्ञान से मुक्ति होती है, बाह्य उपकरणों से नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चटगांव शस्त्रागार पर अधिकार

—चिन्तामणी पाणिग्रही संसत्सदस्य

भारत के सशस्त्र क्रांति प्रयासों के इतिहास में चटगाँव शास्त्रागार अधिकार का अभियान एक गौरवमय और प्रकाश दायक घटना का स्थान ले चुका है। आज की स्थिति में उसकी जानकारी देना कुछ उपयोगी हो सकता है साथ ही उसमें वीरगति पाये बलिदानी क्राँतिवीरों के प्रति श्रद्धांजलि भी दी जायेगी, इसी भावना से ये पंक्तियां हैं।

अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने के लक्ष्य से इस अभियान से पहले कई प्रयत्न किए गए किन्तु अंग्रेज शासकों द्वारा वे असफल कर दिए गए। कोई राष्ट्र-द्रोही विश्वासघाती के कारण अथवा व्यापक जासूसी कार्यवाही के द्वारा, चटगांव शस्त्रागार अभियान इसमें अद्वितीय रहा कि अंग्रेज सरकार को इसकी सफलता से पूर्व कुछ भी आभास तक किसी प्रकार भी प्राप्त नहीं हो पाया, यह तथ्य इसमें काम करने वाले क्रांतिकारियों की दक्षता कर्मठता और अनुशासन बद्धता को दीप्त करता है।

चटगांव में क्रांतिकारियों के प्रेरक और संचालक केन्द्र थे श्री सूर्यसेन मास्टर दा ग्राम जो आयारा चटगांव के निवासी थे। १९१६ में बरहमपुर कालेज से बी. ए, करने के पश्चात् वे स्वयंसेवक संगठन में व्यस्त हुए। १९२१ ई० में गांधीजी द्वारा चलाए गए अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। इसी में आपने एक राष्ट्रीय स्कूल स्थापित किया और उसमें अध्यापन कार्य करने लगे। १९२३ ई० में इन्हें आसाम-बंगाल रेल लूटने के मामले में गिरफ्तार किया गया किन्तु प्रमाणाभाव में फिर बरी कर दिये गये।

और तब सशस्त्र क्रांति प्रयासों के लिए आप आगे बढ़ते चले, परिवेश ने नए ओज को राह दी। चटगांव शस्त्रागार पर अधिकार कर लेने की योजना पर गम्भीरता से विचार किया गया। कुछ ही देर के लिए क्यों न हो, परन्तु ब्रिटिश सत्ता को ढहा देना लक्ष्य बना। अभियान के लिए निश्चित काम देकर चार दल नियुक्त किए गए। श्री गनेश घोष और श्री अनन्त सिंह के नेतृत्व में पहला दल नियुक्त हुआ। इसे सशस्त्र पुलिस कांस्टेबुलरी पर आक्रमण करके वहां से शस्त्र, गोलाबारूद आदि लूट लेने का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूसरा दल श्री लोकनाथ बाल और श्री निर्मलसेन के नेतृत्व में बना और इसे काम दिया गया कि वह जाकर सैनिक शस्त्रागार पर अधिकार करके वहां के तमाम शस्त्रादि अधिकार में कर ले। तीसरे दल को संचार साधन ध्वस्त करने टेलीफोन, तार व्यवस्था, रेलवे तार व्यवस्था को निकम्मा कर देने का काम सौंपा गया और चौथे दल को पहाड़तली स्थित योरपियन क्लब में पहुँचकर वहाँ के योरपियनों को इसमें बाधक न होने की स्थिति में बनाए रखने को कहा गया। निश्चय यह भी हुआ कि ये सब काम पूरा करने के पश्चात् ये चारों ही दल पुलिस बेरक में आकर मिलेंगे।

१८ अप्रैल, १९३० को हिन्दुस्तान 'प्रजातन्त्र सेना' के नाम से एक घोषणा वितरित की गई जिसमें भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए भारत स्थित अंग्रेज सरकार के विरुद्ध युद्ध घोषणा की गई। उसी रात को १० बजे चारों दल योजनानुसार अपना-अपना काम सम्पादित करने चल पड़े।

सब काम सोचे अनुसार ठीक हुए, फौजी शस्त्रालय लूटा गया और क्रांतिकारियों ने वहां अनेक रिवाल्वर, पिस्तौल, रायफल तथा एक मशीनगन अधिकार में लीं, वहां सार्जेण्ट मेजर फेरेल मारे गये। संघर्ष में कुछ गोरे सैनिकों ने क्रांतिकारियों पर आक्रमण किया किन्तु क्रांतिकारियों ने उन्हें मार खदेड़ा। काम पूरा कर लेने पर शस्त्रालय क्रांतिकारियों ने फूंक दिया।

टेलीफोन एक्सचेंज को ध्वस्त कर दिया गया, मगर टेलीफोन व्यवस्था को अस्त-व्यस्त न किया जा सका। कारण टेलीग्राफ मास्टर ने लम्बी मार का रिवाल्वर से कड़ा सामना किया। योरपियन क्लब सूना था अतः वहां कुछ भी काम करने को न था। अपना-अपना काम करके सब दल स्थानीय पुलिस बेरक में जमा हुए। वहां प्राविजनल सरकार की घोषणा की गई मास्टर दा सूर्यसेन की अध्यक्षता में।

उधर पुलिस अधिकारी एक स्थान पर मिले, चटगांव बन्दर शस्त्रागार से एक मशीनगन मंगवाई और पानी की टंकी की ऊँचाई से क्रांतिकारियों पर गोलियाँ बरसाना आरम्भ कर दिया। भयंकर भूल हुई थी चटगांव बन्दर शस्त्रागार की व्यवस्था न कर लेने की। साथ ही गोलाबारूद भी कम पड़ गया, इससे क्रांतिकारी दल पहाड़ी की ओर बचते हुए निकल गया और इस प्रकार लगभग ५० अनुयायियों के साथ श्री सूर्यसेन जी ने जलालाबाद पहाड़ियों में जाकर आश्रय लिया।

जलालाबाद पहाड़ी पर मोर्चा

दूसरी ओर चटगांव बन्दरगाह पर खड़े एक सामुद्रिक जहाज द्वारा शस्त्रागार पर आक्रमण होने के समाचार कलकत्ते को ब्राडकास्ट किए जाते ही फौरन सैनिक दल चटगाँव भेजे गए। आई सेना ने जाकर जलालाबाद पहाड़ी को घेर लिया और तब २२ अप्रैल को अंग्रेज सैनिकों ने दो ओर से आक्रमण किया, दोनों ही बार शत्रु को पीछे ढकेल दिया गया। इसमें ७४ गोरे सैनिक मारे गए और १५० घायल हुए थे। क्रांतिकारियों में मोर्चे पर सर्वश्री हरिगोपाल बाल, निर्मललाल, विधुभूषण भट्टाचार्य, नरेश राय, शशांकदत्त, मधुसूदन दत्त, पुलिस विकास घोष, जीतेनदास गुप्ता और प्रकाशवाल ने शहादत वरण की थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक और युद्ध

दूसरा मोर्चा ६ मई, १६३० को ६ क्राँतिकारियों के दल ने कर्णफूली नदी के किनारे रहते अंग्रेजों पर प्रहार किया। पुलिस ने गुण्डों को बटोरकर उनका सामना किया। क्राँतिकारी नाव से नदी पार करने लगे ऐसे में मोटर लंच से आकर पुलिस गुण्डा गिरोह ने आक्रमण कर दिया फलतः दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। कड़ा मुकाबला हुआ और इसमें सर्वश्री स्वदेशराय, रजित सेन, मनोरंजन सेन गुप्त और देवप्रसाद गुप्ता ने लड़ते-लड़ते समर में वीरगति पाई। बाकी बचे सर्वश्री सुबोध चौधरी और फणीनन्दी को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

चन्दन नगर में सामना

३१ अगस्त, १६३० को बंगाल के कुख्यात पुलिस अधिकारी श्री टेगार्ट ने चंदन नगर में पूर्व सूचना के आधार पर एक घर पर अचानक छापा मारा। यहां जम-कर गोलियां चलीं, जिसमें श्री जीवन घोषाल शहीद हुए और सर्वश्री गणेश घोष तथा लोकनाथ बाल गिरफ्तार कर लिये गए।

चटगाँव शस्त्रागार आक्रमण केस का फैसला १ मार्च, १६३२ ई० को सुनाया गया। इसमें सर्वश्री गणेश घोष, लोकनाथ बाल, अम्बिका चक्रवर्ती तथा अन्य को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

मास्टर दा-सूर्यसेन तथा उनके कुछ अनुयायी अब भी फरार थे। तमाम प्रयत्नों के बाद भी पुलिस उन्हें गिरफ्तार नहीं कर सकी।

ढाल घाट की घटना

पूर्व सूचना पर ढाल घाट पुलिस थाना क्षेत्र के पटिया गांव पर कप्तान केमरून के नेतृत्व में पुलिस दल ने १४ जून, १६३२ को अचानक छापा मारा। खबर दी गई थी कि उस गाँव के एक घर में सावित्री देवी के साथ सूर्यसेन तथा कुछ और क्रांतिकारी रुके हुए हैं। यहां भी कड़ा सामना हुआ जिसमें कप्तान केमरून मारा गया, दूसरी ओर अपने प्रिय नेता मास्टर दा को निकल जाने का सुयोग देने के प्रयत्नों में सर्वश्री निर्मल सेन तथा अपूर्व सेन ने अपने प्राण भेंट चढ़ा दिए।

पहाड़तली योरपियन क्लब पर हमला

२४ सितम्बर, १६३२ को सुश्री प्रीतिलता वादेद्दार के नेतृत्व में क्रांतिकारी दल ने पहाड़तली स्थित योरपियन क्लब पर बम-पिस्तौलों से हमला कर दिया। इसमें एक योरपियन महिला मारी गई और कई अंग्रेज तथा एंग्लोइण्डियन गम्भीर रूप से घायल हुए। प्रीतिलता एक रिवाल्वर की गोली से घायल हो गई थीं। पुलिस अत्याचारों से बचने के लिए उसने विष खाकर प्राण विर्सजित कर दिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पताका गीत

यह भजन श्रीमान पूज्य पं० मुक्तिराम जी आचार्य गुरुकुल पोठोहार का निर्मित्त है जो उन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह के लिए जाते समय निर्माण किया, और इसको सारे भारत वर्ष में बड़ी ही प्रसिद्ध भि ली

दयानन्द की यह पताका रंगीली ।
सजी ओ३म् के नाम वालो छबीली । ध्रुव ।
प्रभा भानु की यह जिधर को बढ़ेगी ।
निशा पाप की उस दिशा से उड़ेगी ।
खिलेगी प्रभा पुण्य की फिर फबीली । १ ।
सभी के भले की करो कामनाएं ।
भरो विश्व में प्रेम की भावनाएं ।
यही रागनी यह सुनाती सुरीली । २ ।
जहां पेड़ अन्याय का जन्म लेगा ।
विषैले कंटीले फलों से फलेगा ।
वहां यह कुल्हाड़ी बनेगी नुकीली । ३ ।
सुना रंग इसका बिगड़ने न देंगे ।
इसे रक्त से 'वीर' लाखों रंगेंगे ।
प्रथा यह पुरानी चलेगी सजीली । ४ ।
करेंगे इसी की सदा वन्दनाएं ।
सहेंगे इसी के लिए यन्त्रणाएं ।
बढ़ेंगे कभी चाल होगी न ढीली । ५ ।

फरवरी १९३३ में एक विश्वासघाती राष्ट्रद्रोही से पुलिस को सूचना मिली कि ग्राम गौराला में पूरन तालुकेदार के घर सूर्यसेन आश्रय लिए हुए हैं । गिरफ्तारी के लिए गोरखा सैनिकों का दल भेजा गया । वहां कुछ समय कड़ा सामना हुआ फिर संघर्ष में पूरन तालुकेदार ने वीरगति पाई और सूर्यसेन गिरफ्तार कर लिए गए ।

इसके पश्चात् १० मार्च, १९३३ को चन्दन नगर में तथा १८ मई, १९३३ को गहिरा में पुलिस क्रांतिकारियों के सशस्त्र संघर्ष हुए । गहिरा में कांटेदार मोर्चे के पश्चात् तारकेश्वर दस्तीदार और कल्पना दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया ।

१२ जनवरी, १९३४ बंगाल की जनता के लिए अति दुभाग्यपूर्ण दिवस रहा । उस दिन दो महान् राष्ट्रनायक श्री सूर्यसेन तथा तारकेश्वर दस्तीदार को भारत के अंग्रेजी शासन ने फाँसी के झूले पर झुला दिया । शहादत की ऐसी ज्वलन्त गाथा है चटगांव शस्त्रागार आक्रमण अभियान की ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषि दयानन्द ने कहा था

ऋषि ग्रन्थों से उद्धृत अनमोल वचन

संग्रह कर्त्ता – जगदीश्वर प्रसाद

सत्य का स्वरूप और सत्यार्थ का ग्रहण करना

जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दे, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

—(स० प्र० भूमिका)

विद्वान् एकमत हो प्रीति से वर्तें

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत में हैं, वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सबमें सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध हैं उनका त्यागकर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों (साधारण जन) में विरोध बढ़कर अनेक-अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।

—(स० प्र० भू०)

पक्षपात छोड़ सब मतवालों के साथ मनुष्योन्नति के लिए वर्त्तना

यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और वसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतवालों के साथ भी वर्त्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्त्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी, तथा सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य है।

(स० प्र० भू०)

बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करना मनुष्यत्व है

जैसे पशु बलवान होकर निर्बलों को दुःख देते और मार भी डालते हैं, जब मनुष्य शरीर पाके वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव युक्त नहीं, किन्तु पशुवत हैं। जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर परहानि करता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।

(स० प्र० भू०)

मिथ्या बात के प्रचार से अनर्थ बढ़ता है

जो मिथ्या बात न रोकी जाए तो संसार में बहुत से अनर्थ प्रवृत्त हो जावें।

(स० प्र० भू०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालशिक्षा

तीन उत्तम शिक्षक

वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता, तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य ! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान ! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता संतानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता, इसलिये धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

(स० प्र० स० २)

देवनागरी व अन्य देशीय भाषाओं का ज्ञान करावें

जब पांच पांच वर्ष के लड़का लड़की हों तो देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें, अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। उसके पश्चात् जिनसे अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म, परमेश्वर, माता, पिता, आचार्य, विद्वान्, अतिथि, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, भगिनी, भृत्य आदि से कैसे वर्त्तना इन बातों के विषय में मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य भी अर्थ सहित कंठस्थ करावें।

(स० प्र० स० २)

बाल्यकाल ही विद्याप्राप्ति व ब्रह्मचर्य का अमूल्य समय

माता-पिता अपनी सन्तानों को बतावें कि "जो तुम लोग सुशिक्षा और विद्या ग्रहण, वीर्य की रक्षा करने में इस समय चूकोगे तो पुनः जन्म में तुमको यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा। जब तक हम लोग गृहकार्यों के करने वाले जीते हैं तभी तक तुमको विद्या ग्रहण और शरीर का बल बढ़ाना चाहिए" इसी प्रकार की अन्य-अन्य शिक्षा भी माता-पिता करें।

(स० प्र० स० २)

पढ़ाने में लाड़न नहीं करना योग्य है

उन्हीं के सन्तान विद्वान्, सभ्य और सुशिक्षित होते हैं जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते किन्तु ताड़ना ही करते हैं। परन्तु माता-पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें।

(स० प्र० स० २)

सन्तान व शिष्य सत्योपदेश व धर्मयुक्त कर्म ही ग्रहण करें

माता-पिता आचार्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें कि जो-जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उनका ग्रहण करो और जो-जो दुष्ट कर्म हों उनका त्याग कर दिया करो।

(स० प्र० स० २)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्याध्ययन

माता-पिता का परम कर्त्तव्य

यही माता-पिता का कर्त्तव्य-कर्म परमधर्म और कीर्ति का काम है जो अपने संतानों को तन-मन-धन से विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करना।

(स० प्र० स० २)

विद्या ही आभूषण है

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।

(स० प्र० स० ३)

अनिवार्य शिक्षा

यह राजनियम और जाति (समाज) नियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजें वह दण्डनीय हों।

(स० प्र० स० ३)

प्राणायाम का लाभ

जैसे अग्नि में तपाने से सवर्णादि घातओं का मल नष्ट होकर शुद्ध होते हैं वैसे प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं।

प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियाँ भी स्वाधीन होते हैं, बल पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्म रूप हो जाती है कि जो बहुत कठिन और सूक्ष्म विषय को भी शीघ्र ग्रहण करती है। इससे मनुष्य शरीर में वीर्य-वृद्धि का प्राप्त होकर स्थिर बल, पराक्रम, जितेन्द्रियता, सब शास्त्रों को थोड़े ही काल-में समझकर उपस्थित कर लेगा। स्त्रियां भी इसी प्रकार योगाभ्यास करें।

(स० प्र० स० ३)

होम से रोगों से निवृत्ति व सुखों की पूर्ति

आर्यवर शिरोमणि महाशय ऋषि, महर्षि, राजे, महराजे लोग बहुत-सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्य्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जावे।

(स० प्र० स० ३)

विद्वान व वृद्धों की सेवा की चार पदार्थ बढ़ते हैं

जो सदा नम्र सुशील, विद्वान् वृद्धों की सेवा करता है, उसके आयु, विद्या, कीर्ति और बल ये चार सदा बढ़ते हैं। और जो ऐसा नहीं करते उनके आयु आदि चार नहीं बढ़ते।

(स० प्र० स० ३)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी वर्ण के नर-नारी में विद्या और धर्म का प्रचार आवश्यक

जो ब्राह्मण हैं वे ही केवल विद्याभ्यास करें और क्षत्रियादि न करें तो विद्या, धर्म, राज्य और धनादि की वृद्धि कभी नहीं हो सकती। क्योंकि ब्राह्मण तो केवल पढ़ने-पढ़ाने और क्षत्रियादि से जीविका को प्राप्त होके जीवन धारण कर सकते हैं। (इससे) जीविका के आधीन और क्षत्रियादि के आज्ञादाता और यथावत् परीक्षक दण्डदाता न होने से ब्राह्मणादि सब वर्ण पाखण्ड ही में फंस जाते हैं। और जब क्षत्रियादि विद्वान् होते हैं तब ब्राह्मण भी अधिक विद्याभ्यास और धर्म पथ में चलते हैं और उन क्षत्रियादि विद्वानों के सामने पाखण्ड, झूठा व्यवहार भी नहीं कर सकते। और जब क्षत्रियादि अविद्वान् होते हैं तो वे जैसा अपने मन में आता है वैसा ही करते-कराते हैं। इसलिए ब्राह्मण भी अपना कल्याण चाहें तो क्षत्रियादि के वेदादि सत्यशास्त्र का अभ्यास अधिक प्रयत्न से करावें। क्योंकि क्षत्रियादि ही विद्या, धर्म, राज्य और लक्ष्मी की वृद्धि करने हारे हैं, वे कभी भिक्षावृत्ति नहीं करते, इसलिए वे विद्याव्यवहार में पक्षपाती भी नहीं हो सकते। और जब वर्णों में विद्या सुशिक्षा होती है तब कोई भी पाखण्ड रूप अकर्म युक्त मिथ्या व्यवहार को नहीं चला सकता। इससे क्या सिद्ध हुआ कि क्षत्रियादि को नियम में चलाने वाले ब्राह्मण और संन्यासी तथा ब्राह्मण और संन्यासी को सुनियम में चलाने वाले क्षत्रियादि होते हैं। इसलिए सब वर्णों के स्त्री पुरुषों में विद्या और धर्म का प्रचार अवश्य होना चाहिए।

(स० प्र० स० ३)

सत्य और असत्य क्या है ?

जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों से अनुकूल हो वह-वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है। जो-जो सृष्टि क्रम से अनुकूल वह वह सत्य और जो-जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध है वह-वह सब असत्य है, जैसे कोई कहे कि बिना माता-पिता के योग से लडका उत्पन्न हुआ, ऐसा कथन सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से सर्वथा असत्य है।

(स० प्र० स० ३)

नित्य कर्म में अनध्याय नहीं

नित्य कर्म में अनध्याय नहीं होता। जैसे श्वास प्रश्वास सदा लिए जाते हैं, बन्द नहीं किए जाते, वैसे नित्यकर्म प्रतिदिन करना चाहिए, किसी दिन नहीं छोड़ना। जैसे झूठ बोलने में सदा पाप और सत्य बोलने में सदा पुण्य होता है वैसे ही बुरे कर्म करने में सदा अनध्याय और अच्छे कर्म करने में सदा स्वाध्याय ही होता है।

(स० प्र० स० ३)

राजा और प्रजा सब लड़के-लड़कियों को विद्वान् बनाने का प्रयत्न करें

आजकल के संप्रदायी और स्वार्थी ब्राह्मण और जो दूसरों को विद्या सत्संग से हटा और अपने जाल में फंसा के उनका तन, मन, धन नष्ट कर देते हैं और चाहते हैं कि जो क्षत्रियादि वर्ण पढ़कर विद्वान् हो जावेंगे तो हमारे पाखण्ड जाल से छूट और हमारे छल को जानकर हमारा अपमान करेंगे इत्यादि विघ्नों को राजा और प्रजा दूर करके अपने लड़कों और लड़कियों को विद्वान् करने के लिए तन, मन, धन से प्रयत्न किया करें।

(स० प्र० स० ३)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सब वर्णों के स्त्री पुरुष को वेद पढ़ने का अधिकार है

सब स्त्री पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है। क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने सुनने का शूद्रों के लिए निषेध और द्विजों के लिए विधि करे? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता।

(स० प्र० स० ३)

सब स्त्री पुरुषों को अपने-अपने व्यवहार की विद्या अवश्य पढ़नी चाहिए

जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिए वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए।

(स० प्र० स० ३)

विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें, जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सासु, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्तें। यही कोष अक्षय है इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाए। इसी कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है।

(स० प्र० स० ३)

सौभाग्यशाली देश

जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभायग्वान् होता है।

(स० प्र० स० ३)

वर्ण व्यवस्था गुण कर्म स्वभाव के अनुसार

वर्णव्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए। पहले भी उपनिषद् काल में जाबाल ऋषि अज्ञात कुल में, महाभारत काल में विश्वामित्र क्षत्रिय वर्ण और मातङ्ग ऋषि चांडाल कुल से ब्राह्मण हो गये थे, अब भी जो उत्तम विद्या स्वभाव वाला है वही ब्राह्मण के योग्य और मूर्ख शूद्र के योग्य होता है और वैसे हा आगे भी होगा।

(स० प्र० स० ४)

गुण कर्म स्वभाव के अनुसार उत्तम व नीच वर्ण में गिनना

रजवीर्य के योग से ब्राह्मण शरीर नहीं होता। जो ब्राह्मणादि उत्तम कर्म करते हैं वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कर्म स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में, और जो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में अवश्य गिनना चाहिए।

(स० प्र० स० ४)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुण कर्म स्वभावानुसार व्यवस्था से सब वर्णों में शुद्धता, योग्यता

जैसे पुरुष जिस-जिस वर्ण के योग्य होता है वैसे ही स्त्रियों की भी व्यवस्था समझनी चाहिए। इस प्रकार सब वर्ण अपने-अपने गुण कर्म स्वभाव युक्त होकर शुद्धता के साथ रहते हैं। अर्थात् ब्राह्मण कुल में कोई क्षत्रिय वैश्य और शूद्र सदृश न रहे। और क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र वर्ण भी शुद्ध रहते हैं। इससे किसी वर्ण की निन्दा व अयोग्यता भी न होगी।

(स० प्र० स० ४)

:वर्णव्यवस्था से सब मनुष्य उन्नतिशील होते हैं

जिस-जिस पुरुष में जिस-जिस वर्ण के गुण कर्म हों उस उस वर्ण का अधिकार देना ! ऐसी व्यवस्था रखने से सब मनुष्य उन्नतिशील होते हैं क्योंकि उत्तम वर्णस्थ वाले को निम्न वर्ण में जाने के भय से और निम्न वर्णों को उत्तम वर्णस्थ होने के लिए उत्साह से सदा परिश्रम करते रहना होगा। इस प्रार वर्णों को अपने अपने अधिकार में प्रवृत्त करना राजा आदि सभ्यजनों का काम है।

(स० प्र० स० ४)

अधर्मात्मा का विनाश अवश्यंभावी

जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़, कपट, पाखण्ड, विश्वासघात आदि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है, पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है, अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है पश्चात् शीघ्र समूल नष्ट हो आता है।

(स० प्र० स० ४)

संन्यास धर्म

संन्यासी का विशेष धर्म

दश लक्षण युक्त (धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धीः, विद्या, सत्य, अक्रोध) पक्षपात रहित न्यायाचरण, धर्म में सदा आप चलना और दूसरों को समझाकर चलाना संन्यासी का विशेष धर्म है। संन्यासियों का मुख्य कर्म यही है कि सब गृहस्थादि आश्रमों को सब प्रकार के व्यवहारों का सत्य निश्चय करा अधर्म व्यवहारों से छुड़ा सब संशयों का छेदन कर सत्य धर्म युक्त व्यवहारों में प्रवृत्त कराया करें।

(स० प्र० स० ५)

संन्यास ग्रहण की आवश्यकता

जैसे शरीर में शिर की आवश्यकता है, वैसे ही आश्रमों में संन्यास की आवश्यकता है। क्योंकि इसके विना विद्या, धर्म कभी नहीं बढ़ सकता और दूसरे आश्रमों को विद्या ग्रहण, गृहकृत्य और तपश्चर्यादि का सम्बन्ध होने से अवकाश बहुत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कम मिलता हैं। पक्षपात छोड़कर वर्त्तना दूसरे आश्रमों को दुष्कर है। जैसा संन्यासी सर्वतो मुख होकर जगत् का उपकार करता है, वैसा अन्य आश्रमी नहीं कर सकता क्योंकि संन्यासी को सत्य विद्या से पदार्थ के विज्ञान की उन्नति का जितना अवकाश मिलता है उतना अन्य आश्रमी को नहीं मिल सकता।

(स० प्र० स० ५)

संन्यासी नियन्ता होता है

सत्योपदेश सब आश्रमी करें और सुनें, परन्तु जितना अवकाश निष्पक्ष-पातता संन्यासी को होती है उतनी गृहस्थों को नहीं। जितना भ्रमण का अवकाश संन्यासी को मिलता है अन्यों को नहीं। जब ब्राह्मण वेद विरुद्ध आचरण करें तब उनका नियन्ता संन्यासी होता है।

(स० प्र० स० ५)

राजधर्म

एक को राज्याधिकार नहीं देना

एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए, किन्तु राजा जो सभापति तदाधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे।

यदि ऐसा न करोगे तो :—

जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहे तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करे। अकेला राजा स्वाधीनता वा उन्मत्त होकर प्रजा का नाशक होता है। अतः किसी को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए। स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है, किसी को अपने से अधिक न होने देता, श्रीमानों को लूट खसूंट अन्याय से दण्ड (जुर्माना) लेके अपना प्रयोजन पूरा करता है।

(स० प्र० स० ६)

दण्ड ही सच्चा राजा है

दण्ड ही प्रजा का शासनकर्त्ता, सब प्रकार का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है। जो दण्ड अच्छे प्रकार विचार से धारण किया जाए तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है, और जो विना विचारे चलाया जाए तो सब ओर से राज्य का विनाश कर देता है। बिना दण्ड के सब वर्ण दूषित और सब मर्यादा छिन्न-भिन्न हो जाए। जब दण्ड का चलाने वाला पक्षपात रहित विद्वान् होता है तो पाप का नाश होकर प्रजा मोह को न प्राप्त होकर आनन्दित होती है।

(स० प्र० स० ६)

उत्तम संन्यासी की व्यवस्था श्रेष्ठ धर्म है

यदि एक अकेला वेदों का जानने हारा द्विजों में उत्तम संन्यासी जिस धर्म (कर्त्तव्य कर्म) की व्यवस्था करे वही श्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि अज्ञानियों के सहस्रों लाखों करोड़ों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिल के जो कुछ व्यवस्था करें उसको कभी न मानना चाहिए। जो अविद्या युक्त मूर्खों के कहे कर्म के अनुसार चलते हैं उनके पीछे सैंकड़ों प्रकार के पाप लग जाते हैं। [एक कहावत है—Hundred fools cannot make a wise man]

(स० प्र० स० ६)

न्याय मन्दिर की पवित्रता

जिस सभा में अधर्म (अन्याय) से घायल होकर धर्म उपस्थित होता है, जो उसका शल्य अर्थात् तीरवत् धर्म के कलङ्क को निकालना और अधर्म का छेदन नहीं करते अर्थात् धर्मी का मान व अधर्मी को दण्ड नहीं मिलता, उस सभा में जितने सभासद हैं वे सब घायल के समान होते हैं। जिस सभा में निन्दा के योग्य की निन्दा, स्तुति के योग्य की स्तुति, दण्ड के योग्य भी दण्ड और मान्य के योग्य का मान होता है वहां राजा (न्यायाधीश) और सब सभासद पाप से रहित और पवित्र हो जाते हैं।

(स० प्र० स० ६)

यथायोग्य दण्ड दान

जब राजा (न्यायाधीश) न्यायासन पर बैठ न्याय करे तब किसी का पक्षपात न करे किन्तु यथोचित दण्ड देवे। राजपुरुषों को प्रजापुरुषों से अधिक दण्ड होवे अन्यथा राजपुरुष प्रजापुरुषों का नाश कर दें। इसलिए राजा से लेकर छोटे से छोटे भृत्य पर्यन्त राजपुरुषों को अपराध में प्रजापुरुषों से अधिक दण्ड होना चाहिए। जिसका जितना ज्ञान और जितनी प्रतिष्ठा अधिक हो उसको अपराध में उतना ही अधिक दण्ड होना चाहिए।

(स० प्र० स० ६)

राजा भी दण्डनीय है

यदि राजा को ही दण्ड न दिया जाए और वह ग्रहण न करे तो दूसरे मनुष्य दण्ड को क्यों मानेंगे। और जब सब प्रजाजन, राज्याधिकारी, और सभा धार्मिकता, से दण्ड देना चाहें तो अकेला राजा क्या कर सकता है। यदि ऐसी व्यवस्था न हो तो राजा, प्रधान और सब समर्थ पुरुष अन्याय में डूब, सब प्रजा का नाशकर आप भी नष्ट हो जावें।

(स० प्र० स० ६)

यथा राजा तथा प्रजा

जैसा राजा होता है वैसी उसकी प्रजा होती है। इसलिए राजा और राजपुरुषों को अति उचित है कि कभी दुष्टाचार न करें, किन्तु सब दिन धर्म न्याय से वर्त्तकर सबके सुधार का दृष्टान्त बनें। इसलिए सर्वदा शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाते रहना चाहिए। जैसा बल और बुद्धि का नाशक व्यवहार व्यभिचार और अति विषयाशक्ति है वैसा और कोई नहीं है। विशेषतः क्षत्रियों को दृढ़ांग और बलयुक्त होना चाहिए।

(स० प्र० स० ६)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

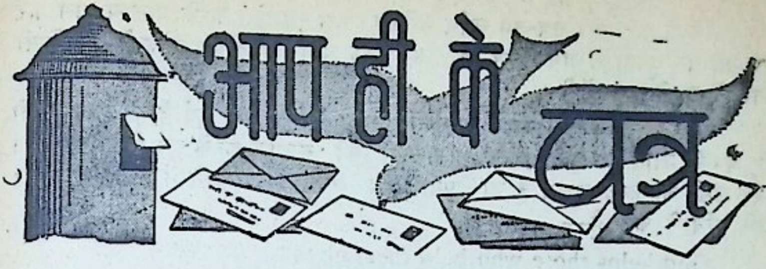

लड़कियां दहेज लेनेवालों से विवाह न करें

माननीय,

आपके मई के सुप्रसिद्ध धार्मिक पत्र जनज्ञान में पिशाचिनी दहेज प्रथा के समाधान में पढ़ा कि अगर कन्या पक्ष प्रण करे कि कुछ भी हो हम दहेज नहीं देंगे, तो समस्या दिनों में सुलझ सकती है।

लेखक का सुझाव अति उत्तम है परन्तु मेरा विचार तो यह है कि भारतीय कुमारियां अपने को समझें और विचार करें कि उनके संरक्षकों से दहेज मांगा क्यों जाता है ? हमारे अन्दर क्या न्यूनता है ? क्या हम पढ़ी लिखी नहीं हैं विदुषी नहीं हैं। वरों की तरह हम भी पढ़ी लिखी हैं अनेक पदों पर आसीन हैं। आज के युग में कौन सा ऐसा विभाग है जिसमें लड़कियां काम करके अपनी ख्याति प्राप्त नहीं कर रहीं। हमारे संरक्षकों ने भी हमारी पढ़ाई लिखाई पर व्यय किया है। जहां तक उच्च पद का प्रश्न है वहां हम गर्व के साथ कह सकती हैं कि आज भारत की प्रधान मन्त्री एक महिला है। इस प्रकार हम दावे से कह सकती हैं कि हम पुरुष समाज से किसी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं।

जो न्यूनता हमारे अन्दर है उसे मैं स्पष्ट शब्दों से कह सकती हूं कि हम कन्याओं को अपनी योग्यता, विद्वत्ता, कर्मशीलता व साहस का आभास ही नहीं है। अभी तक हम अपने को न्यून समझकर पुरुष समाज के मनमाने अत्याचार सहने की आदी हैं।

दहेज प्रथा को समाप्त करने को अनेक सभायें सभा सोसाइटियां तथा सुरीति प्रचारणी सभा आदि कितनी ही संस्थाएं खुलीं पर दहेज प्रथा टस से मस न हुई, वरन् बढ़ती ही जा रही है। भारत सरकार भी इस दहेज प्रथा की महामारी को दूर करने में असफल रही और न मुझे किसी सभा सोसाइटी व सरकार से इसके दूर होने की आशा है।

समाचार पत्रों में ऐसी अनेक घटनाएं पढ़ती रहीं हूं जिनमें मेरी अनेक बहिनों ने दहेज की बलिवेदी पर अपने प्राणों की बाजी लगा दी। परन्तु आज तक हमारी दयनीय दशा पर समाज व भारत सरकार को दया नहीं आई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं बहुत कुछ लिखना चाहती हूँ परन्तु लेख बढ़ जाने के भय से केवल इतना ही लिखती हूँ कि आज के युग में हम अपने को समझें और इस कुरीति को मिटाने का दृढ़ संकल्प करें और यत्र-तत्र सर्वत्र महिला सभा स्थापित करके प्रस्ताव पास करें और उस पर दृढ़ता से अमल करें कि हम दहेज मांगने वाले वर से कभी भी किसी हालत में शादी न करेंगी।

मेरी प्यारी बहिनों अगर आपको अपनी विद्वत्ता पर गर्व है तो आगे आओ और अपनी जाति पर होने वाले अत्याचारों को समाप्त करके युग को पलट दो। ईश्वर उसी की मदद करता है जो अपनी मदद अपने आप करने में समर्थ होते हैं। किसी कवि ने कहा है—

God helps those who help themselves

अगर मेरी प्यारी बहिन व उनके संरक्षकों ने मेरे विचारों को भली भांति समझकर इन पर दृढ़ रहने का शुभ संकल्प किया तो वह दिन दूर नहीं जबकि इस दहेज प्रथा का मुंह काला हो जायेगा।

कौड़िया गंज (अलीगढ़) **रजनी कुमारी**

वेद भाष्य अमर हो !

मान्यवर,

जनज्ञान हिन्दी मासिक अंक मई १९७३ की प्रति दिनांक २८-५-७३ को मेरे हाथ लगी। "जब तक वेदभाष्य प्रकाशन की व्यवस्था से मैं संतुष्ट नहीं हो जाता तब तक अन्न नमक व मीठा ग्रहण नहीं करूँगा"—वेदभाष्य की प्रथम जिल्द के विमोचन समारोह में आपकी ऐसी भीष्म प्रतिज्ञा आर्यजगत् एवं जनज्ञान के भाई- बहनों के लिए एक नव स्फुरण व जागृति प्रदान करेगी।

वेद के प्रति अगाध निष्ठा एवं वैदिक वाङ्मय के प्रचार व प्रसार हेतु अदम्य उत्साह युक्त आपकी भीष्म प्रतिज्ञा (संसार में वेद की प्रतिष्ठा एवं वैदिक विचार-धारा के प्रचार व प्रसार में जीवन की आहुति भी दी जा सकती है) क्या ही अच्छा होता कि आपकी इस प्रतिज्ञा से शिक्षा ग्रहण कर आर्य जनता एव जनज्ञान के भाई-बहन वेद के प्रति अपनी निष्ठा व अटूट श्रद्धा का परिचय देते। भगवान आपको चिरायु बनावे जिससे कि वेद की विचारधारा अनवरत रूप से संसार में बहती रहे।

एक तरफ वैदिक शंखनाद को विश्व में गुंजित करने हेतु आपका स्तुत्य प्रयास दूसरी तरफ जीवन से अधिक महत्त्वपूर्ण वैदिक वाङ्मय के प्रचार व प्रसार हेतु आप का भगीरथ प्रयत्न यह सिद्ध करता है कि आप अत्यल्प समय में ही अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। हम संसार के प्रत्येक परिवार में वेद को प्रतिष्ठित कराएंगे। आपकी इस सर्वोत्तम विचारधारा को प्रभु शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करें—ऐसी प्रार्थना है।

मैं प्रतिमाह पहली तारीख को वेदभाष्य प्रकाशन यज्ञ की पूर्णता के लिए इस पावन यज्ञाग्नि में एक छोटी सी हव्य कणिका ५ रुपया प्रतिमास नियमित रूप से जून १९७३ से एक वर्ष तक भेजता रहूंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसकी सूचना १२-१२-७२ को पत्र द्वारा दी गयी है पुनः प्रभु से प्रार्थना है कि आपका यज्ञ पूर्ण हो और आप शीघ्र अन्न नमक व मीठा ग्रहण करें।

शीतलमांझा

—शशिभूषण लाल

आर्य समाजों से !

आर्य समाज ने साकार परमात्मा की भक्ति का खण्डन तो किया परन्तु निराकार परमात्मा की भक्ति का कोई तरीका जनता को न बताया जिससे सभी लोग सन्तुष्ट हो जाते। संध्या हवन आदि ठीक ढंग से न होने के कारण कुछ लाभ नहीं हो रहा और अन्तःकरण शुद्ध नहीं हो पाता। कोई भी मनुष्य (एक दो को छोड़ कर) प्राणायाम ध्यान व धारणा आदि अष्टांग योग का अनुष्ठान कर नहीं सकता। जो कुछ भी आर्य्यसमाज बताता है इससे श्रद्धा पैदा नहीं होती, तृप्ति नहीं होती। दूसरे आर्य्यसमाज की ओर से भक्ति हेतु कोई भरपूर प्रचार या यत्न भी नहीं होता। इसका स्पष्ट प्रमाण है कि लोगों की आत्मिक भूख पूरी नहीं होती और मत मतांतर पैदा हो रहे हैं। हम मत मतान्तरों का खण्डन तो करते हैं परन्तु अपनी ओर से आर्य्य समाज के पास देने को कुछ नहीं। वैदिक ज्ञान सर्वोपरि है परन्तु इसका उपयोग कोई करता दिखाई नहीं देता जिससे सभी सर्वसाधारण लाभान्वित हो सकते।

आर्य्यसमाज के व्याख्यान सुनकर वाह-वाह तो हो सकती है परन्तु श्रद्धा पैदा नहीं होती और लोग प्रभावित नहीं होते, क्यों नहीं होते यही विषय विचारणीय है।

आर्य्यसमाज के कर्मठ संन्यासी महात्मा व विद्वान् एक स्थान पर इकट्ठे हों और आर्य्यसमाज की कमजोरियों का निरीक्षण करें, जहां-जहां त्रुटि हो उसका संशोधन करें और जिस समयोचित निर्णय पर पहुँचें इसका प्रचार प्रैस द्वारा व मौखिक तौर पर करें ताकि सबको यथेष्ट ज्ञान, भक्ति आदि मिल सके और सभी का कल्याण हो फिर मत-मतान्तर स्वयं ही पैदा होने बन्द हो जायेंगे।

बरेली

राधाकृष्ण

भारत कुल दिवाकर श्रद्धेय भारतेन्द्र जी,

कर जोड़ सादर अभिनन्दन !

मास जनवरी से मैं आपके 'जनज्ञान' का सदस्य हुआ हूं। तब से लगातार सुन्दर-सुन्दर लेख, महाकाव्य तथा संक्षिप्त महाभारत पढ़ने को मिला। बहुत ही सुन्दर लगा। मैं पत्रिका में अन्य लेखों के पढ़ने के पहले "मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ" लेख पढ़ता हूँ। लगता है यदि दयानन्द के प्रत्येक शिष्य में इतनी कर्मठता, लगन आ जाय तो आर्यसमाज के शताब्दी अर्थात् सन् १९७५ तक आर्य राष्ट्र यदि पूरा न बन पाये तो २/३ भाग अवश्य बन जायेगा। किन्तु लोगों में स्वार्थपरता की भावना एवं आर्थिक दृष्टिकोण ही उत्थान के मार्ग में कंकड़ डालता है।

मई में गाजियाबाद में होने वाले सम्मेलन की पूर्ण रूपरेखा तथा उससे निकला निष्कर्ष पत्रिका के माध्यम से सब आर्य जनों के समक्ष अवश्यमेव रखें। अति कृपा होगी।

राकेश कुमार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिक से अधिक सत्यार्थप्रकाश वितरण कर महर्षि का संदेश फैलाइए।

अपनी

आवश्यकताओं

वर-वधू

नौकरी आदि

के लिये

जनज्ञान

में

विज्ञापन दीजिए

———

धन भेजते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें। वी० पी० न मंगाएं। पत्र मिलते हो धन भेज दें। —सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वास्थ्य सुधा

ऋतु अनुकूल स्वास्थ्य रक्षा

● कुंवर बहादुर माथुर ●

"आदानग्लानवपुषामाग्निः सन्नोऽपि सीदति ।
वार्षसु दोषैर्दूष्यन्ति तेऽम्बुलम्बाम्बुदेऽम्बरे ॥"

वर्षा काल में अपचित धातु वाले शरीर में अग्नि मन्द होकर नष्ट हो जाती है। इन दिनों जब आकाश जल से भरे बादलों से घिरा हुआ होता है, तब यह अग्नि वातादि दोष से दूषित होती है। अतएवः—

"मस्तु सौवर्चलाढ्यं वा पञ्चकोलावजर्चूणितम् ।
दिव्यं कौपं भृतं चाम्भो भोजनं त्वतिदुर्दिने ॥"

वमन, विरेचनादि से शरीर की शुद्धि करके निरुह वस्तिलें। पुराना अन्न, मूंग आदि के यूष, शुद्ध मधु, पुराना अरिष्ट आदि खायँ। सौवर्चल नामक अथवा पंचकोल (पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक और सोंठ) मिश्रित वस्तुएँ खायें। आकाश से बरसा हुआ या उबला हुआ जल पिएँ। जब वर्षा का जोर अधिक हो और वायु का वेग प्रबल, तब नमक मिला हुआ, चिकना सूखा पदार्थ अल्प मात्रा में खायें। इस समय भोजन में मधु का योग विशेष लाभदायक होगा। इसके अतिरिक्त निम्न बातों को ध्यान में रखकर अपना दैनिक कार्य करें:—

"अपादचारी सुरभिः सततं धूपिताम्बरः ।
हर्म्यपृष्ठे वसेद्बाष्पशीतशीकर वर्जिते ॥"

वर्षा में पैदल बाहर न निकले, कपड़ों को बराबर धूप दिखाते रहें, मकान की छत पर बैठे, जहाँ मौसमी वायु और जल छींटे आते हों। नदी का जल, पानी में घोला हुआ सत्तू दिवा–शयन और धूप का सेवन कदापि न करें।

इस मौसम में वायु का प्रकोप हुआ करता है। अतः वायु को शान्त करने के उपाय करने चाहिएं। वायुशामक सूखे, हलके, गरम, घी-तेल की अधिकता वाले, नमकीन तथा खट्टे पदार्थों का सेवन इन दिनों लाभ पहुँचाता है। पत्ते वाले साग इस ऋतु में नहीं खाने चाहिएं।

आज कल नदी-तालाब का जल नहीं पीना चाहिए, न उनमें स्नान करना चाहिए। जल औंटाकर पिया जाय, तो अच्छा है। पीने के लिए 'दिव्य' जल सबको

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अच्छा है, अर्थात् वर्षा का वह जल, जो नीचे गिरने से पहले ऊपर ही ऊपर ले लिया जाय।

इन दिनों खान पान के ऊपर बहुत ही ध्यान देना चाहिए। भारी और बासी चीजें नहीं खानी चाहिएं। सायं काल का भोजन रात्रि होने से पहले खा लेना अच्छा है। इन दिनों दही नहीं खाना चाहिए; जैसी कहावत है—'स्रावन साग, न भादों दही। क्वार करेला, न कार्तिक नहीं'।

आज कल कीचड़, पानी और शीत से बराबर बचना चाहिए। धूप से बचना भी आवश्यक है। कपड़ों को भी शीत से बचाना चाहिए, नहीं तो उनमें कीड़ा लगने का भय रहता है, जिससे कपड़े भी नष्ट होते हैं और अनेक रोग भी उत्पन्न होते हैं। सोने का स्थान ऐसा होना चाहिए, जहां स्वच्छ वायु भी पहुँचे और वर्षा के जल से बचाव भी रहे।

आजकल तैल-मालिश करना अच्छा है। यदि महानारायण तैल की मालिश की जाय, तो वायु रोग न होने पाएँगे।

गीले या अध सूखे वस्त्र पहनने से इन दिनों दाद हो जाता है इस का ध्यान रहे। इस महीने में फ्लू सबसे अधिक फैलता है और घरों के आस पास गड्ढों में वर्षा का जो पानी भर जाता है, उसमें फ्लू के मच्छर अण्डे देते हैं। इस कारण रहने केस्थानों के आस पास कहीं भी पानी जमा न होने देना चाहिए। तालाबों, कुओं आदि में चूना या पोटाशियम परमैंगनेट आदि डाल देना चाहिए। मकान के पास भरे हुए पानी पर फिनायल या मट्टी का तेल डाल देना चाहिए। मच्छरों को भगाने के लिए सायं काल धूप जलानी चाहिए उसके अभाव में नीम, पीपल आदि वृक्षों के पत्तों व साधारण घास फूस को ही जलाकर धुआँ कर देना चाहिए, ताकि मच्छर भाग जायें। हवन करने से बड़ा ही लाभ होता है।

रात्रि को मसहरी के भीतर सोना अच्छा है। उसके अभाव में कपड़े से शरीर ढककर सोना चाहिए। इस मौसम में शरीर पर विशेष रूप से हाथों व टाँगों पर सरसों का (कड़ुआ) तेल लगाना अच्छा है। इससे मच्छर भी नहीं काटेंगे।

रोज एक नीबू गरम पानी में निचोड़कर पीना मधु का व्यवहार करने से फ्लू का भय कम रहता है और पेट के रोग भी दूर रहते हैं।

फ्लू से रक्षा के लिए अमृतधारा का प्रयोग लाभदायक होता है यह रोगी के रक्त में मिले हुए फ्लू के कीटाणुओं को नष्ट करती हैं। इसके साथ नींबू का सेवन करने से कब्ज मिटती है। भूख बढ़ती है तथा शरीर में नया रक्त बनकर पूर्ण निरोगता प्राप्त होती है, जिससे फिर फ्लू के आक्रमण का भय नहीं रहता।

वर्षा का दूषित पानी पीने से या अधिक दिन बुखार रहने से इन दिनों में तिल्ली बढ़ जाती है। यदि सिरके के साथ प्याज का सेवन करते रहें तो इस रोग का डर नहीं रहता। यदि तिल्ली बढ़ ही जाए तो बहुत पुराना सिरका भोजन के साथ खाने से शीघ्र कट जाती है। अदरक व हरी मिर्च भी आजकल बहुत ही लाभदायक सिद्ध होती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

जन-ज्ञान-प्रकाशन का ९५वां पुष्प

धर्म का मार्ग

धर्म के १० लक्षणों की सरल
प्रेरक व्याख्या

—लेखक—
श्री पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार

जन - ज्ञान - प्रकाशन
नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूरभाष : ५६६६३६

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

प्रकाशक—
जन-ज्ञान-प्रकाशन
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
नई दिल्ली-५

लेखक—श्री पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार
संपादक—पंडिता राकेश रानी
मूल्य ..... ५० पैसे : जून १९७३

संसार में सत्य-धर्म-ज्ञान का संदेश
प्रसारण के लिए

=

दयानन्द-संस्थान द्वारा प्रकाशित
हिन्दी व अंग्रेजी में अलग-अलग
"जन-ज्ञान" (मासिक) के सदस्य बनिए !

=

वार्षिक मूल्य १२)   आजीवन २०१)

=

संपादक
जन-ज्ञान [मासिक] नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

: एक :

धृति (धैर्य)

मनुस्मृति में धर्म का लक्षण करते हुए मनु महाराज ने लिखा है—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ।

धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध अर्थात् क्रोध न करना ये दस धर्म के लक्षण हैं। इस दश लक्षणों वाले धर्म में प्रथम स्थान धृति या धैर्य को दिया गया है। धैर्य क्या है? इसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि जिन कामों में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है उन सबके प्रति उत्कंठा पूर्ण आनन्द और उत्साह इस के अन्तर्गत आता है। उत्साह में साहस और प्रयत्न दोनों चरम उत्कर्ष पर होते हैं परन्तु उनमें आनन्द का योग भी रहता है। बिना आनन्द के योग के उत्साह नहीं हो सकता। जैसे बिना बेहोश हुए फोड़ा चिरवाने को तैयार होना साहस कहा जायेगा, उत्साह नहीं। इसी प्रकार चुप-चाप बिना हाथ पैर हिलाये घोर प्रहार सहने के लिए तैयार रहना साहस और कठिन से कठिन प्रहार सहकर भी स्वयं उस जगह से न हटना धीरता या धैर्य कहा जायेगा। इसका तात्पर्य यह नहीं कि कठिन प्रहार सहते हुए उस प्रहार की उपेक्षा, उसके प्रति उदासीनता, आलस्य या निठल्लापन धैर्य के अन्तर्गत आयेगा। यह धैर्य के अन्तर्गत नहीं हैं। इसी प्रकार किसी विशेष वस्तु के प्रति, किसी विशेष प्रकार की प्रवृत्ति भी धैर्य नहीं, जैसे कि एक लड़की अपने सीने पिरोने में और एक बालक अपने खिलौने बनाने में प्रकट करता है; परन्तु प्रत्येक विषय में एक सुदृढ़ विचार शीलता, अपनी प्रवृत्ति के माधुर्य के साथ कठिनतम परिस्थितियों में अपनी स्थिर और कोमल शक्ति का परिचय देना धैर्य है। धैर्य का तात्पर्य है विपत्ति के निवारण और शक्ति के सम्पादन के लिए घोर परिश्रम करना और प्रतीक्षा करते हुए सजग, सचेत, क्रियाशील और विवेक पूर्ण बने रहना धैर्य से मनुष्य में निराशा की भावना की समाप्ति होती है और वह अपने को किसी कार्य में लगाता है, उसका अभ्यास बढ़ता है और वह जीवन में परिपुष्ट होता है।

एक था लड़का, निहायत बुद्धू। अपनी अज्ञानता के कारण कदम-कदम पर अपमानित होता था। इस अपमान ने उसे निराश कर दिया। एक दिन वह अपने विद्यालय से भाग कर कुएं पर पानी पीने गया। वहां गांव की औरतें पानी भरने के लिए आतीं। कुएं से पानी खींच कर वे घड़े को पत्थर पर रख देतीं। उस बालक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने देखा कि कुएं की जगत पर, रस्सी की रगड़ से निशान पड़ गये हैं। यही नहीं, जहां पर घड़े रखे जाते हैं, वहां भी गढ्डे पड़ गये हैं। बालक के मन में एक आशा की किरण चमकी और उसने सोचा कि जब मुलायम रस्सी की बार-बार रगड़ और मिट्टी के घड़े से भी पत्थार जैसी कठोर वस्तु पर निशान और गढ्डे पड़ सकते हैं तो सच्ची लगन, निरन्तर परिश्रम से कोई भी व्यक्ति विद्वान् बन सकता है। वह लौट पड़ा, उसने धैर्य और लगन से पढ़ाई शुरू की। यही बालक बड़ा विद्वान् सिद्ध हुआ और इसने देवगिरि नरेश महादेव के दरबार की शोभा ही नहीं बढ़ाई वरन् पाणिनी के कठिन व्याकरण की जगह मुग्ध बोध नाम का संस्कृत का सरल व्याकरण तैयार किया। यही संस्कृत का विद्वान् बोपदेव के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यदि वह निराश होकर घबरा जाता तो जीवन में कुछ न कर पाता। परन्तु, उसने धैर्य से, लगन से विश्व को एक अद्भुत देन दी।

सचमुच धैर्य एक असाधारण गुण है और समस्त मानवता से इस गुण की अपेक्षा भी नहीं की जा सकती। इस गुण को प्राप्त करने के लिए हमें सतत अभ्यास और साधना करनी पड़ेगी। जब मनुष्य इस गुण को प्राप्त कर लेगा, जब वह सतर्कता के साथ स्थिरता और दृढ़ता को अपने में ले आयेगा उस समय सफलता का आनन्द उसके चरणों में लोटने लगेगा। इस गुण के प्राप्त होने पर लोग अपने जीवन और कारोबार में आश्चर्य जनक प्राप्ति कर सकते हैं। आने वाले भयंकर संकटों का सामना इसी गुण से किया जा सकता है। बचपन में पढ़ी हुई एक कहानी याद आ रही है—

किसी पुरुष ने शेर का एक बच्चा पाला हुआ था। एक दिन जब वह पुरुष कुर्सी पर बैठा हुआ पढ़ रहा था वह बच्चा उसके पैरों पर लोटते-लोटते उसे चाटने भी लगा। उसे मानव रक्त का आनन्द आने लगा। जब खून निकलने लगा और उस मनुष्य को कष्ट अनुभव होने लगा तो उसने पैर हटाने की कोशिश की। दूसरी ओर शेर का बच्चा उस पर गुर्राया और अपने जबड़ों में कसकर उसे चाटता रहा। इस समय यदि वह मनुष्य घबरा जाता और उतावलेपन में आकर कोई कार्य करता तो यह निश्चित था कि वह शेर का बच्चा उसे साफ कर जाता परन्तु उसने कष्ट सहा, धैर्य रखा और स्थिरता के साथ अपने पुत्र को संकेत से बुलाया और सारी स्थिति समझाई। पुत्र ने बन्दूक लाकर शेर के बच्चे को मौत के घाट उतार दिया और अपने पिता के प्राणों की रक्षा की।

इस प्रकार विपत्ति के समय अपने ऊपर नियन्त्रण रखना और उस विपत्ति से विचलित हुए बिना खतरों से उचित साधनों द्वारा लोहा लेना भी धैर्य है। जो व्यक्ति उतावलेपन में आकर जल्दीबाजी से काम करते हैं वे जीवन में कभी सफल नहीं हो सकते। भले ही वे किसी राज्य के अधिकारी हों, शासक हों या अप्रतिम नेता हों। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं। साम्राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा को उतावलेपन में शीघ्र पूरा करने की कामना से अधीर होकर नैपोलियन का रूस पर आक्रमण करने का परिणाम केवल उसकी पराजय में ही प्रकट नहीं हुआ अपितु उसे उस युद्ध में इतनी क्षति उठानी पड़ी कि अन्त में पराजित होकर अंग्रेजों का बन्दी बनकर घुड़साल में उसे अपने प्राण देने पड़े। क्या आप यह नहीं जानते कि इंग्लैंड कभी युद्ध में पराजित नहीं हुआ? दूसरा एक मात्र कारण इंगलैंडवासियों का अटूट धैर्य है। १९३९ ई० के विश्व युद्ध में जर्मनी ने इंगलैंड पर आक्रमण किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इंगलैंड की सेनाओं को सभी दिशाओं में पीछे हटना पड़ रहा था। इधर स्वयं उसकी मुख्य भूमि पर जर्मनी के तीन-तीन चार-चार हजार जहाज एक साथ आक्रमण कर रहे थे। उस समय भी वहाँ की जनता तथा नागरिकों, शासकों तथा नेताओं ने जिस धैर्य का परिचय दिया उसी के परिणाम स्वरूप इंगलैंड की विजय हुई।

धीरज, धैर्य या धीरता का विपरीत गुण उतावलापन और निराशा है। जिस मनुष्य में धीरज न होगा वह अपने ऊपर नियन्त्रण न रख सकेगा और उस दशा में या तो वह जल्दबाजी में कोई ऊटपटांग कार्य कर बैठेगा या वह निराश हो जायेगा। यदि हम मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उतावलेपन का विश्लेषण करें तो पता लगेगा कि यह निराशा के कारण उत्पन्न होने वाला दुर्गुण है। निराशा मानव का सबसे बड़ा शत्रु है और ईश्वर का अभिशाप है। मनुष्य की ईश्वरीय शक्तियों के नाश का यही कारण है। इस घातक बीमारी के विष से अधिकतर मनुष्य घायल हैं। यह मनुष्य के तन-मन दोनों पर आक्रमण करती है। इस बीमारी का सामना धैर्य, अदम्य आत्म-विश्वास और स्थिरता से ही किया जा सकता है। वास्तव में मनुष्य जिस क्षण निराशा के वश में हो जाते हैं तभी से उनकी सभी मानसिक शक्तियां दब जाती हैं। उनमें पारस्परिक सहयोग नहीं बनता और पारस्परिक सहयोग के अभाव में प्रतिभा कुन्द हो जाती है, प्रतिभा कुन्द होने से कार्य क्षमता समाप्त हो जाती है, कार्यक्षमता की समाप्ति के परिणामस्वरूप मनुष्य ऊटपटांग, जल्दबाजी, उतावलेपन की क्रियायें करने लगता है। इसके विपरीत धैर्य मन का सम्राट् है। यदि आप में धैर्य होगा तो कठिनाइयों के समय आपकी आत्मा ठीक मार्ग निर्देश करेगी और उसके बताये हुए रास्ते पर आशा तथा विश्वास के साथ चलते हुए हमें कोई कठिनाई रोक न सकेगी।

इसलिए उठिए—निराशा को अपने अन्दर से निकाल वाहर फेंकिए। परिस्थितियों को कोसना छोड़कर साहसी और सफल जीवन बनाकर दिखाइए। आईए अपने आप से कहिए 'मैं ईश्वरीय अंश हूँ, फिर मुझे निराश होने का कोई कारण नहीं। मेरा निराश या निरुत्साहित होना ईश्वर को कभी स्वीकार नहीं। मैं जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आया हूँ न कि पराजय और असफलता के लिए। मैं स्वयं विजय हूँ। मैं जीवन जीतने के लिए आया हूँ न कि पराजय और असफलता के लिए। मेरा जीवन प्रसन्नता, शान्ति और उत्साह के लिए है न कि दुःख, चिन्ता या निराशा के लिए। मेरे भीतर कोई मुझसे कहता है कि "मैं परिस्थितियों से महान् हूँ और मेरी निर्धनता और विनाश का कारण मेरे सिवाय और कोई नहीं हो सकता।" वेद में कहा है—

अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन।
सोममिन्मा सुन्वतो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन।

मैं ऐश्वर्य सम्पन्न, सर्व प्रकाशक, कभी किसी से पराजय को प्राप्त नहीं होता हूं। और न कभी मृत्यु को प्राप्त करता हूं। मैं अमर हूं। धनादि ऐश्वर्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए तुम धन और ऐश्वर्यों को प्राप्त करो। मेरी मैत्री में तुम्हें कष्ट न होगा।

इस प्रकार ऊंचे प्रकार की समृद्धि और जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए, उपयोगिता और सामर्थ्य पैदा करने के लिए हमें आत्मनियंत्रण द्वारा धैर्य रख सकने की क्षमता प्राप्त करनी चाहिए। संसार में विचारशील मनुष्य सहिष्णु और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धैर्यशाली होने हैं। संसार में मनुष्य के सामने विपत्तियां और कठिनाइयां आती हैं। उनसे मन विकृत होता है। हृदय को कष्ट पहुँचता है। ऐसे समय यदि मनुष्य अपने में धैर्य लाकर अपने हृदय में उन कष्टों के सहन करने की क्षमता प्राप्त कर ले तो मनुष्य का मानसिक सौन्दर्य बढ़ता है। एक व्यक्ति ने लिखा है "प्रत्येक क्रुद्ध बिल्ली गुर्राती है क्योंकि ऐसा करने में कोई खास कोशिश नहीं करनी होती है, परन्तु अन्त में धैर्य की विजय होती है। जिस प्रकार कोमल जल अपने निरन्तर प्रवाह से सख्त चट्टान को घिस डालता है, उसी प्रकार धैर्यवान् व्यक्ति समस्त विरोधियों के समक्ष विजयी होता है। धैर्य से लोगों के हृदय जीते जा सकते हैं। धैर्य ही वास्तविक विजेता और नियन्ता है।" एक दूसरे स्थान पर उल्लेख किया गया है 'शान्त चित्तता धैर्य की साथी है। यह एक ऐसा शान्त स्वर्ग है जहाँ वासनाओं के तूफानी सागरों में भटकने के बाद मुक्तात्माओं का निवास होता है। शान्त चित्त होना इस बात का द्योतक है कि व्यक्तियों ने बहुत पीड़ायें सही हैं, बहुत कुछ अनुभव किया है और अन्त में विजय प्राप्त की है।"

इस प्रकार धैर्यशाली और शान्तचित्त व्यक्ति सुखी और विजयी तो होता ही है, उसमें दूसरी क्षमतायें भी उत्पन्न होती हैं। चिड़चिड़े, उतावले और कायर व्यक्ति जिस काम को बहुत कष्ट से तथा शोर शराबा मचाकर भी मन्द गति से सम्पन्न करते हैं, शान्तचित्त लोग उसी कार्य को अपने विश्वास, इच्छाशक्ति और कर्मतत्परता से अधिक तेजी के साथ अनायास और मौन रहकर संपन्न कर लेते हैं।

अतः आत्मा की उन्नति की राह में जो भी रोग या बाधायें आएँ आप उनसे घबराइए मत, उतावले मत बनिए, उन्हे धैर्य के साथ परे हटा दीजिए। हम आपसे कहेंगे कि प्रत्येक कार्य को इस प्रकार काजिए जैसे आप किसी कठिन कार्य को करने के लिए कटिबद्ध हैं और कठिन कार्य को इतनी स्थिरता, दृढ़ और शान्तचित्तता से कीजिए कि जैसे आप कोई बहुत सरल कार्य कर रहे हैं। याद रखिए कल्पना इच्छा शक्ति की सहायिका है। दृढ़ विचारों के निर्माण में इसका सहायता लीजिए। अपने अन्दर धैर्य लाने के लिए और निर्बलता से बचने के लिए सदा सोचिए कि आप शान्ति, निर्भयता, साहस, हिम्मत, आशा, कार्यकुशलता का मूर्ति हैं और उस मूर्ति को उन सारे गुणों से सजाइए जिनके धना आप बनना चाहते हैं। कल्पना में देखिए कि कठिन से कठिन परिस्थितियों का मुकाबला आप बहुत योग्यतापूर्वक, सुचारू रूप से और सफलता के साथ कर रहे हैं। आप में घबराहट नहीं आयेगी। आप अपने लक्ष्य का स्पष्ट चित्र बनाइए और अपने विचार, लक्ष्य, इच्छा और आकांक्षाओं को उसकी प्राप्ति में लगा दीजिए। हम अपने अन्दर धैर्य, दृढ़ता और चरित्र लाने के लिए अभ्यास भी कर सकते हैं। नीचे लिखे प्रश्नों में से जिस प्रश्न का उत्तर आप "हाँ" में दें वह प्रश्न आपकी कमजोरी, अधीरता और अपरिपक्वता का सूचक है। उसका आप सुधार कीजिए। आपका जीवन एक दृढ़, निर्भीक, शान्त और धार्मिक व्यक्ति का जीवन होगा।

(१) क्या क्रोध आपको शीघ्र आता है ?
(२) क्या आप शीघ्र बहस करने लगते हैं ?
(३) क्या आप उत्तेजना और घबराहट के शिकार हो जाते हैं ?
(४) क्या आप अपना निर्णय जल्दी में देते हैं ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(५) क्या आप अपनी आलोचना सुनकर उत्तेजित हो जाते हैं ?
(६) क्या आप घबराहट में कामों को टालते हैं ?
(७) क्या आपका स्वभाव चिड़चिड़ा है ?

'विपत्ति में धैर्य ही हमारा सच्चा मित्र है' यह हमारा मंत्र है ।

: दो :

वीरस्य भूषणम् क्षमा

मनु महाराज द्वारा प्रतिपादित धर्म के दस लक्षणों में धैर्य के बाद क्षमा का स्थान है । क्षमा को हम अहंकार का विपरीतार्थक समझ सकते हैं । मनुष्य के पास ऐश्वर्य और शक्ति आ जाती है तव उसमें मादकता का समावेश हो जाता है और इस मादकता से उन्मत्त हुआ मनुष्य कर्त्तव्याकर्त्तव्य को भूल जाता है । मान, मत्सर इत्यादि टेढ़ी वृत्तियां उसके हृदय में उदित हो जाती हैं । इन टेढ़ी वृत्तियों के उदय से मनुष्य की चाल भी टेढ़ी हो जाती है । ऐश्वर्य की मदिरा से उन्मत्त मनुष्य दरिद्रों और निर्बलों का तिरस्कार करता है । गरीबों पर हाथ उठाता है । मर्यादा का उल्लंघन करता है । इस ऐश्वर्य के मद में मत्त मनुष्य को दयालु, क्षमाशील परमेश्वर के दर्शन कैसे हो सकते हैं ? कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी पुस्तक 'गीतांजलि' में लिखा है—

Pride can never approach to where those walkest in the clothes of the humble among the poorest and lowlist and lost.

अर्थात् "अहंकार की वहां पहुँच नहीं जहां दीनातिदीन नीचातिनीच नष्ट-भ्रष्टों के बीच में तू विचरता है ।" इस प्रकार क्षमा अहंकार का उल्टा गुण है ।

'क्षमा शक्तौ" रघुवंश में दिलीप के लिए कालीदास ने यह वाक्य लिखा है अर्थात् शक्ति होते हुए भी उसमें क्षमा थी । बिना शक्ति के क्षमा, क्षमा नहीं कायरता है । कायरता उस अवस्था में कहलायेगी जव हम शक्तिहीन होने के कारण डर करके किसी के प्रति उसके दोष और उसके अत्याचारों का विरोध नहीं कर पाते तो यह क्षमा, क्षमा नहीं ।

'क्षमा' वह गुण है जो किसी दुष्ट व्यक्ति को दंड देने का सामर्थ्य और शक्ति रहते हुए भी बिना दंड दिये उसे रास्ते पर लाने में समर्थ हो सकती है । महाराष्ट्र में एक वहुत बड़े सन्त हुए हैं । उनका नाम था एकनाथ । बड़े ऊँचे दर्जे के आदमी थे । सवसे प्यार करते थे । जिसकी जो भलाई हो सकती थी करते थे । उनका नियम था कि वे प्रतिदिन प्रातःकाल नदी पर स्नान के लिए जाते थे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नदी के पास एक आदमी रहता था। वह छोटी प्रवृत्ति का था। एकनाथ जी की धर्म में श्रद्धा देखकर उसे अखरने लगा और एक दिन जब वे नदी से नहा कर लौट रहे थे उसने उन पर कुल्ला कर दिया। एकनाथ मुस्कराये और नदी में फिर नहा आये। उनके साथ उनके भक्त भी थे। उन्हें क्रोध आया पर महाराज ने उन्हें रोक दिया।

इसके बाद तो वह आदमी रोज करता क्या कि जैसे ही वे नहा कर आते उन पर कुल्ला कर देता पर एकनाथ तनिक भी न झुंझलाते। मुस्कराकर उनकी ओर देखते और फिर अपने भक्तों के साथ नहा कर चले जाते। एक दिन उस दुष्ट ने बहुत बार उन पर वैसा ही किया तब भी अपने भक्तों को उसे न मारने का उपदेश देते हुए वे मुस्कराते ही रहे। इस पर उस आदमी को अपने किये कर्म पर शर्म अनुभव हुई और वह उनके पैरों पर गिर पड़ा। एकनाथ ने उसे उठा लिया और छाती से लगाते हुए बोले "भैया, तुम बड़े अच्छे हो। रोज मुझे दो बार गोदावरी मैया में नहाने का पुण्य मिलता था। आज एक सौ आठ बार मिला।" परन्तु उनकी क्षमा ने उस दुष्ट के जीवन को बदल दिया।

शिवाजी महाराज के जीवन की एक घटना है कि एक सरदार ने उस समय के नियम के अनुसार लड़ाई की लूट में कल्याण के सूबेदार की खूबसूरत बहू को पकड़ा और उसे शिवाजी को समर्पित कर दिया। मगर नवयुवक शिवाजी ने मन में किसी तरह के पाप या बदले की भावना को स्थान न दिया। उन्होंने शत्रुओं की किसी भी बात की परवाह न की। उन्होंने उसे बहन माना और भाई की तरह से भेंट के तौर पर दो गांव इनाम में देकर बड़े सम्मान के साथ उसे उसके घर भेज दिया। उस युवती के रूप लावण्य को देखकर उन्होंने इतना ही कहा "अगर मेरी माँ इतनी खूबसूरत होती तो मैं भी खूबसूरत होता।"

यह एक उच्चकोटि का चरित्र, विशिष्ट सहानुभूति और अद्‌भुत क्षमा का उदाहरण है। क्षमा का सीधा संबंध हमारी विशालहृदयता से है। जिस किसी का चरित्र उत्तम, उदार, दया और क्षमा से परिपूर्ण है, उसमें एक विशेष प्रकार का आकर्षण और प्रभाव होता है।

चीन के एक सम्राट् को जब यह सूचना मिली कि उसके शत्रुओं ने एक स्थान पर विद्रोह कर दिया है तब उसने अपने सैनिकों को संबोधित करके कहा मेरे साथ चलो "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि हम अपने शत्रुओं का नाश किये बिना दम न लेंगे।" उसके वहाँ पहुँचते ही विद्रोही दब गये और उनके प्रति सम्राट् ने दयालुता, उदारता, अपनत्व का व्यवहार किया। सम्राट के इस व्यवहार को देखकर एक अफसर चिल्लाया "राजन्! क्या आप इसी प्रकार शत्रु नाश की अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेंगे। आप ने उन्हें नष्ट करने का प्रण किया है पर आप ने उन्हें क्षमा कर दिया।" सम्राट् मुस्कराये और चुप रहे। किन्तु उस अफसर के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने कुछ दिनों के बाद देखा कि वे ही सैनिक जो पहले विद्रोही थे अब उसके भाई बन गये थे। संसार में बुराई भलाई द्वारा जीती जा सकती है।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन 'क्षमा' पूर्ण जीवन का एक साक्षात् उदाहरण है। उन्हें अनेक बार विष दिया गया, पत्थरों से मारा गया, तलवारों से हत्या करने की चेष्टा की गई पर शक्ति होते हुए भी स्वामी जी ने सबका अपना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उदारता से क्षमा कर दिया। विष देने वाले को यह कहते हुए कि "मैं संसार को बन्धन में डालने नहीं मुक्त कराने आया हूँ," धन देकर दूसरे देश में जाने की सलाह दी।

स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी ने हमें यह विचारने की प्रेरणा दी कि 'मारने से बच्चा सुधरता है या बिना मारे समझाने से ? घोड़ा चाबुक लगाने से काबू में आता है या उसे समय पर दाना देने या खरेरा करने से ? क्षमा की शक्ति अधिक या शस्त्र की ? प्रेम बलवान है या प्रहार ? महात्मा गांधी और स्वामी दयानन्द के ही नहीं महापुरुषों के हृदय सागर के समान विशाल होते हैं। उनमें किसी को हानि पहुँचाने की भावना का लवलेश भी नहीं रहता । यदि वे किसी को याद भी रखते हैं तो बदला लेने की भावना से नहीं, क्षमा करने के लिए। महर्षि की क्षमा के परिणाम स्वरूप अनेक व्यक्ति जो उन्हें हानि पहुँचाने आये थे उनके भाई बन गये।

बंगाल में चैतन्य महाप्रभु नाम के एक बड़े सन्त हुए हैं। एक दिन चैतन्य अपने शिष्यों के साथ कीर्त्तन करते हुए मार्ग में जा रहे थे। झाँझ और मृदंग का घोष हो रहा था। सब लोग मस्त हो रहे थे।

ओ३म् बोल ! ओ३म् बोल ! भव सिन्धु पार चल। इस प्रकार का नाद आकाश में गूँज रहा था। इतने में दो दुष्टों ने आकर चैतन्य के सिर पर प्रहार किया। रक्त बह निकला। चैतन्य का ब्रह्मचारी शिष्य उन दुष्टों की ओर दौड़ा। परन्तु, महान् चैतन्य बोले "निताई उन्होंने भले ही मुझे मारा हो, मैं तो उनसे प्रेम का व्यवहार करूँगा।"

भजन चलता रहा। सब लोग नाच रहे थे। 'ओ३म् बोल' 'ओ३म् बोल' 'हरि बोल' 'हरि बोल' के नाद से आकाश गूंज रहा था। चैतन्य के सिर से खून बह रहा था। उनकी क्षमा प्रभाववती सिद्ध हुई और वे दोनों दुष्ट भी उनके साथ नाचने लग गये, उनके भक्त बन गये।

प्रेम से प्रभावति होकर पशु भी क्रुरता भूल जाते हैं। एंड्रोक्लीज और शेर की कहानी प्रसिद्ध ही है कि उसकी सेवा से, प्रेम से, क्रूर पशु सिंह भी उसके बिल्कुल वश में आ गया था।

वेस्पेशियन नामक रोम सम्राट् वड़ा वीर और कुशल शासक था। उसने दस वर्ष तक शासन किया और प्रजा को हर प्रकार से शासन में रखने का प्रयत्न भी। कुछ व्यक्तियों ने उसे मारने का षडयंत्र किया। षड्यन्त्रकारी पकड़े गये। सम्राट् ने उन्हें क्षमा करके कहा 'यदि मेरे शत्रुओं को यह ज्ञात होता कि मैं इस उच्च पद पर रहते हुए कितना चिन्तित और व्याकुल रहता हूँ तो वे मुझसे इतनी ईर्ष्या न करते कि मेरी जान लेने के लिए ही उतारू हो जाते।' इस क्षमाशीलता का यह फल हुआ कि उसने सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक शासन किया और प्रजा को सुखी रखा।

क्षमा का तात्पर्य सनक या कमजोरी भी नहीं है। विपत्ति या शत्रु को देखकर भाग जाना क्षमा नहीं। यदि शत्रु के सामने खड़े होने की तैयारी न हो तो उसके ऊपर प्रहार की तैयारी से खड़े रहो। लेकिन भाग जाना पूरी तरह त्याज्य और निन्द्य है। गांधी जी ने एक बार कहा था कि यदि आप शस्त्रों से स्वराज ले सकते हैं तो ले लीजिए गुलाम मत रहिए। क्षमा करते हुए यह भी ध्यान रखने की बात है कि उसकी भी सीमा होती है। यदि क्षमा का उद्देश्य अपने को बचाना भर हो तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्षमा से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है और क्षमा करने वाला न केवल अपनी अपितु समाज की भी हानि कर बैठता है। पृथ्वीराज और मुहम्मद गौरी की लड़ाई इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। पृथ्वीराज ने शक्ति रहते हुए भी गौरी को इक्कीस बार क्षमा किया और उसके बाद मुहम्मद गौरी ने जो व्यवहार किया वह इतिहास का एक काला पृष्ठ है और क्षमा की सीमा भी बताता है। भारतवर्ष का इतिहास ही बदल गया। क्षमा के द्वारा जब काम चलाना बन्द हो जाय उस समय बल का प्रयोग आवश्यक है और उसका उपयोग करना चाहिए।

क्षमा के विषय में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मनुष्य कभी-कभी जान बूझकर नहीं अनजाने में अपराध कर जाता है। ऐसे समय उसकी भूलों के लिए कठोर दंड देना उचित नहीं।

कुछ दिन पहले की बात है। मैंने एक लेख कुछ पुराने से कागजों पर लिखा था। कागज प्रायः मेरी पत्नी जलाने के लिए प्रयोग में ले आती है। उसकी देखा-देखी छोटा लड़का भी वैसा ही करने लगता है। इस लेख का यह हुआ कि जब पत्र में भेजने के लिए उसे खोजने लगा तो वह न मिला। आखिर जब भोजन के लिए रसोई घर में गया और थाली परोस कर मेरे सामने आई, मेरी दृष्टि समीप पड़े एक अधजले कागज पर गई। अरे, यह तो वही कागज है जिस पर मैंने लेख लिखा था। पत्नी ने बताया कि यह तो मुन्ने ने खेल-खेल में गन्दा कागज समझ कर जला दिया है। पर, मेरे क्रोध का ठिकाना न रहा। मैं आपे से बाहर हो गया। सहिष्णुता समाप्त हो गई। जोर-जोर से गरजने लगा। यह भी भूल गया कि यह छोटा बच्चा लेख, नोट, रद्दी कागज में कोई भेद न करता होगा। तब इस पर क्रोध से क्या लाभ ? और इस पर कितना भी क्रोध करूं, वह दुबारा ठीक तो हो नहीं जायेगा। इस पर क्रोध से क्या लाभ ? पर, मेरी तो बुरी हालत थी। मैंने क्रोध में उसे दो-चार थप्पड़ भी जमा दिये। वह रो पड़ा। पर, क्या उस बच्चे ने उस मार का कारण उस समय समझा होगा ? क्या उसका यह अपराध—यदि अपराध था भी तो दंडनीय था ? यह मैंने नहीं समझा। हम विद्यालयों में घर पर बच्चों को पाठ याद न करने और काम करने के लिए बुरी तरह दंड देते हैं। क्या यह उचित है ? यह हम नहीं समझते। मैं भी रात को जब बिस्तर पर सोने गया तो मन में मुझे बहुत पछतावा हुआ। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मेरा लेख कोई न्यूटन का आविष्कार या कार्लाइल का साहित्य तो था नहीं जिसके अचानक अबोध बालक द्वारा जला दिये जाने पर मुझे बिगड़ना और उसे दंड देना चाहिए था।

न्यूटन के जीवन की वह घटना मुझे याद आई जब उसने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का शोध किया और दुनिया को एक नई दृष्टि दी। उसके घर में एक कमरा था, जिसमें उसके प्रयोग चलते थे। बरसों से वह एक यन्त्र के कुछ आंकड़ों का रिकार्ड रख रहा था और एक ग्राफ बना रहा था। उस ग्राफ का कागज वर्षों से सुरक्षित रखा हुआ था। पुराना दीखता था। पुराना नौकर चला गया। नया नौकर अपने मालिक की सेवा पूरी ईमानदारी से कर रहा था। उसने एक पुराने कागज पर धब्बे लगे देखे। सोचा मालिक को नया कागज निकाल कर इस्तेमाल करने की शायद फ़ुरसत ही न मिली हो, उसने उसे हटाकर नया लगा दिया और उसे फाड़-फूड़कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न्यूटन ने जब कागज के बारे में पूछा तो उसने नया कागज लगाने का कारण बताया। उसने पुराना कागज फाड़-फूड़कर फेंकने की बात भी बताई।

न्यूटन के पैरों तले जमीन खिसकने लगी। पर, उसने नौकर की अज्ञानता और अपने प्रति प्रेम देखकर भूल के लिए क्षमा करते हुए कहा "भाई, मेरी भारी हानि हो गई। बरसों की मेहनत खाक में मिल गई। पर, खैर, भगवान् जो करते हैं ठीक करते हैं।"

कार्लाइल अंग्रेजी साहित्य के मशहूर लेखक हो चुके हैं। इन्होंने फ्रांस की राज्य क्रांति पर एक ग्रन्थ लिखा और उसकी पांडुलिपि अपने दोस्त को देखने को दी। एक दिन जब वह पांडुलिपि वापस माँगी तो उसने अपनी पत्नी से उसे लौटाने को कहा। खोजने पर वह कहीं नहीं मिली। काफी देर तक पूछताछ करने के बाद मालूम हुआ कि एक नौकरानी ने मेज के नीचे उसे पड़ा हुआ देखा और यह समझा कि यह रद्दी कागज का गट्ठा होगा। उसे रसोईघर के हवाले किया। वह जलकर राख हो गया।

कार्लाइल को इसका कितना दुःख हुआ होगा पर उसने बिना झुंझलाये उसे क्षमा कर दिया। उसने पुनः वह पुस्तक लिखी।

इस प्रकार मनु महाराज ने क्षमा को भी धर्म का एक अंग बतलाया है। हमें लोभ, नीचता, ईर्ष्या, विद्वेष और सन्देह जैसे दुर्गुणों से मुक्त रहना चाहिए। क्रोध को क्षमा के शीतल जल से शान्त करना चाहिए। कुछ ऐसे कार्यों को जिनका हमें बाद में पश्चात्ताप करना पड़ता है (वे काम निर्दयता के होते हैं) छोड़ना चाहिए। जीवन में वे क्षण अवश्य आते हैं जब निर्दयतापूर्ण कार्यों के लिए हमें पश्चात्ताप करना पड़ता है। अतः क्षमाशील बनिए। 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' क्षमा वीरों का आभूषण है।

: तीन :

दमन

मनु महाराज के बताये हुए धर्म के दश लक्षणों में दम और इन्द्रिय निग्रह दो शब्दों का प्रयोग किया गया है। दमन शब्द से मतलब है कि मन को दमन करके संयम में रखना। जो व्यक्ति मन का दमन कर लेगा वह धर्मात्मा होगा यह निर्विवाद हैं। मन बड़ा शक्तिशाली है। गीता में मन के लिए कहा गया हैं "मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः" अर्थात् मन ही मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का कारण है। मन साधारण नहीं। हमारे शरीर के सब कार्यों का संचालक और नियन्त्रक मन है। यह मन जागते हुए, सोते हुए, सभी समयों पर हमारे कार्यों का संचालन करता है। यह मन सोते, जागते, उठते, बैठते हर समय नई से नई दुनिया बनाता ही रहता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह कभी शांत नहीं रहता। बन्दर के समान कभी इधर, कभी उधर दौड़ता भागता फिरता है। यह चाहे तो मनुष्य को देवत्व तक पहुंचा दे और चाहे तो उसे समुद्र में ले जाकर डुबा दे। यह मन किस तरह कार्य करता है इस प्रक्रिया को समझ लेना आवश्यक है। मन शब्द का ऐसे समय जब प्रयोग किया जाता है तब मन का अभिप्राय केवल मन नहीं, अपितु बुद्धि तथा चित्त से मिला हुआ मन अभिप्रेत है। मन अकेला तो कुछ भी नहीं। इसका काम तो ग्रहण करना और छोड़ना है। जब मन किसी इन्द्रिय द्वारा किसी वस्तु या विषय का ग्रहण करता है तो उसे तत्काल बुद्धि के पास पहुँचा देता है, वह वस्तु अच्छी है या बुरी, उचित है या अनुचित, मर्यादित है या अमर्यादित इसका नियन्त्रण मन नहीं करता, बुद्धि करती है। यदि बुद्धि का निश्चय यह हुआ कि वस्तु ठीक है तब चित्त उसे ग्रहण कर लेता है और इस प्रकार संसार का निर्माण होने लगता है। अब बुद्धि द्वारा प्रभावित, चित्त द्वारा गृहीत वस्तुओं को प्राप्त करने की योजनायें बुद्धि बनाने लगती है। यदि वह वस्तु मिल गई तो ठीक। यदि न मिली तो हम में क्रोध उत्पन्न होता है और यह क्रोध बुद्धि के अत्यन्त सूक्ष्मः तन्तुओं को जला देता है। उनके जलने से मनुष्य नाश की ओर जाता है। अत मनुष्य को नाश से बचने के लिए जड़ मन पर अधिकार करना चाहिए। यदि वह वश में हो गया तो संसार के सभी कार्य सिद्ध हो सकते हैं। अथर्व वेद में मन के लिए कहा है—

कथं न रमते मनः

मन तो कभी दम नहीं लेता। आप इसे वश में करके अच्छाई की ओर लगा सकते हैं और आप चाहें तो इसे बुराई की ओर लगा सकते हैं। ऋग्वेद में कहा है—

स्थिरं मनश्चकृषे जातमिन्द्र
वेषीदेकते यूथये भूयसश्चित्। ऋ० ५.३०.४

अर्थात् भगवान् इन्द्र की इच्छा करने वाले ! यदि तू समर्थ होकर मन को स्थिर करे, तो तू अकेला ही बहुतों (अनेक विघ्न बाधाओं) को युद्ध में जीत सकता है।

एक जहाज पर एक पंजाबी सैनिक किसी बुरे रोग से रोगी हो गया। डाक्टर ने उसके लिए अन्तिम आज्ञा दी कि उसे जहाज से समुद्र में फेंक दिया जाय। डाक्टर, हां, डाक्टर भी कभी-कभी मौत का दंड दिया करते हैं। सैनिक को इसका पता चल गया। कभी-कभी विपत्ति से घिरने पर साधारण व्यक्ति भी निडर हो जाता है। उसके मनमें दृढ़ता आ जाती है। उसका मन प्रबल हो जाता है। उस समय उसका ध्यान केन्द्रित होकर मन को किसी एक ओर नियन्त्रित कर देता है। दूसरे शब्दों में मन का दमन या नियन्त्रण शरीर की सभी शक्तियों को एक दिशा में प्रेरित कर कार्य करने के लिए समर्थ बना देता है। वह सैनिक मन की इसी अन्तःशक्ति से उत्साहित होकर निर्भय हो गया। डाक्टर के सामने सीधा पहुँच कर उसने अपनी पिस्तौल उसकी छाती की तरफ तान दी और कहने लगा कि तुमने मुझे बीमार कहा है? मैं तुम्हें गोली से उड़ा दूंगा।" इतना सुनने की देर थी कि डाक्टर ने उसे स्वस्थ होने का प्रमाणपत्र दे दिया। इस प्रकार स्थिर एवं केन्द्रित मन अनेक साहसिक कार्य कर दिखाता है। इस मन में तरंगवत् अनेक संकलन और विकलन उठते रहते हैं। इन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तरंगों को न उठने देना, इनका दमन करना साधारण काम नहीं। वासिष्ठ उत्पत्ति प्रकरण सर्ग १११ में कहा गया है:—

भीमः संभ्रम दायिन्यः
संकल्प कदनादिमा। ।
विपदः संप्रसूयन्ते
मृगतृष्णामराविव ।

अर्थात् संकल्प रूपी क्लेश से भयंकर अनेक संभ्रम को देने वाली विपत्ति इस प्रकार उत्पन्न होती है जैसे मरुस्थल में मृगतृष्णा की नदियां। यह मन कभी इधर-उधर की व्यर्थ की बातें भी सोचने लगता है। कभी आकाश महलों का निर्माण भी किया करता है।

उस कुम्हार की कहानी तो आपने छुटपन में पढ़ी ही होगी जो अपने मटकों को एक के ऊपर एक सजाकर सोते समय सोचने लगा "इन मटकों को कल के मेले में बेचकर काफी पैसे कमाऊंगा। उन पैसों से मिठाई की एक छोटी-सी दुकान खोलूंगा। उसमें खूब आमदनी होगी। व्यापार करूंगा और धीरे-धीरे एक बड़ा सेठ-साहूकार बन जाऊंगा। बहुत-से लोग शादी के लिए मेरे पास आने लगेंगे। एक अच्छी लड़की चुनकर विवाह भी कर लूंगा। उस पर मैं अपना खूब रोब रखूंगा और कभी यदि उसने मेरा जरा-सा अपमान किया तो उसे ऐसी लात जमाऊंगा।" पड़े-पड़े उसे नींद भी आ गई थी। लात मारने का स्वप्न देखते समय उसे इतना जोश आ गया कि सोते-सोते ही उसकी लात सचमुच चल गई। सारे घड़े भड़-भड़ाकर नीचे गिरे और फूट गये। इस समय उस कहानी को पढ़ कर उस कुम्हार पर रहम भी आया। किन्तु जब हम दुनिया पर दृष्टि डालते हैं तो हमें ऐसे बहुत-से व्यक्ति दिखाई देते हैं जो मनके लड्डू खाते हुए लंबी-चौड़ी योजनायें बनाते हैं, भविष्य के सुनहरे सपने देखकर खुश होते हैं परन्तु उनके गे स्वप्न मृग तृष्णा के समान नष्ट हो जाते हैं, इसलिए मन का दमन कर उसे वश में कर ऐसे भ्रमण से रोकना भी चाहिए। उसे व्यर्थ के कल्पना जगत् में उड़ने न देकर उस पर नियन्त्रण भी स्थापित करना चाहिए।

मन का दमन या नियंत्रण साधारण बात नहीं। मन अत्यन्त शक्तिशाली है। नियंत्रण की इच्छा वाले व्यक्ति भी घबरा जाते हैं। भगवान् राम ने कितनी आतुरता से ऋषि से कहा था—

कथमस्यातिलोलस्य वेगोवेगैककारणम्
चलतो मनसो ब्रह्मन् बलतो विनिवार्यते।

हे भगवन्! अति चंचल जो यह मन है, उसका वेग संपूर्ण तीव्र वेगों का मुख्य कारण है, उसे बलपूर्वक भी कैसे निवारण किया जाये, कैसे वश में किया जाये, कैसे उसका दमन किया जाये ?

इस प्रश्न को सुनकर और उसकी यथार्थता का अनुभव कर वसिष्ठ ने कहा—

नेह चंचलता हीनं मनः क्वचन दृश्यते
चंचलत्वं मनो धर्मो वह्ने धर्मो यथोष्णता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हे राम ! इस ब्रह्माण्ड में चंचलता से शून्य मन तो कहीं भी नहीं दीख पड़ता। चंचलता मनका ऐसा धर्म है जैसे अग्नि का धर्म उष्णता है। योग वासिष्ठ में तो यहाँ तक कहा गया है—

अप्यब्धि पानान्महतो सुमेरून्मूलनादपि
अपिवह्नयशनात् साधो विषमश्चित्त निग्रहः।

समुद्र को पी डालने से, सुमेरु पर्वत उखाड़ डालने से या फिर दहकते हुए अंगारों को सटक लेने से भी हे साधो ! इस चित्त का निग्रह अत्यन्त कठिन है ।

सचमुच, आग बुझाई जा सकती है, समुद्र को सरलता से पिया जा सकता है, बड़े बड़े पर्वतों को जीता जा सकता है पर मनको जीतना उतना आसान नहीं, उतना सरल नहीं।

स्वामी रामतीर्थ ने मन के बल और उसकी शक्ति को जानने के लिए एक बार प्रयत्न किया। एक दिन नींबू खाने की उनकी इच्छा हुई। उन्होंने नींबू लेकर उसे काटा, उसमें नमक मिलाया, उनकी नींबू खाने की प्रबल अभिलाषा ने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट किया। उन्होंने निश्चय किया कि मन ! आज देखता हूँ कि तू जीतता है या मैं ? तू नींबू खाना चाहता है और मैं नहीं। मन ने जोर मारा, नींबू हाथ में लिया। मुख में निचोड़ना ही चाहते थे कि उन्होंने कहा नहीं खाऊँगा, नहीं खाऊँगा, नहीं खाऊँगा। जीभ में पानी आ गया। आंखे विचित्र हो गईं। मन और रामतीर्थ का संग्राम छिड़ गया। रामतीर्थ पराजित होने वाले ही थे कि उन्हें एक उपाय सूझ गया और उन्होंने यह कहते हुए कि 'न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी' नीबू को उठाकर फेंक दिया। क्या करते ! यदि ऐसा न करते तो उनकी पराजय निश्चित थी। जब स्वामी राम जैसा शक्तिशाली व्यक्ति मन से पराजित हो सकता है तो हमारी और आपकी बिसात ही क्या ?

प्रश्न उठता है कि क्या मनको वश में रखने के विषय में हम निराश हो जायें ? नहीं निराश होने की बात नहीं। मनोनिग्रह महाकठिन तो है परन्तु असंभव नहीं। गुरु वसिष्ठ ने राम की घबराहट देखकर मन का दमन करने का उपाय बताया। उन्होंने कहा—

मन एव समर्थ वो मनसो दृढ़ निग्रहे।

हे राम, मन ही मन को वश में करने में समर्थ हो सकता है। मन चंचल है। यह बिजली से भी अधिक चंचल है। विद्युत् की चमक देखी जा सकती है पर मनकी गति अदृश्य है। बुद्धिमान् मनुष्य जिस प्रकार बिजली का नियन्त्रण कर बड़े-बड़े कारखाने चला सकता है। पंखे, गाड़ियां और यन्त्र चला सकता है। ठीक उसी प्रकार मन को वश में करके भी अनेक कार्य किये जा सकते हैं। यदि बिजली हमारे वश में न रहे तो बड़ी-बड़ी अट्टालिकायें, गगनचुम्बी महल और कारखाने एक क्षण में भस्म हो जाते हैं। ठीक यही बात मन के साथ भी है। यदि मन को वश में कर लिया जाये तो यह मन अत्यन्त शक्तिशाली हो जाता है।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के अब्राहम लिंकन को आप जानते ही होंगे ।

एक निर्धन लकड़हारे का बेटा नंगे पैर, नंगे शरीर जिसका बालापन बीता। जिसके परिवार में एक समय के भोजन का ठिकाना न था । लेकिन इतनी अटूट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्धनता के बीच भी इस निर्धन लड़के ने मन पर नियंत्रण किया और दिन में मजदूरी और रात को अध्ययन प्रारम्भ किया। इसने स्वयं शिक्षा प्राप्त की और छात्रों के लिए एक स्कूल खोला। वह स्कूल आज भी एक विश्वविद्यालय के रूप में खड़ा है। इसने इस प्रथा का उन्मूलन किया।

अपने जीवन के प्रारम्भ में बोझा ढोने वाला, मेज साफ करने वाला और दासों के साथ भूखा रहने वाला, पेड़ों के नीचे बैठकर पढ़ने वाला यही व्यक्ति संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का राष्ट्रपति हुआ।

मन की शक्ति अपरंपार है। वह जब वश में कर लिया जाता है, तब वह विजय की ओर बढ़ने लगता है। जब वह देखता है कि वह अकेला है, एकाकी है। उस समय वह अपने से कहता है। उठो ? और अकेले ही चलो। निश्चय ही तुम्हारी विजय होगी। तुम सब कुछ कर सकते हो। देखा नहीं, सुना नहीं डिमास्थनीज। यह लगभग गूंगा था। हकलाकर बड़ी मुश्किल से बोल पाता था। हकलाना मानसिक दुर्बलता है। यह दूर होनी चाहिए। डिमास्थनीज के मन ने हकलाना दूर कर विश्व का सबसे बड़ा वक्ता बनने का लक्ष्य बनाया। समुद्र किनारे, निर्जन प्रदेशों में जाकर वह मुंह में कंकड़ियां भर कर बोलने का अभ्यास करने लगा और देखते ही देखते वह कुछ वर्षों में संसार का महान् वक्ता बन गया।

संभव है कि आप के पास बुद्धि, बल, विद्या और धन है पर आप मन की विजयिनी शक्ति से अनभिज्ञ हैं तो निश्चय ही आप कुछ भी न कर सकेंगे। एम. डी. कालरिज इसी मन की अस्थिरता के कारण कुछ भी न कर सका। यह व्यक्ति जब मरा तो इसके पास हजार से अधिक दर्शन और मनोविज्ञान पर लिखे हुए निबन्ध पाये गये। सबके सब अपूर्ण थे। मन की अस्थिरता के कारण वह कुछ न कर सका।

स्वामी श्रद्धानन्द ने मन की शक्ति के बल पर अकेले रहते हुए भी गुरुकुल खोल कर दिखा दिया। हनुमान ने अकेले ही राम दल को विजयी बना दिया। स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी और सुभाषचन्द्र बोस ने अकेले ही क्या-क्या कार्य किए इतिहास इसका साक्षी है।

यह ध्यान रखने की बात है कि हर सफलता का रास्ता कांटों से भरा है। अवनति के रास्ते में कोई रुकावट नहीं, कोई बाधा नहीं, किन्तु उन्नति की मंजिल पर जब हम अपने कदम बढ़ाते हैं तो पहला कदम उठाते ही हमारे ऊपर संकटों का पहाड़ टूट पड़ता है। जिसके मन में लगन है, अदम्य उत्साह है, वही इस पथ पर आगे बढ़ सकता है। जो आगे बढ़ गये, वे अमर हो गये। इस मंजिल के कष्टों, दुःखों और बाधाओं को जिसने पार कर लिया उसे इसका उत्तम फल मिलता है।

मन को वश में करने अथवा इसकी उच्छृंखलता के दमन का मार्ग क्या है? मार्ग जितना बीहड़ और कठिन प्रतीत होता है उतना कठिन और बीहड़ है नहीं। हां, उसे समझने की जरूरत है। हमने उसके दमन, नियंत्रण या वश में करने का स्वरूप बतलाया है। और वह स्वरूप और कुछ नहीं-वह यही है कि मन ही मन को निग्रह करने में समर्थ हो सकता है। क्या ? आश्चर्य की बात नहीं। न्याय दर्शन में मनका लक्ष्य करते हुए लिखा है:—

युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिङ्गम्। न्याय १-१-१६

अर्थात् मन एक समय में एक ही काम कर सकता है। यह नहीं हो सकता कि पाप भी सोचे और पुण्य भी। वह दूसरे को ठगने और लूटने के साथ-साथ उसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बचाने का विचार एक साथ नहीं कर सकता। चरक संहिता के शरीर स्थान में भी
इस बात की पुष्टि की गई है और वहां मन का लक्षण इस प्रकार किया गया है:—
लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभा को भाव एव वा—ज्ञान होना और ज्ञान न होना,
मन का लक्षण है। अर्थात् एक काल में एक वस्तु का ज्ञान होना और दूसरी का न
होना अथवा दो ज्ञानों का एक ही काल में उत्पन्न न होना मन का लक्षण है। पाप प्रबल
है। पाप सैन्य पर विजय पा सकना सतत अभ्यास और साधना चाहता है।
पूर्णता के लिए प्रयत्नशील पुरुष भी पद-पद पर पाप सैन्य पर विजय पा सकना सरल
नहीं। प्रलोभनों को ठुकरा सकना सतत अभ्यास और साधना चाहता है। पूर्णता के
लिए प्रयत्नशील पुरुष भी पद-पद पर पाप सैन्य से परास्त होता है। जिस समय
काम, क्रोध, मोह, लोभ इत्यादि शत्रु अपनी सेना सजाकर आक्रमण करते हैं उस
समय मैंदान में डट कर लोहा लेना किसी वीर और धीर एवं स्थिर मन शक्ति संपन्न
व्यक्ति का कार्य है। यह पाप चुपके-चुपके आक्रमण करता है। अर्जुन ने कृष्ण से
कहा है—

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।

अर्थात् न जाने कौन-सी शक्ति है जिससे कि मनुष्य न चाहते हुए भी जबरन पाप में प्रवृत्त किया जाता है। मन में जब यह पाप आता है तो इसे कैसे रोकें? पतंजलि महर्षि ने योग दर्शन में मन के एक समय एक ही ज्ञान को ग्रहण करने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए उपाय बताया:—

वितर्क बाधने प्रतियक्ष भावनम्। (योगदर्शन २—३३)

वितर्क अर्थात् झूठ, चोरी, भय, कायरता, विषय भोग आदि वितर्क जब आक्रमण करें तो मन में प्रतिपक्ष अर्थात् सत्य, अस्तेय, निडरता, बहादुरी और त्याग के भाव लाने चाहिए। मन में एक ही विचार रह सकता है। अच्छे विचार आने पर बुरे विचार दूर हो जायेंगे। कहावत प्रसिद्ध है 'खाली मन शैतान का घर होता है।" इसीलिए स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल के विद्यार्थियों को सिखाया करते थे "यदि तुम्हारे पास कोई काम न हो तो अपनी धोती फाड़ कर सीना शुरू कर दो।" यह है मन के दमन का उपाय। यह दम शब्द उस दमन का सूचक नहीं जिससे मन के अन्दर ग्रन्थियां (कम्पलेक्स) उत्पन्न हो जाती हैं। दम शब्द संयम, नियंत्रण और मन को वश में करने के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार पाप, अधर्म और अकर्त्तक के भाव लुप्त होने पर पुण्य धर्म और कर्त्तव्य मानव जीवन को उच्च बनायेगा। इसी लिए धर्म के दश लक्षणों में 'दम' का भी स्थान है।

भारत की विजय के लिए निकला हुआ सिकन्दर भारत से लौट रहा था। उसने मस्ती से आते हुए एक फकीर को देखा। सिकन्दर ने पूछा "तुम कौन हो?" उसने उत्तर दिया "दुनिया का बादशाह।" सिकन्दर आश्चर्य में पड़ गया और सोचने लगा कि इतने अधिक घोड़े, हाथी, सेना, धन, दौलत होते हुए भी मैं संसार का बादशाह नहीं और यह फकीर अपने को संसार का बादशाह कह रहा है। उसने पूछा कि यह कैसे? वह हंसा और बोला 'मन जीते जग जीते' और अपनी मस्ती की तान छोड़ दी। जिसने मन का दमन कर लिया है वह संसार को जीत सकता है।

इस प्रकार यदि हम अपना जीवन सफल और धार्मिक बनाना चाहते हैं, यदि हम आनन्द और पुण्य लूटना चाहते हैं तो हमें यह ध्यान रखना होगा कि हमारी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सफलता का कारण हमारी चित्त वृत्तियाँ होंगी और हमारी इन्द्रियों का स्वामी मन होगा। हृदय की प्राचीर लांघकर किसी का अन्य विचार वहाँ पहुँच नहीं सकता। वे विचार तो बाहर टक्कर खाते नजर आयेंगे। दूसरे व्यक्ति के वे विचार ही हमारी सहायता करेंगे जिन्हें हमारी आत्मा द्वारा बैठने की स्वीकृति मिल चुकी होगी, जिन्हें प्रवेश करने का अधिकार इन्द्रियों के सम्राट् मन ने दे दिया होगा। इस बैठक का निर्णय हमारे जीवन का निर्णय होगा। मन के इस निर्णय को संसार की कोई शक्ति परिवर्त्तित न कर सकेगी। किसी ने ठीक ही लिखा है "जीवन के समस्त क्षेत्र तुम्हारे सामने पड़े हैं, संसार की अतुल धन राशि, संसार का यश, पुण्य और उच्च पद तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि तुम में मानसिक बल है, यदि तुम्हारा मन पर नियंत्रण है, यदि तुम्हारे मन में लगन है, तुम्हारे मन में उत्साह है, तुम्हारे मन में जीवन है और सबसे बढ़कर तुम्हारा मन पर नियंत्रण है तो तुम सब कुछ पा सकते हो—सब कुछ कर सकते हो।"

: चार :

अस्तेय (चोरी न करना)

'अस्तेय' व्रत को मनु महाराज ने धर्म के लक्षणों में गिना है। यमों औद नियमों को धर्म का आवश्यक अंग मानते हुए 'अस्तेय' को यमों में भी प्रमुख स्थान दिया गया है। 'अस्तेय' का हिन्दी अर्थ चोरी न करना है। श्रीमन्नारायणजी की लिखी एक छोटी सी पुस्तक 'इतनी परेशानी क्यों ?' पढ़ रहा था। उसमें उन्होंने अपनी एक घटना लिखी है। वह यह है—

उस दिन एक मन्दिर में कीर्त्तन सुनने गया। वैसे तो मन्दिर में जाने का मुझे शौक नहीं है क्योंकि मुझे मूर्त्तिपूजा में न तो रुचि है और न विश्वास। लेकिन संगीत में दिलचस्पी जरूर है। कीर्त्तनकार कोई नामी सज्जन थे। इस लिए मन्दिर में जाने की इच्छा हुई। जब चप्पल खोल कर अन्दर जाने लगा तो ख्याल आया कि चप्पल बिल्कुल नई है, कहीं किसी का जी न ललचा जाय ? चप्पल को जान बूझ कर उल्टा रखा ताकि किसी की नजर उस पर न पड़े। अन्दर जाकर भी ध्यान तो बाहर ही रहा। आखिर कीर्त्तन सुनना था तो फटी-पुरानी चप्पल पहन कर क्यों न आया ? परन्तु, मन्दिर में कोई चप्पल उठाने आयेगा इसकी आशा नहीं थी।

कीर्त्तन समाप्त होने पर जब भीड़ बाहर निकली तो मैं जल्दी ही बाहर आ गया। कुछ अंधेरा-सा था। मेरे पास टार्च था। देखा, पर मेरी चप्पल कहीं न दिखाई दी। धीरे-धीरे सभी लोग चले गये। मैंने समझा कि किसी ने भूल से पहन ली होगी अपनी छोड़ गया होगा। लेकिन वहां तो टूटी चप्पल भी तो नहीं बची थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छतरी बदल लेना या लेते चले जाना, दूसरों की पुस्तकें लेकर अपने पुस्तकालय की शोभा बढ़ाना या न लौटाना, वाचनालयों से समाचार पत्र लेकर चल देना, पुस्तकालय की पुस्तकें ले कर उनके पन्ने फाड़ लेना तो साधारण बातें है। इन पर हमारा कभी ध्यान जाता ही नहीं। मुझे अपने मित्र का पता है जिन्हें रेलवे से पास मिलता है पर रेल पर बिना पास और बिना टिकट के चलना अपना सहज अधिकार मानते हैं। वे एक पास को कई बार भी चलाने की विद्या में निपुण हैं और इसकी ट्रेनिंग भी देते हैं। रेलवे कर्मचारियों को रेल में बिना टिकट और पास के चलने का मन्त्र सिद्ध है। इस मंत्र का पता मुझे तब चला जब मैं एक बार देवरिया से गोरखपुर आ रहा था। मेरे पास टिकट भी था। मैं बिना टिकट यात्रा अपराध मानता हूँ। कहीं जाता भी नहीं हूँ। परन्तु, जहां मैं रेल में बैठा था वहीं मुझ से दाईं ओर तीन अपटूडेट सज्जन भी बैठे थे। बातें वे कुछ हिन्दी और कुछ अंग्रेजी में कर रहे थे। शायद रेलवे में कोई अच्छे क्लर्क थे। टिकट चैकर ने एक व्यक्ति को टिकट न होने के लिए दंडित करने की धमकी दी और ले देकर उसे छोड़ा और वह आगे बढ़ा और उन सज्जनों से भी टिकट मांगा। उन्होंने एक मंत्र पढ़ा। मन्त्र था 'स्टाफ़'। अर्थात् टिकट माँगने पर 'स्टाफ' शब्द का उच्चारण किया। टिकट चैकर आगे बढ़ा दूसरे ने भी कहा 'स्टाफ़'। वह तीसरे के पास पहुँचा और वह भी बोला 'स्टाफ'। उसके बाद मैं था। मेरे पास टिकट तो था पर मैंने भी सोचा कि 'स्टाफ़' शब्द की शक्ति का परिचय प्राप्त करूं अतः टिकट मांगने पर बड़ी गंभीरता से बोला 'स्टाफ'। आप विश्वास कीजिए, वह मुझे भी छोड़कर आगे बढ़ गया। गेट से बाहर जाते हुए भी मैंने उन लोगों के मार्ग का अनुसरण किया। उन्हीं के बाद 'स्टाफ़' शब्द से जब बिना टिकट दिखाये बाहर पहुँचा तो उनसे इस मंत्र का अभिप्राय समझने के विचार से अपना टिकट लौटाया और उन्हें उनका कर्त्तव्य समझाया, पर मेरी कौन सुनता है ?

बड़ी बड़ी छुट्टियों के अवसर पर रेलवे कम्पनियाँ जोनल टिकट चालू करती हैं, उन पर लोगों के नाम और उम्र दर्ज रहती है पर बहुत से धनी और राष्ट्रीय कार्यकर्ता, समाज-सुधारक दूसरों के टिकटों का प्रयोग करते हैं और इसे पाप नहीं मानते।

कचहरी के क्लर्क या पेशकार से आपकी भेंट हुई हो और हाथ उठाकर लोगों को सचेत करते हुए बापू के चित्र को दिखा कर उसके नीचे लिखे शब्दों 'घूस लेना और देना पाप है' की ओर संकेत किया हो तो आपको मालूम होगा कि बड़ी नम्रता और विश्वास के साथ वे यही कहते मिलेंगे 'भाई आप जानते नहीं, इसका क्या मतलब है ? देखते नहीं गांधी जी हाथ उठाकर स्पष्ट रूप में अपनी अंगुलियों से इशारा कर रहे हैं कि अंग्रेजों के समय जो सवा रुपये की घूस ली जाती थी वह लेना देना पाप है। अब पांच रुपया उसके स्थान पर लेना चाहिए।

'रेलवे के चूहों' के विषय में श्रीमन्नारायणजी ने अपनी पुस्तक में एक घटना का उल्लेख किया है, जिसका सारांश यह है— "कहते हैं कि एक सेठ जी के यहां शादी-विवाह के अवसर पर बड़ी दावत हुई, सेरों मिठाई मेहतरों को जूठन में मिली। एक मेहतर ने जो मिठाई पाई और अपने परिवार से बची तो एक रिश्तेदार को पार्सल कर दी। उसका रिश्तेदार जब पार्सल छुड़ाने आया तो रेलवे के चूहे जो पार्सल लेने से पहले दक्षिणा और बाद में विदाई लेते हैं, मिठाई पर खूब दांत चला रहे थे। भंगी को देखकर पूछा—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"क्या है रे ?'

"हजूर एक पार्सल है" उसने हाथ जोड़कर कहा।

"तेरा पार्सल ?"

'जी हां, यह देखिए रसीद ?

'हैं, तेरे पास इतनी मिठाई किसने भेजी ?'

"साहव, किसी सेठ के यहाँ दावत हुई थी। मेरे एक संबंधी ने भिजवाई है। सुना है जूठन वहुत मिली।"

'बेचारे चूहे 'थू' 'थू' 'राम राम' करने लगे।' तोवा की, पर यह तोवा कितने दिन टिका भगवान् जाने।

यदि हमें राष्ट्र को निर्मल और समाज को सुखी और स्वस्थ वनाना है तो 'अस्तेय' व्रत का पालन करना पड़ेगा। वातावरण निर्मल करना पड़ेगा। गोरखपुर के शिक्षा निरीक्षक ने परीक्षा में नकल को कैसे रोका जाय इसके लिए प्रधानाचार्यों और अध्यापकों की गोष्ठी आयोजित की। पर, हमारी दृष्टि में उनका यह कार्य आत्म प्रवंचन के सिवाय कुछ भी नहीं था। आप पूछेंगे 'क्यों ?' हमारा कथन तो यही है कि नकल भी एक चोरी है। यदि इंस्पैक्टर प्रधानाचार्यों से चावल के बोरे, भैंस और गाय का दूध, नारंगी का टोकरा लेते हैं, डिप्टी डाइरेक्टर उनके यहां जाकर कालेज के पैसों से अंडे और दावतें उड़ाते हैं, स्कूलों के मैनेजर और प्रधानाचार्य गलत और झूठे रिटर्न वनाते हैं और उसका धन आपस में बांटते हैं, अध्यापक लड़कों से ट्यूशनें करवाकर उन्हें झूठमूठ में पास करते हैं। विद्यालयों का आधार योग्यता के बजाय, भाई भतीजावाद हो जाता है, तो छात्र ही यदि नकल करते हैं तो क्या पाप है ?

गोरखपुर में एक वार एक बड़े अधिकारी की पुत्रियां परीक्षा दे रही थीं। जिला विद्यालय निरीक्षक के आदेश से उनके लिए अलग व्यवस्था की गई। वे किसी ऊंचे अफसर की लड़कियां जो थीं। क्या यह लोकतंत्र का उपहास नहीं था ? क्या इसे हम शिक्षा विभाग एवं सरकारी विभागों की चोरी नहीं कहेंगे ? पर कौन सुनता है ? जिला विद्यालय निरीक्षक, प्रधानाचार्य, प्रवन्धक और कुछ हद तक अध्यापक भी यह सब कार्य करते हैं और छात्रों को उपदेश देते हैं चरित्र निर्माण का। यदि छात्रों का और वच्चों का चरित्र निर्माण करना है तो मैं कहूँगा कि माता, पिता, अध्यापक और अधिकारी को 'अस्तेय' का पाठ जीवन में उतारना होगा।

'अस्तेय' व्रत का यह अर्थ है कि जो वस्तु मेरी नहीं उसे येन केन प्रकारेण अपनी वनाना यह 'स्तेय' भावना है और इसका विपरीतार्थक शब्द 'अस्तेय' है। जब मनुष्य दूसरे की वस्तु पर अधिकार जमाने के मंसूबे बांधना प्रारम्भ कर देता है, जब दूसरे की मेहनत मजदूरी को सस्ते या विना मूल्य प्राप्त करना चाहता है, तो यह चोरी है। दुकानदार खरा पैसा लेकर खोटा माल देना चाहता है, धर्मगुरु, पंडित, मौलवी और पादरी धर्म के नाम पर शिष्यों और यजमानों से दान दक्षिणा लेकर उन्हें मूर्ख बना कर रखना चाहता है, कचहरी का कर्मचारी या न्यायाधीश रिश्वत लेकर इन्साफ बेचना चाहता है, यह सब चोरी है। इसी प्रकार जब शासक प्रजा से टैक्स प्राप्त करके उसका ठीक-ठीक हिसाब नहीं रखते, उसे ऐशों आराम में बड़ी-बड़ी तनख्वाहों और फिजूलखर्ची में जाने देते हैं तो ये शासक भी चोरों की गिनती में गिने जायेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जातीयता के नाम पर चुनाव लड़ने वाले, मुसलमानों और हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को उभार कर एम० एल० ए० बनने वाले राजनैतिक नेता, और महाराष्ट्र, असम, बंगाल, राजस्थान को मार कर सम्पन्न होने वाले दूसरे प्रान्तीय सज्जन चोरों की गिनती में आयेंगे। इसी प्रकार हिन्दी भाषियों को हटाकर अंग्रेजी के हिमायती लोग ऊंची नौकरियां पाने पर स्तेयवृत्ति वाले माने जायेंगे । किसानों को मजदूर बनाकर रात-दिन गुलामों की भांति उन्हें कष्ट देकर उनके द्वारा पैदा किये हुए मुफ्त के अनाज से अपने कोठे भरकर धनवान बनने वाला जमींदार चोर है। मजदूरों से दस-दस घंटे तक बैलों की तरह काम करवा कर उन्हें पेट भर भोजन न देने वाला, उनके मकान की ठीक व्यवस्था न करने वाला, उनके बाल-बच्चों की चिन्ता न रखने वाला और इस प्रकार धनी बनने वाला कारखानेदार चोर है। अध्यापकों से विद्यालयों में पढ़ाने वाला, उन्हें चार-चार मास तक वेतन न देने वाला, वेतन कुछ देकर हस्ताक्षर कुछ और लेने वाला, स्वयं जाली हिसाब रखने वाला विद्यालय का प्रवन्धक और प्रधानाचार्य चोर की श्रेणी में आयेंगे। इन सब का कार्य अन्याय और अधर्म पर आधारित है। किसानों पर चाहे उसके यहाँ अनाज हुआ हो चाहे न हुआ हो, मनमानी व्याज की दर लगाने वाला, उनके अनाज को जब्त करवा कर उसके घरबार को नष्ट करवा देने वाला, उसके प्रिय गाय बैल-ढोर को बांध कर ले जाने वाला, बाल बच्चों को अन्न का मोहताज बना देने वाला, स्वयं मौज उड़ाने वाला हृदयहीन, कृपण साहूकार अधर्म का अर्थशास्त्र चला रहा है। ये सभी चोर हैं। हमें समाज में इनके प्रति सम्मान के स्थान पर घृणा के भाव भरने होंगे। हमें भी यह ध्यान रखना होगा कि वह घृणा बुराई के प्रति हो, बुरों के प्रति नहीं।

आज संसार में प्रत्येक व्यक्ति धन बटोरने के लिए पागल बना हुआ है। हम सेंध लगाकर चोरी करने वालों को घृणा की दृष्टि से देख रहे हैं, किसी के घर में जाकर रुपया एवं अन्य वस्तुयें उठाने वाले को नफरत की दृष्टि से देखते हैं, परन्तु हम यह नहीं समझते कि संसार के अधिकतर व्यक्ति अपने-अपने दायरे में गठकतरे, चोर, डाकू और लुटेरे हैं। डाक्टर बढ़ रहे हैं। डाक्टरों के साथ रोग बढ़ रहे हैं। वकील बढ़ रहे हैं तो मुकदमे चोरियाँ और अन्याय बढ़ रहे हैं। आज का डाक्टर रोग और रोगी पर ध्यान दिये बिना रोगी की जेब पर ध्यान दे रहा है। इसलिए रोग बढ़ रहे हैं। गोरखपुर के चिकित्सकों का अनुभव आपको बताऊं तो आप आश्चर्य करेंगे कि डाक्टर रोगों के विषय में कितने अनभिज्ञ हैं। अभी कुछ वर्ष पूर्व की बात है मेरी धर्मपत्नी के कान के पास दर्द आरम्भ हुआ। मैंने एक डाक्टर को दिखाया। यद्यपि ये कर्ण रोग विशेषज्ञ नहीं थे परन्तु कान देखने के बाद नाक-भौं चढ़ाते हुए तथा कुछ चिन्ता व्यक्त करते हुए बोले कि कान का पर्दा एफैक्टेड है। एफैक्टेड शब्द सुनते ही मैंने उन्हें अच्छी दवा देने को कहा। उन्होंने एक ऐसी दवा डाली कि अभी तक दर्द कान और गाल के बीच में था अब वह कान के अन्दर भी होने लगा और वे छटपटाने लगीं। मैंने कहा डाक्टर अच्छे हैं, दवा लगती है तो तुम घबराती क्यों हो? अब तो ५) खर्च भी हो चुके हैं। परन्तु, उस दवा को डलवाने को वे किसी भी प्रकार तैयार नहीं हुयीं। अच्छा ही हुआ, यदि वह दवा पड़ती रहती तो अवश्य ही उनका कान का पर्दा जाता रहता। अब मैं दूसरे डाक्टर के पास पहुंचा। उन्होंने कान देखकर जरा गम्भीरता से कहा कि कान में छेद हो गया है। आप यह दवा डालिए और लाल, पीली, हरी पचासों गोलियाँ एक के बाद दूसरी खाने को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीं और १०) प्रतिदिन का नुस्खा तैयार हो गया। चार-पांच दिन चिकित्सा के बाद हालत वैसी की वैसी रही। अब मैंने कर्ण रोग विशेषज्ञ सरकारी अस्पताल के डाक्टर की सेवा में उपस्थित होकर अपनी गाथा गाई। उन्होंने कान देख कर चिन्ता व्यक्त करते हुए बड़े प्रेम से घर पर आने की सलाह दी। मैंने सोचा कि डाक्टर मरीजों से सहानुभूति रखता है और घर आने की स्वीकृति उन्हें दी तो तत्काल उन्होंने कहा वैसे घर पर देखने की मेरी फीस १०) है पर आप अध्यापक हैं अतः आपसे आठ लूंगा। लेते आइएगा। अभी उनसे निबट कर मैं चिन्ता में डूबा हुआ घर आ रहा था कि एक दूकान पर बैठे डाक्टर..........को देखा। उन्होंने मरीज को देखा और गम्भीर मुख बना कर कहा कान में दर्द नहीं, यह उपद्रव दांत के दर्द का है और यह साधारण दांत का दर्द नहीं बल्कि मेरा ख्याल है कि यह कैंसर है। कैंसर ? उन्होंने कहा और मेरा दिमाग बिगड़ा। अब मैंने दांत के कैंसर को दिखालाने के लिए दांत के डाक्टर की शरण ली तो उसने दांत उखाड़ दिया और अब वह कैंसर गायब हो गया, कान ठीक हो गया, विटामिन की कमी दूर हो गई और आज भी जब उन डाक्टरों की याद आती है तो हृदय कांप उठता है। २० दिन में पूरे ४०० रुपये डाक्टरों की सेवा में गये। क्या डाक्टर और वकील, अध्यापक और उपदेष्टा यजमान और पुरोहित राष्ट्रोद्धार के लिए अस्तेय वृत्ति अपने में लाने का प्रयत्न करेंगे। अस्तेय वृत्ति का उपासक मान-सम्मान की चिन्ता नहीं करता, वह अपने तन मन और धन को राष्ट्र और समाज के लिए अर्पित कर देता है माहत्मा गांधी, स्वामी श्रद्धानन्द, और महर्षि दयानन्द के जीवन इनके उदाहरण हैं। महाराज शिवाजी ने संत तुकाराम के लिए पालकी, मशालें, घोड़ें और सवारियां भेजीं। उन्हें देखकर तुकाराम ने कहा "भगवन् ये मशालें, ये घोड़े, ये पालकियां, ये छत्र चामर सब किस लिए हैं ? तुकाराम तो सेवा के लिए सेवा चाहते हैं, उन्हें मोक्षफल की आवश्यता नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा—मोक्ष के स्थान पर दुःखी जनता की सेवा पुनर्जन्म लेकर करना चाहता हूँ। संत तुकाराम ने कहा—

मैंने ठुकराये दम्भभाव
यश के सुख सुविधा के अवसर
तुम उन्हें भुलावे में डालो
जिनको वे लगते मधुर-मधुर।

वास्तव में 'अस्तेय' शब्द का दूसरा अर्थ है 'आवश्यकताओं को घटाना'। स्वामी रामतीर्थ ने कहा है कि "आवश्यकताओं को जितना बढ़ाओगे वह उतनी ही बढ़ती जायेंगी। एक दृष्टान्त देकर बतलाया है कि जिस प्रकार मनुष्य यदि छाया के पीछे दौड़ेगा तो छाया उससे दूर भागती जायेगी। यदि छाया को अपने पीछे दौड़ाना है तो उससे मुंह मोड़ कर चल दो छाया पीछे दौड़ने लगेगी। धन सम्पत्ति का भी यही हाल है। आप पीछे दौड़ेंगे तो वह भागेगी और आप मुंह मोड़ लेंगें तो वह आपके पीछे दौड़ेगी।

आज मनुष्य की आवश्यकतायें बढ़ रही हैं और साधन के अभाव में साधनों के लिए चोरियां बढ़ रही हैं। भारतवर्ष का इतिहास कितना शानदार रहा होगा जब अश्वपति कैकय के कहते हैं **"न मे स्तेनो जनपदे"** मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

: पांच :

शौच (स्वच्छता)

धर्म का लक्षण करते हुए मनु महाराज ने शौच अर्थात् पवित्रता को धर्म का एक अंग माना है। यम और नियम मानव जीवन के आवश्यक अंग हैं। यमों और नियमों का पालन मनुष्य के लिए परमावश्यक है। नियमों का पालन न करने वाला व्यक्ति कभी योगी नहीं हो सकता। इन नियमों में शौच का प्रथम स्थान है। शौच दो प्रकार का होता है (१)बाह्य शौच और(२)आन्तरिक शौच। बाह्य शौच से तात्पर्य स्थान की शुद्धता है। यह स्वच्छता या शुद्धता ईश्वर प्राप्ति का सर्व प्रथम और आवश्यक अंग है। संसार पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो हमें सर्वत्र स्वच्छता और सुन्दरता के दर्शन होते हैं। सब तरफ हंसी, स्वच्छता और सुन्दरता का साम्राज्य दिखाई देता है। परमेश्वर आनन्द स्वरूप है और आनन्द के लिए निर्मलता की आवश्यकता है। स्वच्छ मनुष्य जिधर जाता है वहाँ स्वच्छता दिखाई देने लगती है। इस स्वच्छता में ही प्रभु के दर्शन होने लगते हैं। विशाल प्रकृति देवी अपने एक-एक अंग से चारों ओर मुस्करा रही है। ऊपर आकाश कभी श्याम मेघों से आवृत्त, कभी नील निर्मल, कभी तारों से जड़ित अपनी छवि में आठों पहर शोभायमान है। भूतल पर दिवालों तक हरे खेत लहरा रहे हैं, इधर पहाड़ उछल रहे हैं, उधर चमकीली नदियां उछलती-कूदती दौड़ रही हैं। कहीं पक्षियों के गीत, हरिणों की सायंकालीन छलांगें और मोरों का नाच है और कहीं हरा परिधान धारण किये तरुगण अपने रंग-बिरंगे फूलों से प्रफुल्लित मन्द हास्य कर रहे हैं। सर्वत्र स्वच्छ वातावरण में हमें प्रभु के दर्शन हो सकते हैं। जब स्वच्छता में प्रभु के दर्शन हो सकते हैं और हम उस आनन्द निधान के समीप पहुँच सकते हैं तो हमें स्वच्छ बनने का प्रयत्न करना चाहिए। इस स्वच्छता के लिए हमें बहुत अधिक खर्च करने की आवश्यकता नहीं। स्वच्छता के लिए परेशान होने की जरूरत नहीं। आप अपने आस पास अपने शरीर, अपने वस्त्र पर दृष्टि दौड़ाइए और दूसरों से तुलना कीजिए की यदि वह दूसरों से अच्छी है तो रखिए अन्यथा दूसरों के समान बनने का प्रयत्न कीजिए। सबसे पहले शरीर को शुद्ध रखने का प्रयत्न कीजिए शरीर को शुद्ध रखने के लिए स्नान की अत्यन्त आवश्यकता है। शौचादि से निवत्त होकर हमें अपने दांतों की शुद्धि की ओर ध्यान देना चाहिए। जिनके दांत अस्वच्छ और गंदे होंगे उनके मुख से बदबू आएगी और दूसरे मनुष्य उनके सम्पर्क में आने से बचेंगे। इतना ही नहीं, दांत ठीक न होने से पाचन शक्ति पर भी बुरा असर पड़ता है। पाचन ठीक न होने मे पेट साफ नहीं होता। पेट की गन्दगी या सड़ी हवा का हमारे शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य खराब होने से 'नायमात्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बलहीनेन लभ्यः' बलहीन होकर हम परमात्मा को नहीं प्राप्त हो सकते। इसीलिए तो 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' शरीर को धर्म का प्रथम साधन माना गया है। "अद्भिः गात्राणि शुध्यन्ति" जल से शरीर शुद्ध होता है। अतः प्रतिदिन स्नान करना चाहिए, स्नान करते समय प्रत्येक अंग का प्रच्छालन आवश्यक है। शरीर के नाखून आदि साफ रखना चाहिए, उन्हें कटवाना भी आवश्यक है। नाखून में गन्दगी रहने से भोजन के साथ अनजाने में अनेक प्रकार के मैल हम इन नाखूनों के द्वारा अपने पेट में ले जाते हैं और अनेक रोगों के शिकार बनते हैं। इसके अतिरिक्त भोजनादि में भी स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। हाथ-पैर धोकर शान्ति पूर्वकभोजन करना चाहिए।

भारतीय जीवन स्वच्छता पर बहुत ध्यान देता है। स्नान के बिना भोजन नहीं करना चाहिए। भोजन बहुत शुद्धता और सफाई से बनाना चाहिए। भोजन करते समय भी यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई जीव-जन्तु या मक्खी आदि असावधानी से पेट में न चली जाय। भोजन से पहले हाथ-पैर धोकर अन्दर जाना चाहिए। रसाईघर को देव घर के समान पवित्र और शुद्ध रखना चाहिए।

बाह्य स्वच्छता में व्यवहार का भी स्थान है। साधारणतया स्त्रियों का बहुत सा समय चीजों को खोजने और उसके लिए अपने को कोसने में चला जाता है। इसका कारण यह होता है कि अपने थोड़े-से आलस्य के कारण सूई रखने के स्थान पर सूई नहीं रखी जाती है, कुर्त्ता टाँकने के स्थान पर न टाँगकर बिस्तर पर फेंक देने से वह प्रायः धोबी के पास जाने से रह जाता है। विद्यालय जाने का समय होने पर अव्यवस्थित छात्र बिस्तर के नीचे या मेज के कोने में या बक्से के पीछे गिरी हुई पुस्तकें, कलमें आदि शिक्षा के अन्य उपकरण खोजने में अपना समय गंवा देते हैं। उत्तम व्यवस्था हमें झुंझलाहट से बचाती है और हमारे बहुमूल्य समय की रक्षा भी करती है। पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज ने अपने साथ घटी एक घटना सुनाते हुए कहा "दिल्ली के करौल बाग में एक सज्जन रात को उन्हें दूध पिलाने अपने घर ले गये। घर में जाकर बैठे ही थे कि बिजली फ़ेल हो गयी। अन्धकार हो गया। सज्जन ने सरकार और बिजली विभाग की आलोचना कर खरी-खोटी सुनाई। स्वामी जी महाराज ने उनकी बातें सुनने के बाद कहा "राज्य को कोसने से कुछ बनेगा नहीं, आपके घर में दियासलाई और मोमबत्ती होगी, उसे जला लीजिए काम चल जाएगा।" तब उन्होंनेकक्कू की मां को पुकारा और मोमबत्ती तथा दियासलाई मांगी। दियासलाई और मोमबत्ती जब खोजने पर भी न मिली तो एक सिगरेट पीने वाले से दियासलाई मांग कर मोमबत्ती की खोज शुरू हुई। नौबत यहाँ तक पहुँची कि तीलियाँखत्म होने लगीं दियासलाई वाले ने कहा "तीलियाँ जरा संभाल कर खर्च कीजिए नहीं तो कहीं वह भी समाप्त हो जाये तो आप अधिक कठिनाई में पड़ जायें। इस भाग दौड़ में बिजली आ गई। वे सज्जन बैठे और बोले "यह राज्य का प्रबन्ध ही सारा खराब है। 'जिस विभाग को देखो उसका ही यह हाल है कितना समय इन लोगों ने नष्ट किया।" स्वामी जी महाराज ने आलोचना सुनकर हंसते हुए कहा "राज्य का प्रबन्ध अच्छा है या बुरा, परन्तु तुम अपने घर का प्रबन्ध तो देखो। न दीपशलाका रखने का ठिकाना, न मोमबत्ती रखने का स्थान और कोसा जाता है राज्य को? राज्य क्या तुम्हारे घर का भी प्रबन्ध करेगा?" यही हाल प्रायः सभी घरों का होता है। स्वच्छता और व्यवस्था एक दूसरे से संबंधित हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामाजिक दृष्टि से भी शौच का जीवन में अत्यन्त उपयोग है। घरों में बड़े लोग अपने विस्तर पर बैठे हुए 'खो खो' करके जो थूकते हैं तो वह थूक बच्चों के पैरों से लगकर उन्हें हानि पहुँचाता है और उनकी भी आदत खराब करता है। स्त्रियाँ अपने बच्चों को स्वच्छ रखने की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देतीं। कई घरों में मैंने देखा है कि मां रसोई बना रही है। बच्चा रसोईघर में पायखाना और पेशाव कर रहा है और उसकी मक्खियाँ उड़-उड़ कर भोजन पर बैठ रही हैं, जिसे अभी उसके पति और बच्चे खायेंगे।

विद्यालयों, कार्यालयों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर सुर्ती खाकर थूकना, पान की पीक से दीवार को लाल कर देना यह सामाजिक अपराध है। क्या आपको अपने पड़ौसी के इस कार्य का अनुभव नहीं कि वह आपके वन्द घर में दरवाजे के सामने आपकी अनुपस्थिति में अपने बच्चों को पायखाना करने भेज देते हैं और आप भी तो कम नहीं, आपने उसकी अनुपस्थिति में अपने बच्चों को उसके दरवाजे के सामने पायखाना करवाकर कितनी सफाई से बदला ले लिया। परन्तु मित्रवर! सोचने की बात तो यह है कि दोनों ही आदमियों ने अपने तथा अपने बच्चों के लिए वातावरण को दूषित किया और दोनों ही अन्त में सफाई के नियम के उल्लंघन के कारण आत्मघात के दोषी हुए।

रेल यात्रा में रेल के डिव्वों में लिखा होता है 'थूको मत'। लेकिन डिव्वे में थूकना तो जन्म सिद्ध अधिकार है। दियासलाई, वीड़ी, और मूंगफली या अन्य खाद्य वस्तुओं के वीज और छिलके वाहर न फेंक कर हम अन्दर ही फेंकते हैं। रेलवे की ओर से बड़े बड़े स्टेशनों पर मेहतरों का प्रवन्ध रहता है पर उन्हें बुलाकर डिव्वा साफ करवाने की आदत हम लोगों में नहीं। डिव्वे में बैठ कर हम उसे अपने घर जैसा ही गन्दा बना लेते हैं। वहीं खाकर हाथ मुंह धोना, वहीं थूकना, वहीं नाक साफ करना और वहीं लड़कों, बच्चों की खुली संड़ास स्थापित कर लेना, यह हमें अजब नहीं लगता। हमें दूसरों की सुविधा का कोई ध्यान नहीं रहता। कुछ वर्ष पहले एक पुस्तक में मैंने एक अमेरिकन के चीन के अनुभव पढ़े थे, उसने लिखा था कि वहां वालों की दुकानें काफी साफसुथरी हैं परन्तु सड़कें गन्दी हैं। पूछने पर वहाँ वालों ने वताया, साहव, हम अपनी अपनी दुकानें तो साफ करते हैं पर कूड़ा सड़क पर फेंक देते हैं। सड़क तो हमारी नहीं। यही हाल हमारा भी है। हमारे यहां पेशाव घर, स्नानागार और पायखाने की सफाई की वात तो सोची ही नहीं जाती।

गोरखपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वीय जिलों का एक प्रसिद्ध नगर है। यदि आप कभी इस नगर के दर्शन करें तो यहां की मुख्य वस्तुओं में गीता प्रेस, गोरखनाथ का मन्दिर, कवीर की समाधि (समीप है) और चौरी-चौरा कांड का स्मारक तो देखेंगे ही परन्तु सबसे अधिक प्रभावकारी यहां की गन्दगी होगी जिससे आप अवश्य ही प्रभावित होंगे? गोरखपुर शहर गन्दगी के लिए भारतवर्ष का ही नहीं विश्व का प्रथम श्रेणी का शहर है। यदि इस विषय में कोई 'अखिल भारतीय गंदा नगर प्रतियोगिता' जारी की जाय तो इसकी चैम्पियनशिप निश्चित रूप में गोरखपुर को प्राप्त होगी। यहां 'जूनियर इंस्टीट्यूट' के पास आपको कभी जाने का अवसर मिले तो यद्यपि वहां नगरपालिका की ओर से वना शौच गृह मिलेगा, परन्तु नागरिक विशेषकर नागरिकायें सवेरे चार बजे से ही पायखाने में न जाकर सड़क की सजावट में सन्नद्ध हो जाती हैं। आपको यहां के मुहल्लों में दुमंजिले मकानों के नीचे पानी का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गिलास, तरकारी के छिलके, गन्दे कागजों की ढेरी और बच्चे के पायखाने से लथपथ गन्दे चिथड़े आपके सिर पर गिरे बिना नहीं रहेंगे ? सड़कों पर फेंके गए छिलके और शीशे के टुकड़ों से बचना सौभाग्य ही है।

अभी कुछ दिन पूर्व की अलीनगर की एक घटना है कि एक बालक अपनी बीमार माता के लिए तेजी से शीशी में दवा ला रहा था और रास्ते में पड़े हुए केलों के छिलके पर पैर फिसलने से जो वह गिरा तो दवा की शीशी फूट गई और शीशे उसकी छाती में गड़ गये। वह स्वयं घायल होकर अस्पताल पहुँचा। मां का क्या हुआ, कौन जाने ?

एक दिन की बात है। एक घर में एक प्लेग का चूहा गिरा। घर की मालिकन ने उसकी पूंछ पकड़कर उसे ठीक सड़क के बीच में फेंक दिया। उस चूहे से नगर में प्लेग फैली। हजारों मौतें हुईं, सैकड़ों स्त्रियां विधवायें बनीं, बच्चे अनाथ हुए, वृद्धों की लकड़ी छिन गई और इस भूल का परिणाम यह हुआ कि अन्त में उसका एकमात्र पुत्र भी इसी बीमारी से बीमार हुआ और उसकी भी मृत्यु का कारण उसकी माता बनी। क्या यह समाज धर्म शौच की अवहेलना का पाप नहीं ?

शौच का बाह्य रूप शरीर, स्थान, वस्त्र आदि की शुद्धता से है। आन्तरिक शुद्धता के लिए संध्या के मन्त्रों में प्रार्थना की गई है। संध्या में मार्जन मन्त्र हैं। उन मन्त्रों का भाव यह है कि 'मार्जन' अर्थात् मांजना, साफ करना, शुद्ध करना। यदि घर का मार्जन न किया जाय तो वह मैला हो जाता है, बर्तन गन्दे हो जाते हैं, वस्त्र मार्जन के बिना गन्दे और धारण करने के अयोग्य हो जाते हैं, इसी प्रकार आत्मा भी मार्जन के बिना कलुषित हो जाती है। प्राकृतिक पदार्थों की स्वच्छता प्राकृतिक पदार्थों से होती है। घर को झाड़कर, बर्तन को मिट्टी से मांजकर, वस्त्र को साबुन लगाकर तथा शरीर को जल से स्नान कराकर साफ किया जाता है। अंगों की पवित्रता का उपाय यह है कि प्रत्येक इन्द्रिय का संयम, ज्ञान और बुद्धिपूर्वक प्रयोग करने से अंगों की पवित्रता होती है। आत्मा की अपवित्रता का मूल कारण अज्ञान है। यह अज्ञान ही वह दीवार है जिसने आत्मा को सीमित और स्वार्थबद्ध बना रखा है। यही वह आवरण है जिसने परिच्छिन्न आत्मा को अनन्त आत्मा के दर्शन से वंचित कर रखा है। यही वह मुलम्मा है जिसने हमारे विशुद्ध स्वरूप को हमसे ओझल किया हुआ है।

अविद्या के आवरण को हटाने के लिए उपनिषदों में कहा गया है :—

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येणनित्यम्।
अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीणे दोषाः।

सत्य, तप, यथार्थ ज्ञान और ब्रह्मचर्य इन चार बातों से आत्मा पवित्र बनता है। अज्ञान दूर होता है ज्ञान की किरणें हृदय में आती हैं। योगदर्शनकार ने कहा है —

शौचात्स्वांगजुगुप्सा परैरसंसर्गः। २।४०॥

अर्थात् शौच से स्वांग की जुगुप्सा (निन्दा) और अन्यों से संसर्ग छूटता है। जब योगी बाह्य शौच या पवित्रता करता हुआ यह देखता है कि इस देह में बड़ी अशुद्धियां हैं जैसा कि कहा है —

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्थानात् बीजात् अवष्टम्भान्निष्पदान्नि धनादपि ।
कायमाधेय शौचत्वात् पण्डिता ह्यशुचिं विदुः ॥

स्थान से, बीज से, अवष्टंभ से, पसीने आदि से और मृत्यु से भी देह को शोधन का अधिकारी होने से पण्डित लोग अपवित्र जानते हैं। योनि जो देह का उत्पत्ति स्थान है, वीर्य, हड्डी, चर्म, मांस, रुधिर, मज्जा आदि जिनसे देह ठहरा है कैसे घृणित हैं ? मूत्र, आंख, कान, नाक से मल और रोम-रोम से पसीना और मृत्यु होने पर शरीर कैसा सड़ा दिखाई देता है। इन सब मलिनताओं के कारण विद्वान् योगी यथासंभव स्नानादि द्वारा बहुत कुछ इसके शुद्ध रखने के उपाय करता है और इस शौच को करते हुए भी सब अंगों को मलिन पाकर उनकी निन्दा करता है और देह तथा आत्मा के अन्तर को समझता है और इसके बाद योगदर्शनकार कहता है—

सत्त्वशुद्धि सौमनस्यैकाग्र्यमिन्द्रियजयात्मदर्शन योग्यत्वानि च ॥ २ । ४१ ।

सत्त्व की शुद्धि, मन की भलाई, एकाग्रता, इन्द्रियों का जीतना और आत्मा के दर्शन तथा साक्षात्कार की योग्यता भी शौच से होती है।

जब योगी आभ्यन्तर शौच रखता है तो उससे बुद्धि सत्त्व में शुद्धि आती है, उससे मन निर्मल होता है, इसमें एकाग्रता आती है। इन्द्रियां वश में होती हैं और इस प्रकार मनुष्य आत्मा के वास्तविक स्वरूप के दर्शन करता है।

अतः शौच सामाजिक एवं शारीरिक दृष्टि के साथ-साथ आभ्यान्तरिक दृष्टि से भी मानव के लिए आवश्यक है।

: छः :

इन्द्रियनिग्रह

छान्दोग्योपनिषद् के सातवें प्रपाठक में एक कथा आती है कि नारद जी सनत्कुमार के पास पहुंचे और बोले "मैंने दुनिया का सब कुछ पढ़ डाला। चारों वेद, विज्ञान, नक्षत्रविद्या, क्षत्र विद्या कुछ नहीं छोड़ा। परन्तु मेरी आत्मा को शांति नहीं मिली। मैं 'मन्त्रवित्' हो गया हूँ, 'आत्मवित्' नहीं हुआ हूँ। प्रकृति का ज्ञान मन्त्र ज्ञान है, अपना ज्ञान आत्म-ज्ञान है। भगवन्, मैंने सुना है 'तरति शोकम् आत्मवित्' जो आत्म-तत्त्व को जानते हैं, 'आत्मवित्' हो जाते हैं, उन्हें शान्ति मिल जाती है; मुझे आत्मा का उपदेश दीजिए। सनत्कुमार ने कहा 'जो तुमने पढ़ा है, वह केवल नाम है। इसकी उपासना से, जहां तक नाम की पहुंच है वहां तक इच्छानुसार होता है।" नारद बोले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"क्या नाम से बढ़कर कोई वस्तु है?" सनत्कुमार ने क्रमशः उनके नाम गिनाने शुरू किये और वताया कि इनमें से अगला क्रमशः पिछले से अधिक बढ़कर है। उन्होंने कहा नाम से बढ़कर वाणी है। वाणी से बढ़ कर मन है। मन में विचार आने पर मनुष्य कर्म करता है। आत्मा भी मन के साधन से भोग भोगता है और मन ही ब्रह्म की प्राप्ति का सावन है। इस मन से वढ़कर संकल्प है। विना संकल्प के विचार नहीं आ सकते और बिना विचार के कर्म नहीं हो सकता। इस संकल्प का निर्माण विना चित्त के नहीं हो सकता चित्त ही सारे विचारों और संकल्पों का केन्द्र है। चित्त जब तक अपने में केन्द्रित नहीं होगा तब तक संकल्प—विशेषकर शिव संकल्प—का प्रवेश नहीं होगा, अतः चित्त को ध्यान में लगाना चाहिए। इसलिए ध्यान चित्त से बढ़ कर है। ध्यान के लिए मनुष्य को वेदों और भूतों का ज्ञान प्राप्त करना होगा अतः विज्ञान ध्यान से बढ़ कर है। यह विज्ञान भी बल के बिना प्राप्त नहीं हो सकता अतः विज्ञान से बढ़कर बल, बल से बढ़कर अन्न, अन्न से बढ़कर जल, जल से बढ़कर तेज (अग्नि) और तेज से वढ़कर आकाश है। आकाश द्वारा मनुष्य बोलता है, बीज आकाश में बढ़ते हैं अतः आकाश सबका निधान है। आकाश से बढ़कर स्मृति है। आकाश में शब्द होता परन्तु मनुष्य में स्मृति नहीं होती तो शब्द निरर्थक हो जाते। स्मृति से बढ़कर आशा है। आशा से चमकी हुई स्मृति मन्त्रों को पढ़ती है, कर्म (यज्ञादि) करती है। पुत्र, पशु, धन धान्य और ज्ञान की इच्छा करती है। इस लोक और उस लोक की कामना करती है। और इस आशा से बढ़कर प्राण है। प्राण पिता है, प्राण माता है, प्राण भ्राता और वहिन है। प्रश्नोपनिषद् में आया है कि जब प्राण इस शरीर को छोड़कर निकलने लगे तो इन्द्रियों ने प्राण से कहा—मत निकल—

पितास्त्वं मातरिश्वनः। (प्र० २–११)

तू जीवात्मा का पिता है।

सारी इन्द्रियाँ मन सहित स्वार्थपरायण हैं, केवल प्राण ही परार्थी है। प्राण दूसरों के लिए चलता है, दूसरों के लिए खाता है और दूसरों के लिए पीता है। इस प्राण के ऊपर अधिकार करने वाला व्यक्ति मन का दमन कर सकता है और मन का दमन करने वाला व्यक्ति इन्द्रिय निग्रह कर सकता है। इन्द्रियाँ दो प्रकार की हैं—

(१) ज्ञानेन्द्रियाँ (२) कर्मेन्द्रियाँ। नाक, कान, आंख, त्वचा और जिह्वा ये पांच ज्ञानेन्द्रियां और हाथ, पैर, मुंह, गुदा और उपस्थ कर्मेन्द्रियाँ हैं। इन ज्ञानेन्द्रियों को वस्तु का ज्ञान नहीं होता, पर ये केवल बाह्य पदार्थ का संस्कार अन्दर लाने का कार्य करती हैं और प्रत्येक संस्कार के समाचार मन तक पहुँचाती हैं। मन तक इन संस्कारों को ले जाने का कार्य असंख्य ज्ञान तन्तु करते हैं। मन इन सब ज्ञानों को बुद्धि तक विभाजन के लिए भेज देता है। वह वस्तु अच्छी है या बुरी, सेवन करने योग्य है या अयोग्य, धर्म मर्यादा अनुसार है या विपरीत, उचित है या अनुचित इसका निश्चय मन नहीं बुद्धि करती है। यदि बुद्धि का निश्चय यह है कि यह वस्तु ठीक है तब चित्त उसे धारण कर लेता है और अब संसार बनने लगता है। अब काम की उत्पत्ति हो गई। आराम और तकलीफ देने वाले तत्त्वों को अलग-अलग किया गया और कर्मेन्द्रियों तक सन्देश भेजकर उनसे कार्य प्रारम्भ हो गया। इस सन्देश के लिए बहिर्मुख ज्ञान तन्तु होते हैं। और ये कर्मेन्द्रियों को संदेश देते हैं और वे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपना काम प्रारम्भ कर देती हैं। उदाहरण के लिए आपने साँप देखा, अन्तर्मुख ज्ञान तन्तुओं ने मन तक संदेश पहुँचाया, बुद्धि ने इसे घातक बताया और मन ने उसके निश्चय को बहिर्मुख ज्ञान तन्तुओं से पैर को सन्देश दिया और हम भागना शुरू कर देते हैं।

कहने का भाव यह है कि मनुष्य की अच्छी और खराब क्रियाओं और विचारों का आरम्भ इन्द्रियों से और विशेष कर ज्ञानेन्द्रियों से होता है और उसका अन्त भी उन्हीं कर्मेन्द्रियों से होता है।

इसलिए इन इन्द्रियों के निग्रह के लिए धर्मशास्त्रों और वेदों में भी कहा गया है। ऋग्वेद १०।५।५ में आया है—

सप्तस्वसृररुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व उज्जभारा दृशेकम्
अन्तर्येमे अन्तरिक्षे पुराजा इच्छान्वव्रिमविदत्पूषणस्य ॥

अर्थात् सुख को, आनन्द को देखने के लिए (वावशानः) निरन्तर कामना करता हुआ अथवा निरन्तर इन्द्रियों को वश में करने वाला (विद्वान्) तत्त्ववेत्ता ज्ञानी (सप्त) सात (अरुषीः) गतिशील, तेजस्वी (स्वसृः) बहिनों को, अपने सामर्थ्यों को, इन्द्रियों को (मध्वः) मधु से, रस से (उत्‌जभार) ऊपर उठाता है। (पुराजाः) इन्द्रियादिक से पूर्व प्रकट जीव (अन्तरिक्षे अन्तः) अन्तःकरण में (येमे) संयम करता है। (पूषणस्य) पुष्टिकारक प्रभु के (वव्रिम् इच्छन्) आश्रय को चाहता हुआ (अविदत्) उसे प्राप्त कर लेता है।

इन्द्रियां आत्मा को सुख देती हैं। यह सुख क्षणिक होता है। क्षणिक ही नहीं, वरन् अन्त में उसका परिणाम सुख के स्थान में दुःख भी हो जाता है। कठोपनिषद् में इन्द्रियों के स्वभाव का बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है। चतुर्थ वल्ली में आया है—

पराञ्चिखानि व्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मापराङ् पश्यति नान्तरात्मन्
कश्चिद् धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ।

(स्वयंभू) अपनी ही सत्ता से स्थित रहने वाले परमात्मा ने (खानि) इन्द्रियों को (पराञ्चि) बाह्य विषयों पर गिरने वाला। (व्यतृणत्) किया है।। (तस्मात्) इसलिए मनुष्य (पराङ्) बाह्य विषयों को (पश्यति) देखता है (न अन्तरात्मन्) अन्तरात्मा को नहीं (कश्चित्) कोई (आवृत्तचक्षुः) ध्यानशील (धीरः) विवेकी पुरुष (अमतत्वाम्) मोक्ष की (इच्छन्) इच्छा करता हुआ (प्रत्यगात्मानम्) हृदयाकाशस्थ आत्मा को (ऐक्षत्) देखता (साक्षात् करता) है।

अर्थात् इन्द्रियों का स्वभाव ही बाहर की ओर चलने का है। फिर इनके पीछे चलकर, स्पष्ट है कि कोई भी आत्मद्रष्टा नहीं बन सकता। आत्मदर्शन भीतर घुसे बिना नहीं प्राप्त हो सकता।

इसी कठोपनिषद् में ब्रह्मविद्या के विद्यार्थी को किस प्रकार अपने मन, बुद्धि और इन्द्रियों को अपने अधिकार में रखना चाहिए जिससे वह अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सके, यह भी बतलाया गया है। वहाँ आया है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिन्तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।१।

आत्मा को रथी सवार जान कर और शरीर को ही रथ, बुद्धि को सारथि और मन को लगाम जान।

इन्द्रियाणि हयानाहुः विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।

इन्द्रियों को घोड़े कहते हैं, उनमें शब्द स्पर्शादि को मार्ग कहते हैं, विचार-शील पुरुष इन्द्रिय और मन से युक्त आत्मा को भोगने वाला ऐसा कहते हैं।

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन मनसा सदा
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वाः इव सारथेः।
यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः॥

जो अज्ञानी अनवस्थित मन से हमेशा युक्त होता है, उसकी इन्द्रियां रथवान् के दुष्ट घोड़ों के समान वश में नहीं होतीं और जो अज्ञानी वश में रहनेवाले मन से सर्वदा युक्त होता है उसकी इन्द्रियां रथवान् के सुधरे हुए घोड़ों की तरह वश में होती हैं। कोई रथ जिसमें बेकाबू घोड़े जुते हों किस प्रकार अच्छा काम दे सकता है? जब सवार का आज्ञानुवर्ती रथवान् हो और रथवान् के अधिकार में लगाम हो और घोड़े लगाम के इशारे से चलने वाले हों और घोड़े जिस सड़क पर चलते हैं वह अच्छी और निर्दिष्ट स्थान को ले जाने वाली हो। ठीक ऐसा ही एक रथ मनुष्य का शरीर भी है। इस रथ का सवार आत्मा, कोचमैन बुद्धि, लगाम मन और घोड़े इन्द्रियाँ हैं। इस रथ को भी ऐसा ही होना चाहिए कि आत्मा के अधीन बुद्धि, बुद्धि के अधीन मन और मन के अधीन इन्द्रियां हों तभी यह रथ अभ्युदय और निःश्रेयस रूप धर्म मार्ग पर चल कर सवार को निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा देने का कारण बन सकता है। यह शरीर रूपी रथ उपर्युक्त भांति काम दे सके इस के लिए आवश्यक है कि आत्मा रूपी सवार सावधान हो। यदि वह अज्ञानी है तो स्वयं न तो मन के पीछे चलेगा और न इन्द्रियों को दुष्ट घोड़ों की तरह बेकाबू होने देगा। श्री पं० दामोदर जी सातवलेकर लिखते हैं—

"स्वयंभू परमात्मा ने इन्द्रियों को बहिर्मुख बनाया है अतः इन्द्रियां बाहर के पदार्थों को देखती हैं, पर वे अन्दर को नहीं देख सकतीं। इसलिए इन्द्रियों से सब बाह्य विश्व का दर्शन तो होता है, परन्तु आत्मा का दर्शन नहीं होता। परन्तु क्वचित् कोई बुद्धिमान् पुरुष अमरत्व प्राप्त करने की इच्छा से अपने नेत्र आदि इन्द्रियों का संयम करता है और प्रत्येक मनुष्य के अन्दर ही अन्तरात्मा रहता है उसको अर्थात् अपने अन्दर के अन्तरात्मा को देखता है।·······जिस समय इन्द्रियों का बाहर का व्यापार बन्द होता है उस समय मन को भी रोकना होता है। जब मन का व्यापार स्तब्ध हो जाता है उस समय अन्तरात्मा जागृत होता है और अन्तरात्मा की शक्ति का अनुभव होने लगता है। दिव्य श्रवण, दिव्य रूपदर्शन, दिव्य रसानुभव आदि आन्तरिक अनुभव होते हैं। ये अनुभव आन्तरिक शक्तियों के हैं, बाह्य विषयों के ये अनुभव इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय नहीं हैं। क्योंकि बहिर्मन के साथ सब इन्द्रियां इस समय स्तब्ध रहती हैं और अन्तर्मन ही अपना कार्य करता है। बाह्य जागृति में काम करने वाला मन जब स्तब्ध होता है तभी वह अन्तर्मन जागृत होता है और दिव्य अनुभव उस समय होने लगते हैं।"

इस प्रकार मनुष्य के लिए मन, बुद्धि और कर्म तथा इनकी साधनभूत इन्द्रियों की स्वाभाविक बाह्य प्रवृत्ति का निग्रह अत्यन्त आवश्यक है। वह आनन्द दर्शन का अभिलाषी इन चंचल इन्द्रियों को विषयरस के ऊपर उठा लेता है। मनु महाराज कहते हैं—

इंद्रियाणां तु सर्वेषां यद्येकंक्षरतीन्द्रियम्।
तेनाऽस्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पात्रादिवोदकम्॥

सब इन्द्रियों में से यदि एक भी शिथिल होकर टूटकर चूने लग जाय तो उससे मनुष्य उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जैसे टूटे हुए बर्तन से जल नष्ट हो जाता है।

महाभारतकार ने तो यहां तक कहा है—

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

जिस प्रकार कछुआ अपने सब अंगों को सर्वथा सिकोड़ लेता है, इसी प्रकार जब मनुष्य इन्द्रियों के विषयों से इन्द्रियों को हटा लेता है तभी उसकी बुद्धि स्थिर होती है। कठोपनिषद् में २।३।१० में आया है:—

यदा पंचावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिश्च नविचेष्टते तामाहुः परमां गतिम्।

जिस अवस्था में मन के साथ पांचों ज्ञानेन्द्रियां शान्त हो जाती हैं और बुद्धि भी निश्चल हो जाती है उस अवस्था को परम गति कहते हैं।

वेद ने भी इन्द्रियों और उनकी शक्ति का वर्णन किया है और बताया है कि इन शक्तिशाली अवयवों के वश में न रहने पर अनेक उपद्रव हो जाते हैं। परन्तु यदि इन्हें वश में कर लिया जाय तो शान्ति भी प्राप्त हो सकती है। अथर्ववेद १९।९।५ में कहा है—

इमानि यानि पंचेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि मे हृदि
ब्रह्मणा संशितानि यैरेव संसृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः॥

इस प्रकार मन और इन्द्रियों के रोकने से आत्मा अन्तर्मुख हो जाता है और अन्तर्मुख होने का परिणाम यह होता है कि संसार के उन कार्यों में जो हमारी इन्द्रियों को सुख देने वाले नहीं भी होते सुख मिलने लगता है। मनु ने कहा है:—

वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं संयम्य च मनस्तथा।
सर्वान्संसाधयेदर्थानाक्षिण्वन् योगतस्तनुम्।

अर्थात् इन्द्रियों को वश में करके और मन का संयम करके मनुष्य सब कामों को सिद्ध कर सकता है। इन्द्रिय निग्रह से मोक्ष भी प्राप्त हो सकता है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेषक्षयेण च।
अहिंसया च भूतानां अमृतत्वाय कल्पते।

इसलिए मनु कहते हैं—

इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु।
संयमे यत्नमातिष्ठेद्विद्वान् यन्तेव वाजिनाम्॥

अर्थात् विषयों में घूमने वाली इन्द्रियों को विद्वान् उसी प्रकार वश में करे जैसे सारथि घोड़ों को वश में करता है।

गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य श्री पूज्य अभय देव जी का इन्द्रियों को वश में करने लिए दिया गया 'थोड़ा सा' शीर्षक भाषण मुझे याद आ रहा है वे कहते थे कि जब इन्द्रियां काबू में करने की कोशिश की जाती है तो ये इन्द्रियां 'थोड़ा सा' या 'जरा सा' मांगा करती हैं। उन्होंने कहा—

—बिच्छू कहता है कि मुझे केवल 'थोड़ा सा' केवल अपने पतले डंक की नोक भर धरने को अपने शरीर में स्थान दे दो। बस शेष सारे शरीर को मैं कुछ नहीं कहता।

—आग लगाने वाला कहता है कि 'थोड़ी-सी' केवल एक चिनगारी अपने छप्पर के एक कोने में लगाने दो, मैं और कुछ नहीं चाहता।

—चतुर शासक कहता है कि तुम 'थोड़ा-सा' केवल एक पैसा भार अपनी अमुक वायु पर कर लगा लेने दो, अधिक कुछ नहीं।

—विदेशी व्यापारी आकर कहते हैं कि तुम अपने विस्तृत देश के एक किनारे पर 'थोड़ी-सी' भूमि हमें दे दो—केवल एक कोठी बनाने लायक जगह।

—वामनावतार उतरते हैं और कहते हैं कि 'हे महादानी बलि राजा! तुम केवल साढ़े तीन पग धरने लायक 'थोड़ी-सी' भूमि दान कर दो। बस मैं और कुछ नहीं मांगता।

—इसी प्रकार एक नवयुवक अपनी जिह्वा इन्द्रिय के वश में होकर कहता है। अजी थोड़ा-सा मांस अवश्य खाना चाहिए, शराब का 'थोड़ा-सा' सेवन तो करना चाहिए, 'थोड़ा-सा' मसाला, चटनी, चूर्ण आदि खाना तो आवश्यक है। उसकी जिह्वा इसमें फंस जाती है।

उस वीर्यनाश करने वाले ने जो कि आज गले-सड़े शरीर में पड़ा हुआ भयंकर आंखें दिखा रहा है और जिसे इस कुछ दिनों की दुनिया में नैराश्य के सिवाय आज कुछ नहीं दिखाई देता है, प्रारम्भ में केवल एक बार 'थोड़े-से' काम विचार के रूप में उधर मुंह उठाने का इन्द्रियानन्द का फल है।

इसी प्रकार 'थोड़े-से' सिनेमा के रस ने हमारी पढ़ाई और आंख को चौपट कर दिया है। पढ़ाई के घंटों में, भक्ति की वेला में, शाम को खेल के मैदान में जाकर शरीर को संबल और स्वस्थ बनाने के समय यह 'थोड़ा-सा' आंख का रस कितना हानिकारक होता है।

इसी प्रकार कान का अनियन्त्रण और त्वचा का अनिग्रह मनुष्य के पतन में कितनी सहायता पहुंचा रहा है। इसलिए 'थोड़ा-सा' बहुत भयंकर वस्तु है। कभी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन्द्रियों के विषयों को थोड़ा समझ कर उपेक्षा मत करना। केन्द्र से च्युत होते ही थोड़ा या बहुत—सारे मंडल से संबंध बिगड़ जाता है। केन्द्र के अतिरिक्त किसी भी स्थान पर वस्तु को सम्भाला नहीं जा सकता, वह स्थान वहां से थोड़ा दूर हो या बहुत। इसी प्रकार संसार व्यापी नियमों की सत्य रेखाओं से 'थोड़ासा, भी हटने से जगत् से हमारा संबंध बिगड़ जाता है और हम उसकी महान् रक्षा से तत्क्षण वंचित हो जाते हैं। अतः प्रश्न तो इन्द्रियों द्वारा किसी काम के बिल्कुल न करने या कर डालने में है,—थोड़ा करने या बहुत करने से नहीं। इन्द्रियों के निग्रह का मतलब ही यह है कि हम इन्द्रियों के विषयों से उन्हें पूरी तरह अलग रखें। यदि सुई की नोक से 'थोड़ा सा' छिद्र बना दिया गया तो उससे निकलने वाली धारा कुछ ही क्षणों में बढ़ कर प्रवाह बहाने वाले मार्ग के रूप में आ जाती है। इन्द्रियों को भोग का एक बार चस्का लग जाने पर उसे छोड़ना उसका निग्रह बड़ा कठिन हो जाता है। एक बार धारा में पड़ जाने पर फिर कौन लौट सकता है? इसलिए विचारने और सम्भलने का कोई समय है तो तभी है जब प्रलोभन 'थोड़ा सा' कहता हुआ हमारी इन्द्रियों को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा हो। उस समय कम से कम यह सोच लेना चाहिए कि जब मैं इस 'थोड़े से' प्रलोभन से अपनी इन्द्रियों को नहीं रोक सकता तो क्या बढ़ जाने पर रोकूंगा। इसलिए तुम्हारी इन्द्रियों के सामने आकर उन्हें वशीभूत करने का प्रयत्न करें तो कड़क के गंभीर स्वर से कहना चाहिए नहीं' कभी नहीं, बिल्कुल नहीं। क्या मैं इतना तुच्छ हूं कि इस 'थोड़ा सा' की बहकावट में आ जाऊंगा। यह मेरे दृष्टिपात के भी योग्य नहीं। मुझमें महाशक्ति प्रवाहित हो रही है। मैं अगाध हूं, अटल हूं।" इसके विपरीत इन्द्रियों के निग्रह के लिए, उनके आनन्द के लिए हमें उन्हें उन उत्तम कार्यों की ओर लगाना चाहिए जिनसे वे अपना कल्याण कर सकें। एक धूलिकण से हिमालय के समान पहाड़ खड़े हुए हैं, एक-एक बूंद से महासागर भरे हैं। एक-एक पल से मिलकर अनन्तकाल बना है, एक-एक परमाणु से जुड़कर यह विश्व ब्रह्माण्ड खड़ा है। एक-एक सत्कर्म के पुष्पों से महात्माओं की चरित्र मालायें गुंथी हुई हैं। एक-एक पग ऊपर रखने से उच्च से उच्च इन्द्रासन प्राप्त किये गये हैं। यही दिशा है जहाँ से चलकर हम इन्द्रियों का निग्रह कर सकते हैं।" आज भी आचार्य अभय देव जी का वह 'थोड़ा-सा' पर इन्द्रियों के निग्रह का उपदेश स्मरण हो रहा है। आइए, हम कुमार्ग से बचने के लिए अपनी आँख को अच्छी वस्तुओं के दर्शन में लगायें, अपने कानों से भगवान् की महिमा का सुमधुर गान सुनें, वाणी से स्वाध्याय द्वारा उत्पन्न अमृत रस का पान तथा मधुर भाषण करें, अपने हाथ पैरों को दूसरों के दुःख दूर करने के लिए दुःख उपस्थित करने के स्थान पर दुःखियों की सेवा के लिए तत्पर करें। अपने उपस्थादि स्थानों का प्रयोग ब्रह्मचर्य द्वारा शक्ति प्राप्त करने में लगायें। यही योग है। यही आनन्द का वास्तविक स्वरूप है।

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नवबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

'नियमों का पालन करो अगर बनना चाहते हो योगी'। सब कार्य नाप-तोल कर करो। तोलकर खाना चाहिए, तोलकर पीना चाहिए, तोलकर बोलना चाहिए, तोलकर चलना और तोलकर सोना चाहिए। इंद्रियों को सब चीजें दो, लेकिन उनका मार्ग देखकर कहीं कुमार्ग की वस्तुएं उन्हें न मिलें, यही इन्द्रिय निग्रह है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

: सात :

बुद्धि की महिमा

मनु महाराज के धर्म के दश लक्षणों में विद्या और बुद्धिको अलग २ माना गया है बिना पुस्तकों द्वारा अनुभव एवं श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान है। संसार में मनुष्य जो ज्ञान प्राप्त करता है वह विद्या है। बुद्धि द्वारा इस ज्ञान का विवेचन किया जाता है, इसकी अच्छाई और बुराई जानी जाती है। अनेक व्यक्ति पढ़े लिखे होते हैं परन्तु बौद्धिक दृष्टि से वे शून्य होते हैं। साँसारिक व्यावहारिक कार्यों से उनकी बुद्धि काम नहीं देती। बनारस से संस्कृत का महान् ज्ञान प्राप्त कर घर लौट कर बाजार में जाकर घी लाते हुए एक विद्वान् की कहानी आपको याद होगी। जिसने कटोरी में घी लिया और रास्ते में उसे दर्शन के आधार और आधेय का झगड़ा याद आ गया। वह सोचने लगा कि घी पर बर्तन है अथवा बर्तन में घी है 'घृताधारं पात्रं पात्राधारं घृतंवा' और उसने मन में तर्क वितर्क करने के पश्चात् जब घी को सड़क पर गिरा दिया तो उसे समझ में आया कि 'घृताधारं पात्रम्' पात्र में घी ठीक है। क्या इसे बुद्धि की न्यूनता न कहा जायेगा। मुझे गणित के एक विद्वान् की एक कहानी याद आती है। एक बार वह अपने परिवार के साथ जा रहे थे। रास्ते में नदी पड़ी। नदी में पानी कम था अतः उन्होंने नदी को एक सिरे से दूसरे सिरे तक नापा और गहराई को नोटकर औसत गहराई निकाली। औसत गहराई जान लेने के बाद बच्चों को नापा और उस औसत गहराई से उन्हें बड़ा पाकर नदी में घुस पड़े। थोड़ी देर बाद एक डूबने लगा तो उसे बचाया, दूसरा डूबने लगा तो उसे उठाया और जैसे-तैसे नदी के पार पहुँचे। किनारे पर पहुँचकर कागज पेंसिल लेकर अपने हिसाब की जांच की। हिसाब में कोई गलती न मिली तो वे परेशान होकर सोचने लगे —'लेखा जोखा ज्यों का त्यों कुनवा डूबा क्यों' इस विद्वान् को परिवार डूबने का कारण अन्त तक समझ में न आया।

न्यूटन विद्वान् था। उसके विषय में आता है कि उसने दो बिल्लियाँ पाल रखी थीं। एक बड़ी और मोटी, दूसरी छोटी और पतली। देर में घर पहुँचने पर उन्हें बाहर सर्दी में ठिठुरना पड़ता था। न्यूटन ने बढ़ई को बुलाकर कहा कि दरवाजे में दोनों बिल्लियों के लिए दो छेद बना दो जिससे मेरी अनुपस्थिति में भी वे घर में जा सकें। शाम को जब अपना कार्य समाप्त कर वे घर लौटे तो दरवाजे में बड़ी बिल्ली के लिए एक छेद देख कर वे बिगड़े और उन्होंने कहा कि छोटी बिल्ली कैसे अन्दर जायेगी। गणित के इस महान् विद्वान् को यह बात तब तक समझ में नहीं आई जब तक बढ़ई ने उसी छेद से एक के बाद दूसरी बिल्ली को अन्दर घुसाकर दिखा न दिया। अतः विद्या और बुद्धि में अन्तर है। बुद्धि के बिना विद्या का कोई महत्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं, उपयोग नहीं। इसी कारण बुद्धि के लिए वेद में गायत्री मंत्र में प्रार्थना की गई है। वहाँ परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा गया है—"धियो यो नः प्रचोदयात्' हे परमेश्वर हमारी बुद्धियों को प्रेरित करो। मुद्राराक्षस नाटक में चाणक्य को जब सभी विपरीत समाचार शिष्य ने सुनाये तो चाणक्य ने अपने शिष्य को सम्बोधित करते हुए और सान्त्वना देते हुए कहा कि बेटा, सोच मत करो—

जे बात कछु जिय धारि भागे
भले सुख सो भागहीं,
जे रहे तेहुं जाहि, तिनकी
सोच मोहि धिय कछु नहीं
सत जैन हूं सो अधिक
सावित्री काज की जेहि जग कहे
सो नन्द कुल की खन हारी
वृद्धि नित मो पर रहे

वास्तव में किसी व्यक्ति या समाज का जीवन उसका विकार है। विचारों की जन्मदात्री वह बुद्धि है। बुद्धि यह सारथी है जो जीवन रूपी रथ को अपनी दिशा की ओर ले जाता है। जिस तरह सारथी के विगड़ने से रथ अपने गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुँच सकता। वैसे ही यह जीवन भी बुद्धि के विचार से अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकता है। कठोपनिषद् में कहा गया है—

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु सारथिं विद्धि मन प्रग्रहमेव च। इन्द्रियाणि हयानहुर्विषयांस्तेषु नोचरान्। आत्मेन्द्रिय मनोयुक्त भोक्ते-त्याहर्मंगीषिणः यस्त्वविज्ञानृ भवत्ययुक्तन मनसा सदा तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वइव सारथेः। कठो० २-२-३-५

आत्मा का रथवाला—रथस्वामी जान, शरीर को रथ समझो, बुद्धि को सारथी और मन को लगाम समझो। बुद्धिमान् लोग इन्द्रियों को घोड़े और विषयों को उनकी घास कहते हैं। इन्द्रिय और मन से युक्त आत्मा को उसका भोक्ता कहते हैं। जो बुद्धि हीन असंयत मन वाला होता है, कोचवान के दुष्ट घोड़ों की भाँति इन्द्रियां उसके वश में नहीं रहतीं।

समाज में नये-नये परिवर्तन होते रहते हैं। नवीन-नवीन विचार पैदा होते हैं, नया-नया ज्ञान हमको मिलता है। इसका श्रेय बुद्धि को है। स्वामी दयानन्द में विद्या के साथ बुद्धि अर्थात् तर्क की शक्ति थी, यही कारण है कि उन्होंने अज्ञान, अन्ध-विश्वास, दुराचार और अनाचार के लिए क्रान्ति की, नया विचार दिया। इसीलिए तो कहा गया है कि 'बुद्धे फलमनाग्रहः' बुद्धिमान् मनुष्य किसी भी तत्त्व के लिए आग्रह नहीं रखता। गीता में कृष्ण ने अर्जुन को उस का मार्ग बतला कर अन्त में उससे कहा 'यथेच्छसि तथा कुरु' जैसा चाहो वैसा करो। वेद धर्म का अर्थ है विचार के अनुसार आचरण करना। जैसा बुद्धि कहे वैसा आचरण करना। भारतीय संस्कृति कह रही है—

मेरे उर के ज्ञान दीप को
बुझा न देना स्वामी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देखो, तुम्हारे स्वयं के हृदय में बुद्धि क्या करती है। जो निश्शंक आवाज सुनाई दे उसी के अनुसार आचरण कर 'मतिविरुद्धम्' अपनी-अपनी बुद्धि से तत्त्व को खोजना चाहिए। वेद धर्म का अर्थ है बुद्धि प्रधान धर्म। एक व्यक्ति की बात दूसरे व्यक्ति को नहीं जंचती, एक स्मृति की बात दूसरी स्मृति नहीं मानती, एक ऋषि का कथन दूसरा नहीं मानता। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब यही है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र रूप से अपने-अपने समय और काल के अनुसार सत्य को खोजने का प्रयत्न बुद्धि द्वारा ही करता है।

वैदिक संस्कृति कहती है कि प्रत्येक कदम बुद्धिपूर्वक रखो। दृष्टिपूतं न्यसेत्पादम्, वस्त्रपूतं जलं पिबेत्। विचार पूर्वक व्यवहार कीजिये। धर्म का अर्थ क्या है? धर्म का अर्थ यह है कि प्रत्येक काम आँख खोलकर करना। सुबह सात बजे उठकर संध्या करना और माला जपना ही धर्म नहीं। धर्म का अर्थ है चौबीसों घन्टे होने वाले कर्म, जन्म पर होने वाले। धर्म सब जगह है। इसलिए हमारे काम सब बुद्धिपूर्वक होने चाहिएं। कार्यों के धर्ममय होने का मतलब है कि वे वेदमय हों, विचारमय हों। इसका ही यह मलतब है कि प्रत्येक कर्म विचारपूर्वक कीजिए। लेकिन बुद्धि को शुद्ध बनाने के लिए हृदय की आवश्यकता होती है। हृदय और बुद्धि की एकरूपता से जिस महान् विचार का निर्माण हो, वही धर्म है। जिससे यह एकरूपता होती है, उसी को हम धर्म संस्थापक कहते हैं। समर्थ रामदास ने यह नहीं कहा कि कोई एक व्यक्ति धर्म संस्थापक है—

धर्म संस्थापक बहुत हो चुके, आगे भी वे होंगे। सचमुच, बुद्धि से विचार उत्पन्न होते हैं। विचार तलवार की अपेक्षा अधिक तेज हैं। विचार नवजीवन प्रदान करता है। विचारक कई प्रकार के होते हैं—

तर्क के अनुसार विचार करने वाला अपने विचारों को तौलता है। उनके विचारों में संतुलन है और निश्चय ही प्रधानता रहती है। उनकी बातों पर लोगों का विश्वास रहता है।

आशावादी विचारक जीवन को सुन्दर और शुभ रूप में देखता है और निराशावादी अशुभ विचारों से घिरा रहता है। उसे सदा भय लगा रहता है।

घमण्डी अपनी प्रशंसा में लगा रहता है। परन्तु हमें अच्छा विचारक बनने के लिए अपनी बुद्धि को प्रखर करने का प्रयत्न करना चाहिए। इसी कारण वेद में सद्बुद्धि की याचना की गई है। यजुर्वेद के ३२वें अध्याय के १३वें मन्त्र में कहा गया है—

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषँ स्वाहा ॥

(इन्द्रस्य प्रियं) जीवात्मा के प्रिय मित्र [काम्यं] कमनीय प्राप्तव्य और [अद्भुतं] विलक्षण [सदसः पतिं] विश्व के स्वामी के पास [सनिं] योग्य उपभोग की और [मेधा] उत्तम बुद्धि की [अयासिषम्] याचना करता हूं। [स्वाहा] स्वार्थ त्याग करता हूं।

दूसरे ३२। १४ मन्त्र में कहा है—

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥

विद्वानों के समूह और रक्षकों के समूह जिस उत्तम बुद्धि का सेवन करते हैं, हे तेजस्वी ईश्वर! उस बुद्धि से आप मुझे बुद्धिमान् कीजिए। मैं स्वार्थ त्याग करता हूं। यजुर्वेद के ३२।१५ मंत्र में कहा है :—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेधां मे वरुणो दधातु
मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च
मेधां धाता दधातु मे ॥

मुझे वरुण, अग्नि, प्रजापति, इन्द्र और सबका धारण-पोषण करने वाला भगवान् स्थिर बुद्धि दे।

मनुष्य जीवन को नियंत्रित, सुव्यवस्थित और मर्यादित रखने की विचारधारा की जनक बुद्धि को मेधा बुद्धि कहते हैं। इसके बाद दूसरी बुद्धि का नाम प्रज्ञा बुद्धि है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान से ऊपर जाकर यह प्रज्ञा नाम की बुद्धि उत्पन्न होती है। इससे ऊपर है प्रतिभा, जिसके प्राप्त होते ही अन्तरात्मा में ज्योति जाग उठती है। उस समय आत्मा को सत्य और असत्य, मिथ्या और अमिथ्या, झूठ और सच का बोध होने लगता है। आत्मा की आंखें खुल जाती हैं। आत्मदर्शन हो जाता है। मनुष्य परमात्मा की आवाज सुनने लगता है। यह हमें असत्य से हटाकर सत्य की ओर ले जाती है और मनुष्य में जब सत्य बुद्धि की प्रबलता हो जाती है, जीवन निर्मल और पवित्र बन जाता है। उस समय मनुष्य अपने तुच्छ भेदों को भुलाकर मानवता का प्रतीक बन जाता है। **'मनुर्भव'** अर्थात् मनुष्य हो जाता है, ऐसे समय हम में जिस बुद्धि की उत्पत्ति होती है उसे ऋतम्भरा कहते हैं। यह केवल सत्य को देखती है। रजस् और तमस् दोनों गुण परे हट जाते हैं। केवल सत्त्व गुण शेष रह जाता है। तब यह ऋतम्भरा बुद्धि जाग उठती है। इस बुद्धि को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है पूर्ण श्रद्धा, अटल विश्वास और सच्चे ज्ञान के साथ ईश्वरभक्ति। इस ईश्वरभक्ति द्वारा हम प्रभु से बुद्धि की प्राप्ति कर सकते हैं।

कर्म की गति गहन है। कर्त्तव्य क्या है, अकर्त्तव्य क्या है यह पहचान पाना सहज नहीं। धर्म और अधर्म की उलझन में धर्म का निर्भ्रान्त रूप से निश्चय कर पाना नितान्त कठिन है। बुद्धि के प्रकाश की मन्दता और तिमिर की महानता के कारण उपासक सविता देव के प्रकाश का आह्वान करता है। उस प्रभु के प्रकाश की प्रेरणा का प्रवाह शाश्वत काल से चल रहा है पर वह सबको मिलती नहीं। उसका सेवन आवश्यक है। उसे प्राप्त करने के नियम हैं। गंगा की पवित्र धारा अनन्त काल से अनवरत रूप से वह रही है, परन्तु वहां पहुँच कर पवित्र होने के लिए पुरुषार्थ चाहिए। पवन में प्राण शक्ति का प्रवाह चल रहा है, परन्तु, नस-नस और नाड़ी-नाड़ी में उस प्राण शक्ति के संचार के लिए अभ्यास चाहिए। सूर्य का प्रकाश सब कहीं फैल रहा है परन्तु उससे आयुष्यवर्धक रश्मियां लेने के लिए उनका सेवन आवश्यक है। आकाश में शब्द की धारायें प्रतिक्षण प्रवाहित हो रही हैं परन्तु उनके लिए ग्राहक मंत्र चाहिएं। ठीक इसी प्रकार प्रभु की प्रेरणा सब कहीं है पर उसके लिए प्रकाश से परिपूर्ण आत्मा चाहिए। वीणा के तार समस्वर होने पर ही एक तार पर अंगुली चलाने से समीप के दूसरे तारों से मधुर झंकार निकलती है; ठीक उसी प्रकार हृत्तन्त्री के तार मिले होने पर मन, बुद्धि और आत्मा के सविता देव के साथ समस्वर होने पर ही प्रभु प्रेरणा की झंकार निकल सकती है। परमात्मा के साथ तदाकार होकर हम उस प्रेरणा से धन-दौलत या ऐश्वर्य की मांग उस गायत्री मन्त्र में नहीं करते हैं, पुत्र और पशुओं की मांग नहीं करते हैं, अन्नादि की मांग नहीं करते हैं,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्य किसी सांसारिक वस्तु की याचना भी नहीं करते हैं। हम उस सविता देव से केवल यही मांग करते हैं कि वह कृपालु परमेश्वर हमारी बुद्धियों में सत्य प्रेरणा दे, ताकि हमारी बुद्धियां सदा सन्मार्गगामिनी रहें। बुद्धि ही मनुष्य को कर्म में प्रेरित करती है। सद्‌बुद्धि की प्रेरणा सत्कर्म के लिए होती है और असद्‌बुद्धि की प्रेरणा असत् कर्म के लिए। अतः गायत्री मंत्र में यह वर मांगा गया है कि वह दयालु हमारी बुद्धियों में इस प्रकार की प्रेरणा दें जिससे हम सदा सन्मार्गगामी बने रहें और कुमार्गगामी कभी न हों।

: आठ :

विद्या

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो, नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च, ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह।

विद्यायें नष्ट नहीं होतीं, चोर उन्हें नहीं चुराता है, दुःखदायी शत्रु भी इनका तिरस्कार नहीं कर सकता है, इनके ज्ञान से ही मनुष्य देवयज्ञ करता है, विद्वानों का सत्कार और संगति करता है। गोपतिः ज्योग् इन्द्रिय स्वामी जीवात्मा निरन्तर उनके साथ सम्बद्ध रहता है।

ब्लैकबोर्ड पर चाक का एक टुकड़ा फेंकिए, एक संस्कार उस पर पड़ जाएगा। इसी प्रकार मनुष्य जो कुछ देखता है, सुनता है उस सबका संस्कार उसकी आत्मा पर पड़ता है। साधारणतया हम यह समझते हैं कि जो क्रिया जिस समय करते हैं उतने समय के लिए उसकी प्रतीति होती है। कभी-कभी इस प्रकार भी होता है कि हमने रास्ते चलते किसी वस्तु को देखा और देख कर चले गये। फिर उसके विषय में किसी तरह की जिज्ञासा और किसी तरह का विचार नहीं उठता। परन्तु किसी समय सहसा वह विचारधारा या उस वस्तु की स्मृति जागृत हो जाती है। आप अवश्य सोचते होंगे कि आखिर इस वस्तु के कैसे दर्शन हो गये, यह स्मृति कहां से आ गई। मनोवैज्ञानिक इसका उत्तर देते हैं और कहते हैं कि प्रत्येक क्रिया और प्रत्येक वस्तु जो हम देखते, सुनते या किसी तरह उन सबकी रेखाएं हमारे मस्तिष्क पर पड़ती हैं, इनमें से किसी की रेखा हल्की, किसी की गहरी और किसी की साधारण होती है। ये सब रेखाएं अनुकूल साधन एवं परिस्थिति पाकर स्मृति के रूप में जाग खड़ी होती हैं। अर्थात् हमारी सभी क्रियाओं व चेष्टाओं की आत्मा पर एक अमिट-सी छाप पड़ती है जिसे मिटाना सम्भव नहीं। विद्या प्राप्त करना भी एक क्रिया है, चेष्टा है। उसकी भी आत्मा पर छाप पड़ती है, संस्कार पड़ता है और वह संस्कार मिटता नहीं। इसीलिए इस संस्कार को वेद ने अमिट कहा है। इस प्रकार विद्या प्राप्त करना एक क्रिया है। क्रिया के साथ परिश्रम और बुद्धि का योग होना चाहिए। उसमें सत्य को खोजने और जानने की उत्कण्ठा आवश्यक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब इस पर जब हम विचार करते हैं तो हमें पता चलता है कि विद्या दो प्रकार की है। ज्ञान दो प्रकार का है। एक आध्यात्मिक ज्ञान और दूसरा भौतिक ज्ञान अर्थात् विज्ञान। संसार में जीवन बिताने के लिए दोनों प्रकार का ज्ञान आवश्यक है। आध्यात्मिक ज्ञान का मतलब है— मैं क्या हूं, परमात्मा क्या है, जगत् क्या है, धर्म क्या है आध्यात्मिक ज्ञान हमें बतलाता है कि मनुष्य, पशु, पक्षी सभी परमात्मा के पुत्र हैं। यह मानव जाति मेरी है, ये सब मेरे भाई हैं और इनकी सेवा करने के लिए ही मुझे विज्ञान की आवश्यकता है। यदि आध्यात्मिक ज्ञान हमें नहीं प्राप्त हुआ और हम केवल भौतिक ज्ञान की उन्नति में लगे रहे तो विज्ञान सुरक्षित न बचेगा। विज्ञान सारे संसार का नाश कर देगा। विज्ञान से संसार सुन्दर बनने के बजाय भयानक बन जायेगा। जब तक हममें आध्यात्मिकता की भावना नहीं आती, आस्तिकता नहीं आती तब तक विज्ञान व्यर्थ है। ज्ञानहीन विज्ञान के हाथ में समाज को सौंप देना मानो बन्दर के हाथ जली हुई लकड़ी दे देने जैसा ही है। अतः सब लोग आपस में भाई-भाई बनें, सब एक ईश्वर के पुत्र बनें। 'मनुर्भव' मनुष्य बनना, यह विद्या का लक्ष्य है। यही वेद का उपदेश है।

यह बात ध्यान रखने की है कि मान लीजिए हमने मानव ऐक्ट को कल्पना द्वारा मानव प्रेम एवं सेवा की भावना अपने हृदय में सन्निहित कर दी और इस भावना से अभिभूत होकर रोगियों की सेवा का व्रत भी ले लिया। परन्तु उन रोगियों के कष्ट को हम कैसे दूर करेंगे? उसके लिए हमें विज्ञान की आवश्यकता पड़ेगी। विज्ञान का अर्थ है उन कामों को रोकने की जानकारी। रोगी की सेवा और दवा का ज्ञान न होने से हम उसे लाभ के स्थान पर हानि पहुंचा देंगे। आज-कल विज्ञान की बहुत अधिक वृद्धि हो गई है। स्टोव किस तरह जलाना चाहिए, पानी किस प्रकार साफ करना चाहिए, बिजली के पास कैसे रहना चाहिए, टेलीफोन किस प्रकार करना चाहिए, इंजैक्शन कैसे लगाना चाहिए, कौन-सी अच्छी सब्जी है, किस चीज में विटामिन्स हैं, किस तरह का व्यायाम अच्छा है, कौन-सी शिक्षा पद्धति, उत्तम है, प्रभावशाली भाषण कैसे दिया जा सकता है, गांवों में किस प्रकार स्वास्थ्य सुधार करना चाहिए, खाद कैसे तैयार की जा सकती है, बीज कितने अन्तर से बोना चाहिए, इस प्रकार एक दो नहीं सैकड़ों प्रकार के विज्ञान की हमें प्रतिदिन के व्यवहार में आवश्यकता रहती है। हमें इस प्रकार भौतिक विद्या प्राप्त करनी चाहिए। विज्ञान के बिना ज्ञान निरुपयोगी है और ज्ञान के बिना विज्ञान भयंकर है।

विद्या के ये दो भेद हैं। विद्या शब्द का अर्थ सत्यार्थप्रकाश में स्वामी दयानन्द ने लिखते हुए कहा है **"वेत्ति यथावत्तत्वपदार्थस्वरूपं यया सा विद्या यया तत्त्व स्वरूपं न जानाति भ्रमादन्यस्मिन्नन्यनिश्चिनोति यया सा अविद्या** जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या और जिससे तत्त्वस्वरूप न जान पड़े, अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है।

विद्या कभी नष्ट नहीं होती यह विद्या का प्रथम और मुख्य गुण है। संसार का धन, प्राकृतिक सम्पत्ति, भौतिक ऋद्धि काल पाकर नष्ट हो जाती है। ये सब संयोग से आती हैं। जहां संयोग है वहां वियोग है। धन-सम्पति आज एक के पास है कल चला-चंचला उसे छोड़कर दूसरे के पास चली जाती है। एक जगह धनियों की सन् १९२३ में हुई सभा का वर्णन पढ़ा था। इस सभा में दुनियां की सबसे बड़ी लोहा कम्पनी के प्रधान, अमेरिका के नेशनल सिटी बैंक के अध्यक्ष, अमेरिका की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सबसे बड़ी गैस कम्पनी के सभापति, गेहूँ के सबसे पड़े सट्टाबाज, न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज के प्रधान, अमेरिका के हाल स्ट्रीट के सबसे बड़े गोदाम के स्वामी, सारी दुनियाँ के देशों के सैटलमैंट बैंक के अध्यक्ष भी थे। ये सभी संसार के उन इने-गिने धनियों में से थे जिन्हें स्वयं भी यह पता न था कि उनके पास कितना धन है। परन्तु १५ वर्ष के बाद दुनिया की सबसे बड़ी लोहा कम्पनी के प्रधान चार्ल्स दीवालिया होकर मरे, दुनिया की सबसे बड़ी व्यापारी कम्पनी के प्रधान सेमुअल जीवन के अन्तिम दिनों में सड़कों पर भीख मांगते थे और छिपे हुए अपराधी भी थे। सबसे बड़ी गैस कम्पनी के प्रधान हावर्ड पागलों के हस्पताल में गये। गेहूँ के सट्टाबाज दीवालिया हुए। न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज के प्रधान विटने जेलखाने में पड़े और बन्दीगृह में उन की मृत्यु हुई। सबसे बड़े गोदामों के स्वामी ने आत्महत्या की। दुनिया के सारे देशों के बैंक के प्रधान फ्रेजर ने आत्महत्या की। इसीलिए वेद ने कहा है—

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुपतिष्ठन्त रायः।

ऋ० १०।११७।५

धन तो रथ के पहियों की भाँति लोट-पोट होते रहते हैं और दूसरों-दूसरों के पास जाते रहते हैं। आज एक धनी कल वही निर्धन है। धन सांयौगिक पदार्थ है। सांयौगिक का वियोग होकर ही रहता है। किन्तु विद्या का नाश नहीं होता। वह तो आत्मा का गुण है। यही कारण है कि चोर उसे चुरा नहीं सकता, डाकू उसे लूट नहीं सकता, उचक्के उसे पा नहीं सकते। किसी संस्कृत के कवि ने ठीक ही लिखा है—

हर्तुर्न गोचरं याति दत्ता भवति विस्तृता।
कल्पान्तेऽपि न या नश्येत् किमन्यद्विद्यया समम्॥

चोर की दृष्टि में आती नहीं और देने से बढ़ती है, सृष्टि के नाश होने पर नष्ट नहीं होती। ऐसी विद्या के तुल्य और कौन वस्तु हो सकती है? **"पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते"** विचित्र है यह विद्या। गुरु शिष्य को अपना सम्पूर्ण धन विद्या धन दे देता है परन्तु यह विद्या धन गुरु का घटता नहीं, कम नहीं होता वह बढ़ता ही जाता है। दुनिया की अन्य वस्तुएं देने से घटती हैं। यह घटती नहीं। यही इसकी विचित्रता है। तभी तो वेद कहता है—

न दभाति तस्करः

विद्वान् व्यक्ति की निशानी है कि संसार की कोई शक्ति उसे भयभीत नहीं कर सकती। विद्वान् आत्मा की शक्ति को पूर्ण तरह समझ लेता है, उसमें उत्तमोत्तम श्रेष्ठ गुणों का विकास हो जाता है, उसमें आत्मिक शक्ति का संचार होता है ऐसी दशा में कौन उसे दबा सकता है। परमेश्वर सर्वज्ञ है। ज्ञान या विद्या मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाती है और उस समय हमें इस संसार में कभी अकेलापन अनुभव नहीं होता क्योंकि ज्ञान द्वारा ईश्वर की निकटता का अनुभव हमें होता रहता है और हमें ऐसा विश्वास हो जाता है कि हममें ऐसी दिव्यता है जिसे कभी समाप्त नहीं किया जा सकता। ज्ञान द्वारा जब हम प्रभु से अपना सम्बन्ध बना लेंगे तब हम निडर हो जायेंगे, हटेंगे नहीं। सच तो यह है कि ईश्वर के प्रकाश में कदम रखते ही मनुष्य की सब दुर्बलतायें, सब पाप, सूर्य के सामने अन्धकार की तरह नष्ट हो जाते हैं। बस, एक बार ज्ञान के आधार सर्वज्ञ ईश्वर में विद्या द्वारा विश्वास एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसके पास जाओ। वह अपने अनुपम सौन्दर्य से तुम्हें सुन्दर बना देगा, अपनी उज्ज्वलता से तुम्हें उज्ज्वल बना देगा। अपनी निडरता से तुम्हें निडर बना देगा। ज्ञान से मनुष्य प्रभु के निकट आता है। यही ज्ञान की विशेषता है।

एक बार एक जहाज में नवदम्पति यात्रा कर रहे थे। अभी-अभी उनका विवाह हुआ था। पति सेना में मेजर था। तूफान आया। समुद्र की लहरों ने जहाज को पटकना शुरू किया। कप्तान ने खतरे की पहली सीटी बजाई, दूसरी बजाई, परन्तु पत्नी द्वारा ध्यान आकृष्ट करने पर भी मेजर ने बचने का कोई उपाय नहीं किया। तीसरी सीटी बजने पर पत्नी ने कहा कि तुमने बचने का कोई उपाय नहीं किया। अब क्या करोगे। मेजर ने अपनी तलवार निकाल ली और उसकी नोक पत्नी की छाती में चुभाने के लिए बढ़ाई। पत्नी डरी नहीं, मुस्कराती रही। उन्होंने डपट कर मार डालने की धमकी दी परन्तु वह घबराने के स्थान पर मुस्कराती रही। मेजर ने तलवार हटाई और पूछा कि तुमने अपने बचने का कोई चिन्ता नहीं की, तुम डरी नहीं, भयभीत नहीं हुई। क्या तुम्हें डर नहीं लगा कि मैं तुम्हें मार डालूंगा? पत्नी ने मुस्कराते हुए कहा "मैं तुम्हारी प्रेमिका हूँ। मुझे विश्वास है कि तुम मेरा कुछ बिगाड़ोगे नहीं। तुम्हारी यह तलवार मुझे कोई क्षति नहीं पहुँचा सकती। तुम तो मेरे रक्षक हो। तब मुझे डर क्या?" मेजर ने कहा "प्रियतमे! जैसे तुम मेरी शरण में रहकर मेरे तलवार दिखाने पर भी भयभीत नहीं हो रही हो, टस से मस नहीं हो रही हो उसी तरह हम सब भी अपने प्रियतम प्रभु की इन तलवार की नोकों से क्यों डरें? यह तूफ़ान हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते जब कि हमारा रक्षक प्रियतम हमारे ऊपर अपने करुणामय हाथों को रखे हुए है।" यह है ज्ञान का, विद्या का उपदेश। डूबने का गम तो प्रभु के विरोधी को होगा, उसके भक्त को नहीं। ठीक ही कहा है—

डूबने का गम मुझे बिल्कुल नहीं।
मैं तेरा, दरिया तेरा, किश्ती तेरी, साहिल तेरा॥

विद्वान् व्यक्ति दूसरों के धन या दूसरों की वस्तु की कामना भी नहीं करता। उसे तो उसका दाता सदा दिखाई देता है। कबीर ने कहा है—

हरिजन गांठ न बांधई, उदर समाता लेई।
आगे पाछे हरि खड़े, जब मांगे तब देई।

जब विद्वान् का रक्षक प्रभु है, दाता प्रभु है तो उसे भय कहां? उसे डर कहां?

इस मन्त्र में विद्या के एक और गुण का उल्लेख किया गया है कि विद्या का कोई दुःखदायी शत्रु नाश नहीं कर सकता है। विद्या के बल से मनुष्य में उत्तमोत्तम श्रेष्ठ गुणों का विकास होता है। विद्या के कारण महाविद्वानों, ज्ञानियों की संगति में बैठने की योग्यता आती है। विद्वान् और जिज्ञासु दोनों ही उसका आदर करते हैं। इसी लिए वेद कहता है **"नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति"** अर्थात् कोई शत्रु इसका नाश नहीं कर सकता। इतना ही नहीं, आगे कहा है **"देवांश्च याभिर्यजते ददाति च"** इस विद्या द्वारा मनुष्य बड़े-बड़ों से मेल करता है। किसी संस्कृत के कवि ने लिखा है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संयोजयति विद्यैव नीचगापि नरं सरित्।
समुद्रमिव दुर्धर्षं नृपं भाग्यमतः परम्।

अर्थात् नीचे जाने वाली नदी समुद्र ऐसे महाशय जलाशय से जा मिलती है, इसी प्रकार विद्या चाहे वह नीच पुरुष में क्यों न हो, उस विद्वान् को राजा से मिला देती है।

अन्तिम विशेषता का उल्लेख करते हुए मन्त्र कहता है **'ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह'** विद्या का दान करने वाला ज्ञानपति निरन्तर विद्या से सम्बद्ध रहता है। अर्थात् विद्या दान करने से विद्या बढ़ती है, घटती नहीं। किसी संस्कृत के कवि ने विद्या के विषय में कहा है—

ज्ञातिभिर्वण्ट्यते नैव चौरेणापि न नीयते।
दानेनैव क्षयं याति विद्यारत्नं महाधनम्।

विद्या रत्नरूपी महाधन को सम्बन्धी लोग बांट नहीं सकते, चोर इसे नहीं ले जा सकता, दान से यह नष्ट नहीं होता। दूसरे ने कहा है:—

न चौरहार्यं न च राजहार्यं, न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधन प्रधानम्।

अर्थात् विद्या को चोर नहीं चुरा सकता, राजा नहीं छीन सकता, भाई नहीं बांट सकते, यह भार रहित है। व्यय करने पर नित्य बढ़ती है। अतः विद्या धन सब धनों से श्रेष्ठ है।

इसीलिए मनु महाराज ने धर्म के दश लक्षणों में विद्या को भी धर्म का एक चिह्न माना है। आइए, हम भी परा, अपरा, भौतिक, आध्यात्मिक, ज्ञान, विज्ञान या विद्या और अविद्या (कर्म) का समन्वय कर अपना जीवन सार्थक करें।

: नौ :

सत्य को अपनाइये

पाँच यमों में सत्य को योगदर्शनकार ने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। व्याकरण के अनुसार 'सत्य' शब्द 'अस् भुवि' धातु से बना है। इस 'अस्' धातु में शत् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनता है। इसका अर्थ होता है 'अस्ति'। सत् ब्रह्म को भी कहते हैं। 'यदस्ति त्रिषु कालेषु न बाध्यते तत् सद् ब्रह्म' जो सदा वर्तमान अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमान कालों में जिसका बाध न हो उस परमेश्वर को 'सत्' कहते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय समुल्लास)। इसका अर्थ 'सते हितम्' भी है। अर्थात् जो तीनों कालों में एक-सा ही रहे और जिसमें हित हो उसे सत्य कहते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। केवल परमात्मा ही सदा तीनों कालों में एक रूप है। इस सत्य की जिसने भक्ति की है, उसे अपने हृदय में बिठा दिया है, वह व्यक्ति सच्चा हो सकता है।

उपनिषद् में 'सत्यम्' इस शब्द को तीन शब्दों का संघात बतलाते हुए कहा है—

त्र्यक्षरं सत्यं 'स' इत्येकमक्षरं, यदित्येकमक्षरं प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यं, मध्यतोऽनृतं तदेतदनृतं: सत्येन परिगृहीतम् सत्यं यभूनेव भवति नैव विद्वांसं नृतं व्यनस्ति।

(वृहदारण्यकोपनिषद् आ. ५. ब्रा. ५. कं: १)

अर्थात् इस सत्य शब्द में तीन अक्षर हैं 'स त् य' प्रथम सकार और उत्तम अर्थात् यकार ये दोनों अक्षर सत्य हैं। इन दोनों स, य में परमात्मा वाचक अकार विद्यमान हैं। अत: ये सत्य हैं और मध्यगत 'त' हल होने से अनृत असत्य है। परन्तु यह अनृत दोनों ओर से सत्य से गृहीत है। इसी कारण जगत् में सत्य की अधिकता है, ऐसा जानने वाले को असत्य नष्ट नहीं करता।

वास्तव में भौतिक जगत् में जो स्थान प्रकाश का है, आध्यात्मिक जगत् में वही स्थान सत्य का है। सत्य ऐसा महाव्रत है जो सब देशों, धर्मों और सम्प्रदायों में भली भाँति माना जाता है। सत्य की महिमा का कहाँ तक वर्णन किया जाय। महाभारत में लिखा है 'नास्ति सत्यात्परो धर्मः (शान्तिपर्व १६२.२४) सत्य से श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं। दूसरी जगह लिखा है—

अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम्।
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यते।

हजार अश्वमेध यज्ञ और सत्य की तुलना की जाय तो सत्य ही अधिक होगा। वेद में तो सत्य की महिमा का वर्णन करते हुए यहाँ तक लिखा है कि सारी सष्टि की उत्पत्ति से पहले 'ऋत' और 'सत्य' उत्पन्न हुए और सत्य से आकाश, पृथ्वी, वायु आदि पंच महाभूत स्थित हैं **"ऋतं च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत" "सत्येनोत्तभिता भूमिः"** अर्थात् यह पृथ्वी सत्य पर टिकी हुई है। सत्य शब्द का तात्पर्य भी रहने वाला अर्थात् जिसका कभी अभाव न हो अथवा **"त्रिकाल अबाधित"** है सत्य के विषय में मनु महाराज ने एक बात और लिखी है—

वाच्यार्थाः नियताः सर्वे वाङ्मूलाः वाग्विनिःसृताः।
तां तु यः स्तेनयेद्वाचं स सर्वस्तेयकृन्नरः।

अर्थात् मनुष्यों के सब व्यवहारों का आधार वाणी है। एक विचार दूसरे को समझाने का सबसे बड़ा साधन और एक मात्र साधन वाणी है। अतः जो व्यक्ति वाणी की चोरी करता है, वह सम्पूर्ण वस्तुओं को चुराने वाला है।

प्राचीन काल में जब विद्यार्थी अपनी शिक्षा समाप्त कर कार्य क्षेत्र में प्रवेश करता था तो उसे सबसे पहले आचार्य **'सत्यं वद'** सच बोलो–यह उपदेश देता था। मनुस्मृति में मनु महाराज ने लिखा है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'सत्यपूतां वदेद्वाचं, सत्य से पवित्र वाणी का प्रयोग करें। मृत्युशय्या पर पड़े भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को सब उपदेश देने के बाद प्राण छोड़ते हुए सब धर्मों का सार सत्य को माना और उन्होंने कहा 'सत्ये तिष्ठयितव्यम् वः सत्यं' हि परमं बलम्' सत्य का ही व्यवहार करना चाहिए, सत्य ही परम बल है। महात्मा गांधी ने सत्य को परमात्मा और परमात्मा को सत्य माना है। गांधीवाद का मूल आधार यही आस्तिकता या सत्य है। अनेक सन्तों और महात्माओं ने सत्य की महिमा का गान एया है। दादू-दयाल ने कहा है:—

सांचा नांव भगवान का, सोई सत करि जाणि,
निहचल कर ले बन्दगी, 'दादू' सो परवाणि।

नाम तो भगवान् का ही सच्चा है। केवल उसी को सत्य समझना चाहिए। स्थिर बुद्धि से तू उसी सत्य के नाम की खिदमत कर, यही एक प्रामाणिक बात है। कबीर ने कहा है:—

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय हरि आप॥

सत्य के समान दूसरा तप नहीं और असत्य के समान दूसरा पाप नहीं, जिसके हृदय में सत्य बसता है, उस हृदय में समझो प्रभु का निवास है।
जगजीवन ने लिखा है:—

सत समरथ से राखि मन, करिए जगत् काम।
'जगजीवन' यह मन्त्र हैं, सदा सुक्ख बिसराम।

यदि तू सदा सुख और शांति चाहता है, तो यह महामन्त्र सीख ले। 'तू मन तो अपना 'सत् समर्थ पुरुष' में लगाये रख और जगत् के कर्त्तव्य कर्म करता जा।"

झूठे को तजि दीजिए, साँचे में करि भेद।

नानक ने कहा है—

आदि सचु, जगादि सचु, है भी सचु, 'नानक' हो सी भी सचु

आदि में सत्य था, युगादि में सत्य था। सत्य आज भी है और आगे भी सत्य रहेगा।
धर्मदास ने कहा है —

हम सत्य नाम के बैपारि।
कोई कोई लादा कांसा पीतल, कोई कोई लौंग सुपारी।
हम तो लादा नाम धनी का, पूरन खेप हमारी।
पूंजी न टूटे नफा चौगुना, वनिज किया हम भारी।
हाट जगाती रोक न सकी है, निर्भय गैल हमारी।

हम तो बाबा 'सत्य' नाम के व्यापारी हैं। कोई तो कांसा पीतल लाद कर लाते हैं और कोई लौंग सुपारी का बनिज करते हैं पर हम तो स्वामी के सत्य नाम की पूरी खेप लाद कर लाये हैं। इस वनिज में कभी पूंजी की कमी नहीं आई और लाभ चौगुना होता है। 'सत्य' नाम का अनमोल माल लाद कर हम बनिज करते जा रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्लेटो का कहना है कि सत्य के बोलने और सुनने के समान और कोई वस्तु आनन्ददायिनी नहीं होती। यही कारण है कि ईमानदार और सच्चे व्यक्ति के साथ सम्भाषण करने में बड़ा आनन्द आता है। जो कोई बात न तो धोखा देने के इरादे से करता है और न सुनता है। छल-रहित सीधे-सादे सत्य से थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कह दिया जाता है। रघुवंशियों के जीवन में व्याप्त इस मर्यादा का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास अपने रघुवंश काव्य में लिखते हैं कि वे सत्य की रक्षार्थ बहुत कम बोलते थे। यही सज्जन पुरुषों की रीति है। सत्य का परिणाम अमिट सुख की प्राप्ति होता है और यह स्वर्ग की सीढ़ी होता है।

स्वामी दयानन्द का जीवन सत्य का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने व्यक्ति के सुख और राष्ट्र तथा समाज के निर्माण के लिए सत्य की महिमा का वर्णन ही नहीं किया परन्तु उसे क्रिया रूप में परिणत करके रख दिया। आज हमारे राष्ट्र की दुर्दशा का क्या कारण है? असत्य और बेईमानी प्रत्येक स्थान पर दिखाई देती हैं। विद्यालयों के अधिकारी अपने असत्य आचरण से राष्ट्र की जड़ खोखली कर रहे हैं। सरकार से अधिक पैसा लेने के लिए मैनेजर्स गलत रिटर्न तैयार करने वाले आचार्य का सत्य का उपदेश छात्र पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकता है।

सत्य का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप वह होता है जो विश्वव्यापी अनुभव में आने पर भी खरा और अपरिवर्तित सिद्ध हो। सत्य पर किसी एक व्यक्ति या राष्ट्र का अधिकार नहीं होता और न हो सकता है। सत्य की खोज बड़ा श्रेष्ठ कार्य होता है और उसका प्रकाश करना कर्त्तव्य होता है। सत्य को जानने के लिए हृदय में सच्ची तड़प होनी चाहिए। क्रिया में आने पर सत्य मनुष्य के जीवन का विशेष अंग बन जाता है। सत्य का बीज शुद्ध मन में जमता है, अतः सत्य द्वारा ही मन की शुद्धि करनी चाहिए।

सत्य की खोज करने वाले अनेक बुद्धिमान् व्यक्ति हो सकते हैं परन्तु विरोध के बवंडर में सत्य पर आरूढ़ रहने वाले बिरले ही होते हैं। इटली के समाज सुधारक सन्त सावो नरोला ने ईसाई धर्म और राज्य दोनों में व्याप्त अनाचार और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठा कर उनमें अपेक्षित सुधार किया। धर्म का सुधार करने और सत्य की ज्योति प्रज्वलित करने के कारण स्वार्थियों और समाज के मूर्ख शत्रुओं द्वारा उसका विरोध हुआ, उसके शत्रुओं ने उसका सामाजिक बहिष्कार किया और अन्त में उसे फांसी लगा कर मार दिया, परन्तु सन्त अपने सत्य प्रचार से विरत न हुआ।

स्वर्ग का पासपोर्ट देने के बहाने अन्ध विश्वास और अज्ञान में निमग्न भोली-भाली जनता का धन एवं सर्वस्व लूटने वाले महान् पोप की अलौकिकता का विरोध करने और अपने पुरुषार्थ तथा सत्कर्मों से मुक्ति प्राप्त करने के उपाय की घोषणा करने और दुराचार, अनाचार एवं अन्धकार से आवृत्त ईसाई धर्म में अपेक्षित सुधार लाने के कारण महान् लूथर के विरुद्ध विरोध का तूफान खड़ा किया गया। उसका सामाजिक बहिष्कार हुआ। पोप के क्रोध और पशुबल ने अग्नि वर्षा की परन्तु वह वीर अडिग रहा और अन्त में उसके सत्य सिद्धान्तों की विजय हुई।

सुकरात ने एकेश्वरवाद और बुद्धिवाद का प्रचार करके यूनान में ज्ञान की ज्योति जगाई जिससे मूर्ख लोगों ने उस पर नास्तिकता और यूनान के नवयुवकों को पथभ्रष्ट करने का आरोप लगाकर उसे समाप्त करने का षड्यन्त्र रचा। उसने जीवन की बाजी लगाकर भी अपने सत्य सिद्धांतों का प्रचार एवं प्रसार करना जारी रखा। अन्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में प्रसन्नतापूर्वक जहर का प्याला पीकर उसने अपने सत्य सिद्धांन्तों की रक्षा की।

आर्यसमाज के प्रर्वत्तक महर्षि दयानन्द ने अपने को सर्वथा मिटा कर वैदिक सूर्य के चारों ओर छाये हुए अविद्या, अज्ञान, मिथ्या विश्वास और कुरीतियों के बादल हटा कर सत्यार्थप्रकाश किया और सत्य की बलि वेदी पर हँसते-हंसते अपने प्राणों की आहुति दे दी।

सत्य आचरण का विषय है। सत्याचरण के मार्ग में दुर्भावनायें, कामान्धता, स्वार्थ और द्वेष प्रबल बाधायें है। इन्हें दूर कर हमें सत्य का आचरण करना चाहिए। सत्य के अप्रयोग के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। सत्य के उदाहरण भारत के इतिहास में तो हजारों भरे पड़े हैं। राजा हरिश्चन्द्र जैसा सत्यवादी दुर्लभ है। यूरोप के इतिहास में सत्य की कुछ विचित्र घटनायें मिलती हैं। स्काटलैंड के लोगों ने इंगलैंड के राजा के विरुद्ध विद्रोह किया जिसके असफल होने पर विद्रोहियों को बड़ी निर्दयतापूर्वक कुचल दिया गया। लोगों को कतार में खड़ा कर गोली से उड़ा दिया गया। एक बार एक पन्द्रह वर्ष के लड़के को गोली से उड़ाने के लिए जब कतार में खड़ा किया गया तब सेनापति ने उससे क्षमा माँगने को कहा और छोड़ने का वचन दिया। लड़के ने क्षमा मांगने से इन्कार कर दिया। सेनापति ने लड़के से कहा "मैं तुम्हें २४ घण्टे की छुट्टी देता हूँ। तुम्हारा कोई प्रियजन हो तो जाकर उससे मिल लो।" लड़का अपनी अकेली मां से मिलने घर चला गया। जाकर देखा कि मां बेहोश पड़ी है। मां को होश में लाने पर उसने कहा "मां, मैं आ गया हूँ।"

अपने इकलौते पुत्र का मुंह देखकर और यह सोचकर कि पुत्र की जान बच गई, माँ को अपार हर्ष हुआ। उसने बालक को गोद में बिठा कर बहुत प्यार किया।

समय समाप्त होता हुआ जानकर बालक जाने की तैयारी करने लगा। माँ ने पूछा, "बेटा, कहां जाते हो?" बालक की आंखों में आंसू आ गये। हृदय को सम्भाल कर उसने उत्तर दिया "माँ, मुझे २४ घण्टे की छुट्टी मिली थी। मृत्यु दण्ड पाने को कैम्प जा रहा हूँ। ईश्वर तुम्हारा रक्षक है।"

बालक को देखकर सेनापति ने उसके सत्य से प्रसन्न होकर उसे मुक्ति की आज्ञा दे दी।

आज विश्व में सर्वत्र अशांति विद्यमान है। मनुष्य इसकी तह में जाकर देखे तो इसका मूल कारण सत्य को छोड़कर असत्य की उपासना ही है। इसलिए आइये हम आज 'अनृतात् सत्यमुपैमि' अनृत से दूर जाकर सत्य को प्राप्त करें। जब यह अवस्था हमारी आयेगी तो हमारे कष्ट समाप्त होंगे। अन्याय दूर होंगे। हमारा जीवन सरल और स्वाभाविक बनेगा। परमेश्वर सत्य के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करे और हमें सत्य का उपासक बनाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

: दस :

क्रोध से बचिए

मैंने बहुत पहले कहीं एक दृष्टान्त पढ़ा था कि एक विशाल शीशे के महल में इधर-उधर से भटकता हुआ एक कुत्ता आ गया और हजारों शीशों में अपने प्रतिबिम्ब को देखकर और यह समझकर कि ये सब कुत्ते उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे वह उन पर भौंकने लगा। ज्यों-ज्यों वह भौंकता त्यों-त्यों उसकी ही आवाज की प्रतिध्वनि उसके कानों में जोर-जोर से आती। वह और जोर से भूंका। सब कुत्ते अधिक जोर से भूंकते हुए दिखाई दिए। आखिर वह क्रोध में उत्तेजित होकर उन पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा जोर-जोर से उछला कूदा, भूंका और चिल्लाया। अन्त में गश खाकर गिर पड़ा।

उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया। हजारों कुत्तों को देखकर डरा नहीं, उत्तेजित नहीं हुआ, प्यार से अपनी पूंछ हिलाई। सभी कुत्तों की दुम हिलती दिखाई दी वह प्रसन्न होकर आगे बढ़ा। सब उसकी ओर प्रसन्नता से आगे बढ़े। वह उछला, कूदा, अपनी ही प्रतिकृति से खेला और इस महल से प्रसन्नता के साथ बाहर चला गया।

वास्तव में यह संसार भी काँच के महल जैसा है। अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों पर क्रोध नहीं करते, आप चिड़चिड़ाते नहीं, तो दूसरे मनुष्य भी आप से ऐसा व्यवहार करेंगे और इसके विपरीत आप चिड़चिड़े हैं, क्रोधी हैं, उत्तेजना में आ जाते हैं तो अन्य लोग भी आपको ऐसे ही करते हुए दिखाई देंगे।

यही कारण है कि गीता में कृष्ण ने कहा:—

> त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः
> कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत्।
>
> (गीता, १७, २१)

अर्थात् काम, क्रोध तथा लोभ ये तीन नरक के द्वार हैं, इनको छोड़ देना चाहिए।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्रोध मनुष्य में कैसे उत्पन्न होता है? गीता में इसकी भी क्रमपूर्वक व्याख्या की गई है और बताया गया है कि —

> ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते
> संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।
>
> (गीता, २२, ६२)
>
> क्रोधाद्भवति संमोह समोहात्स्मृतिविभ्रमः।
> स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।
>
> (गीता, २२, ६३)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष का इन विषयों में संग बढ़ जाता है। फिर इस संग से यह वासना उत्पन्न होती है कि हम को काम (अर्थात् वह विषय) चाहिए। और (इस काम की तृप्ति होने में विघ्न होने से) उस काम से ही क्रोध की उत्पत्ति होती है और क्रोध से संमोह अर्थात् अविवेक होता है, संमोह से स्मृतिभ्रम और स्मृतिभ्रम से बुद्धि का नाश और बुद्धिनाश से (पुरुष का) सर्वस्व नाश हो जाता है।

इसे हम इस प्रकार कह सकते हैं कि कि क्रोध को उत्पन्न करने में कुछ खास बातें सहायक होती हैं। जैसे हम दूसरों का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारों की, कामों की, भावनाओं की आलोचना करना अपना धर्म समझते हैं। और जब दूसरों की बिना समझे आलोचना करते हैं, उस समय हम अनाप-शनाप कुछ का कुछ कहने लगते हैं और इस प्रकार क्रोध हमें बुद्धिच्युत करके नाश की ओर ले जाता है। अब यदि हम न भी आलोचना करें तो भी दूसरे तो हमारी आलोचना से बाज न आयेंगे। ऐसे समय के लिए यदि हम जरा-सी सावधानी से कार्य लें तो हम क्रोध से बच सकते हैं। हमारा आलोचक हमारी बुराइयों को स्पष्ट ही तो कर रहा है। जो हमारी कमजोरियों को दिखाये उससे क्रोध करने के स्थान पर हम अपने को सुधार भी तो सकते हैं। ऐसी स्थिति में इस क्रोध से अपने को दूर रखकर हमें अपने को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए। कबीर ने कहा है—

निन्दक नियरे राखिए आंगन कुटी छवाय,
बिन साबुन पानी बिना निर्मल करे सभाय।

दादू दयाल ने लिखा है—

निन्दक बाबा बीर हमारा बिन ही कौड़ी बहे बिचारा।
आपन डूबे और को तारे, ऐसी प्रीतम पार उतारें।

क्रोध का दूसरा कारण दूसरों के प्रति कटु वचनों का प्रयोग हैं। क्रोध एक ऐसा भाव है कि अपने प्रति व्यवहृत होता हुआ वह हममें प्रविष्ट भी होता है। हमें अपने व्यवहार में मिठास लाने का प्रयत्न करना चाहिए। वाणी की और व्यवहार की मिठास में हमें एक कौड़ी भी खर्च नहीं करनी पड़ती पर करोड़ों दिलों को जीता जा सकता है। सभी के दिल हमारे जैसे ही हैं। किसी दूसरे व्यक्ति को कष्ट पहुंचाना, उससे कड़ुआ बोलना शोभा की बात नहीं।

घट घट में वह सांई रमता,
कटु वचन मत बोल रे !

वेद में कहा हैं:—

मधुमती स्थ मधुमतीं वाचमुदेयम्। अ० १६। २।२

प्रजाजनो ! तुम, मीठे स्वभाव से युक्त हो, मैं मीठा भाषण बोलूं। सबको आपस में मीठा भाषण करना उचित है, क्योंकि उसीसे अहिंसामय शांति सर्वत्र स्थापित होकर जगत् वश में आ सकता है।

अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक इमर्सन के जीवन की एक घटना है। उन्हें गाय पालने का शौक था। इसलिए गाय और नन्हें बछड़े उनके मकान के पास एवं कुटी में रहते थे। एक बार जोरों की बारिश आने वाली थी। सभी गायें तो झोंपड़ी के अन्दर चली गई पर एक बछड़ा बाहर ही रह गया। इमर्सन और उसका लड़का दोनों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिलकर उस बछड़े को पकड़ कर खींचने लगे कि वह कुटी में चला आये। पर ज्यों-ज्यों उन्होंने जोर से खींचना शुरू किया त्यों-त्यों वह बछड़ा भी सारी ताकत लगाकर पीछे हटने लगा। इमर्सन बड़े परेशान हुए। इतने में उसकी बुड्ढी नौकरानी उधर से निकली। जैसे ही उसने यह तमाशा देखा वह दौड़ी आई और अपना अगूँठा बछड़े के मुंह में प्यार से डाल दिया और वह झोंपड़ी में आराम से चल दिया। बछड़ा चुपचाप कुटी के अन्दर चला गया। इस प्रकार प्रेम का व्यवहार जानवरों को भी वश में कर सकता है; मनुष्य की तो बात ही क्या ?

इसके अतिरिक्त पीठ पीछे निन्दा, चोरी, असत्यभाषण आदि अनेक दुर्गुण मनुष्य में क्रोध से उत्पन्न होते हैं। जब क्रोध हमारी बुद्धि का ही नाश कर देता है तो दुर्गुणों के आने का मार्ग साफ हो जाता है। बचपन में एक कहानी पढ़ी थी कि एक स्त्री ने एक नेवला पाल रखा था। वह नेवला उसके परिवार के व्यक्ति की तरह उसके व्यवहार से बन गया था। एक दिन अपने सोते हुए छोटे बच्चे को उस नेवले के पास छोड़कर थोड़ी दूर कुंए पर पानी लेने चली गई। उस समय भयंकर गेंडचन सांप बच्चे के पास आया। वह उसे मार ही डालता कि इतने में नेवले ने उसे पकड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और अपनी स्वामी-भक्ति के प्रदर्शन के लिए पानी लेकर लौटती हुई स्त्री के सामने पहुँचा। उसके लहू-लूहान मुख को देखकर स्त्री ने सोचा कि इसने बच्चे की ही हत्या कर दी है। उसे क्रोध आया और क्रोध के आवेश में वह घड़ा उस नेवले पर दे मारा। अन्दर आने पर अपने बच्चे को देखकर और साँप को मरा हुआ पाकर उसे अत्यन्त दुःख हुआ।

क्रोध के समय भी हमें क्रोध नहीं करना चाहिए और अपने को वश में रखकर उत्तर देना चाहिए या कर्तव्य करना चाहिए। जो व्यक्ति अपने क्रोध को वश में रखकर अपना जीवन बिताते हैं, उन्हें प्रायः अभूतपूर्व सफलता मिलती है। इंग्लैंड में चुनावों में अनुदार और उदार दलों में चुनाव की होड़ लगी हुई थी। लायड जार्ज अपना चुनावभाषण दे रहे थे। हाल खचाखच भरा हुआ था। अपने भाषण के अन्त में वे जोर से बोले "मैं सब देशों के लिए आजादी चाहता हूँ—इंगलैंड के लिए भी पूर्ण आजादी, यूरोपीय देशों को लिए भी पूर्ण आजादी, भारतवर्ष के लिए भी पूर्ण आजादी।"

इतने में एक आदमी जो भारत की आजादी के नाम से जलभुन जाता था, अचानक खड़ा होकर गुस्से में चिल्लाकर बोला "जहन्नुम के लिए भी आजादी।" लोग हंसने लगे। अब यदि लायड जार्ज ठीक उत्तर न दे पाते तो उनके भाषण का सारा असर मिट्टी में मिल जाता। वे खड़े हो गये और शांत भाव से मुस्कराते हुए बोले "जी हां, मैं जरूर चाहता हूँ कि हर एक व्यक्ति अपने अपने देशकी आजादी के लिए खड़ा हो।"

सब कहकहा मार कर हंस पड़े। बेचारा जहन्नुम का ही नागरिक बना दिया गया।

आदमी अवसर आने पर अपने विरुद्ध बातें होते देख कर भी यदि क्रोध के स्थान पर शांति का प्रयोग करे तो कार्य बिगड़ने के स्थान पर ठीक हो ही जाता है। इसके विपरीत विपक्षी के मन में भी किसी तरह की कड़वाहट नहीं आने पाती।

एक न्यायालय में एक जज एक वकील से चिढ़ता था और उसकी बहस या तो सुनता ही न था या ऊपरी मन से उपेक्षा के साथ सुना करता था। एक दिन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वकील वहस कर रहा था और जज साहव इधर-उधर वात करते, देखते और उसकी उपेक्षा कर रहे थे। उनका यह व्यवहार किसी के भी क्रोध का कारण बन सकता था। जज महोदय उस दिन तो सीमा पार कर गये और न्यायालय में अपने कुत्ते को गोद में बैठा कर फुस-फुस करने लगे और वकील की वातें अनसुनी करते रहे। यदि वकील चिढ़ता और नाराज होता तो यह जज का एवं न्यायालय का अपमान और अपने व्यक्ति का काम बिगाड़ना होता। उसने क्रोध पर नियंत्रण करके बड़े शांत भाव से अपनी वहस स्थगित कर दी और जज की ओर शांति से देखने लगा।

'चालू रखिए अपनी वहस' जज ने कहा। "बहुत अच्छा हजूर! मैंने समझा कि आप सलाह-मशविरा कर रहे हैं।" वकील ने शांत भाव से जवाव दिया। इजलास की भीड़ हंसी न रोक सकी और जज साहव भी होश में आ गये।

सुकरात का नाम आपने सुना होगा। सुकरात की पत्नी उसके भोजन, रहन-सहन आदि की प्रवृत्तियों और उनके प्रति उपेक्षा से नाराज रहती थी। एक दिन जब लेख लिखते समय उसने उन्हें भोजन के लिए बुलाया तो सुकरात ने काम की धुन में कहा 'अभी आया'। पर अपने काम में उसे बहुत देर हो गई। वह पानी भर कर ला रही थी और उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। सुकरात लेख लिखने में मग्न थे। उसने दुबारा जब उन्हें भोजन के लिए कहा और उन्होंने फिर काम की धुन में 'अभी आया' यह दुहराया तो पत्नी का पारा चढ़ गया और उसने डांटने-डपटने के बाद पानी का घड़ा उन पर उंडेल दिया। उनका सारा परिश्रम बेकार हो गया। लेख भीग गया। परन्तु, क्रोध से तो अब कुछ हो नहीं सकता था। व्यर्थ वातावरण कटु होता। वे हंसे। उनका हंसना था कि पत्नी आश्चर्य में पड़ कर उनकी ओर देखने लगी और बोली "क्यों हंस रहे हो?" सुकरात ने उसी मूड में उत्तर दिया 'आज मुझे एक बात नई पता लगी है। आज तक मैंने सुना था कि जो गरजते हैं वे बरसते नहीं। परन्तु तुम तो विचित्र हो जो गरजती भी हो और बरसती भी हो'।" सुकरात की इस बात का यह फल हुआ कि भविष्य में वह कभी क्रोध में नहीं आई। ठीक ही कहा है—

अक्रोधेन जयेत् क्रोधम् — अक्रोध से क्रोध को जीते

परन्तु क्रोध जहां हानिकारक दुर्गुण है वहां 'मन्यु' जो क्रोध का ही एक रूप है मानव जीवन के लिए आवश्यक है। यही कारण है कि यजुर्वेद में तेज, वीर्य, बल ओज और सहनशीलता की प्रार्थना के साथ साथ 'मन्युरसि मन्युं मयि धेहि' में मन्यु की प्रार्थना भी की गई है। यदि मनुष्य में मन्यु न हो तो संसार में अनाचारी व्यक्तियों का साहस बढ़ता जायेगा, दुराचारी व्यक्ति अपने दुराचारों का खुलकर प्रयोग करेंगे। यह मन्यु का भाव ही है जो सुधार और नियंत्रण के लिए, बालकों के लिए, अत्याचारियों के अत्याचार के दमन के लिए प्रयुक्त होता है। यह मन्यु का काम ही था जिसने राम को वाली के वध के लिए प्रेरित किया, जिसने राम को समुद्र पर पुल बांधने की प्रेरणा दी, जिसने राक्षसों के संहार के लिए राम को हाथ में धनुष धारण करने का बल दिया। स्वामी दयानन्द महाराज के जीवन में 'मन्यु' के अनेक उदाहरण मिलते हैं। मन्यु के कारण ही उन्होंने कर्णसिंह की तलवार तोड़ी, मन्यु के कारण ही उन्होंने दो गुंडों को पकड़ पानी में डुबकियां दिलाई।

माता-पिता और अध्यापक भी अपने बच्चों और शिष्यों के प्रति मन्यु का उपयोग करते हैं। यह मन्यु जब क्रोध या प्रतिशोध का रूप धारण कर लेता है तब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह विकृत और हेय हो जाता है। इसलिए अपने जीवन को, अपने ध्येय को, यदि आप प्राप्त करना चाहते हैं तो यह निश्चय कीजिए कि हम अपनी सभी ताकत लगा कर अपने मन से क्रोध के दुर्गुण को निकाल देंगे और जीवन को मधुरतम बनाने का प्रयत्न करेंगे।

क्रोध मनुष्य का शत्रु है। क्रोधरूपी जो आग हम अपने शत्रु के लिए अपने हृदय में जलाते हैं वह प्रायः अपने शत्रु से अधिक आपको जलायेगी।

यह भी ध्यान रखने की बात है कि क्रोध के विषय में एक परीक्षण किया गया और उसके द्वारा यह सिद्ध हुआ कि क्रोध में जो श्वास निकलते हैं उनको इकट्ठा करके यदि उसके इंजैक्शन तैयार किए जाये तो उससे कई सूअरों की मृत्यु हो सकती है। सचमुच यह क्रोध मनुष्य को नष्ट करने के लिए कभी अकेला नहीं आता। शत्रुता, बुरा बर्ताव, जलन, घबराहट, मार बैठना, घृणा, कठोरता, परेशानी, उद्वेग ये क्रोध के भाई-बन्द हैं। क्रोध निमंत्रण पाकर इनके साथ आता है। एक व्यापारी ने क्रोध पर, उस क्रोध को जिसने उसके व्यापार का नष्ट करने का संकल्प कर लिया था पर विजय प्राप्त करने की कहानी इस प्रकार लिखी है 'मैं अपनी इच्छा से अधिक ईश्वर के उपदेशों से प्रीति करने लगा। उनका पालन करने लगा। अपने कार्यों को शांतिपूर्वक और धैर्यपूर्वक करने लगा। अपनी आलोचना, घृणा, स्वार्थ, बदले की भावना, घमण्ड, कठोरता को मैंने दूर त्याग दिया। मैं शांति से रहने लगा और सबके सामने झुक कर चलने लगा। ईश्वर ने मेरी सहायता की। उसने क्रोध की भट्ठी से निकल कर शांति के झरने के निकट ला कर बिठा दिया।'

क्रोध, दुःख और दरिद्रता, कठिनाइयाँ और परेशानियाँ पैदा करता है। अतः क्रोध से बचने के लिए जब क्रोध आने लगे तो एक से दस तक की गिनती गिनिए। क्रोध क्यों आ रहा हैं? तर्क कीजिए। आप स्वयं शांत होंगे।

धर्म के दस लक्षण आप ने पढ़े। वस्तुतः यही धर्म है और इन्हें जीवन में धारण कर ही मनुष्य सुख-शान्ति-आनन्द प्राप्त कर सकता है।

क्या आप भी अपने जीवन को धर्म मार्ग पर चलायेंगे? —संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[illegible] सम्बन्धी आवश्यक [illegible]

[illegible] विमोचन समारोह [illegible] द्वारा सम्पन्न हो चुका है।

२—[illegible] की प्रतियां जो ४ खण्डों में छप रहे हैं, [illegible] हो चुका है।

३—जिन्होंने २४) या ५१) में प्रतियां बुक करायी थीं [illegible] जिल्द का व्यय देकर अपनी प्रति मंगा सकते हैं।

४—इसके अतिरिक्त डाक रेल व्यय इस प्रकार आयेगा।

१ प्रति पर	डाक पैकिंग व्यय	[illegible]
२ प्रतियों पर	रेल डब्बे का पैकिंग व्यय	७ [illegible]
५ प्रतियों पर	रेल पैकिंग व्यय	[illegible]
१० प्रतियों पर	रेल पैकिंग व्यय	[illegible]

५—१० प्रतियों से अधिक का पैकेट नहीं बन सकेगा [illegible] से ही बन लिया जायगा। [illegible] या अधिक [illegible] कम या थोडा अधिक भी पड सकता है।

६—प्लास्टिक कवर का मूल्य २) प्रति कवर पडेगा। [illegible] लिखें।

७—[illegible] का स्टैंड ३)५०—४)५०—या ६)५० तीन [illegible] केवल रेल के आदेशों से ही भेजे जा सकेंगे [illegible]

८—पत्र लिखते हुए **अपना क्रमांक अवश्य** लिखें [illegible]

९—जो सज्जन कार्यालय से ले जाएंगे उन्हें [illegible] २) [illegible] और उनके प्लास्टिक कवर का मूल्य [illegible] होगा।

१०—[illegible] जिल्द में [illegible] बहुत [illegible] कि ये ४ जिल्दों में ही [illegible]

[illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

-ज्ञान (मासिक)
.६७ हरध्यानसिंह मार्ग,
नई दिल्ली-५

जून १६७३
आषाढ़ संवत् २०३०

.ो. अपने
रजिस्टर्ड नं०
D—1631

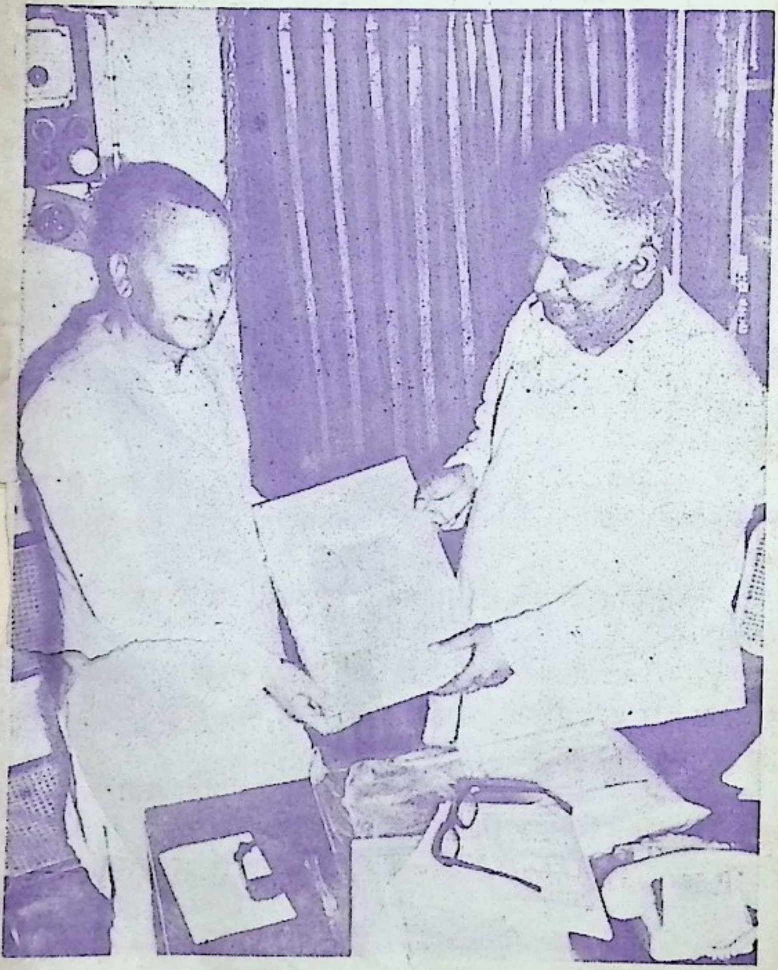

पंजाब के आर्य नेता श्री वीरेन्द्र जी को संस्थान के अध्यक्ष वेद भाष्य की प्रति भेंट कर रहे हैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi